पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल'

तीन शहर तीन पहर

[सामाजिक उपन्यास]

पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल'

तीन शहर तीन पहर

अपने पाठकों को

"नेवर माइण्ड (कोई बात नहीं)" दन्त-पंक्तियां चमकाती वह बोली, "कम विद मी, आई शैल लाइक ए कम्पनी विद यू)। (मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारा साथ पसन्द करूंगी)।"

रामानन्द के हर्ष का अन्त न था। वह आगे बढ़कर धीरे-धीरे विदेशी महिला के साथ ताज की ओर बढ़ने लगा।

इस संयोग पर वह जितना प्रफुल्लित था उतना ही चकित भी। विदेशी महिला के रूप में भगवान ने उसे साक्षात् दया-प्रेम की देवी के दर्शन करा दिए थे।

१

धुंधलके-भरे भोर में घाट की ओर जाते हुए रामानन्द के मुख से अपने-आप ही फूट पड़ा—"बाबा विश्वनाथ की नगरी···सुरसरि का समागम···धन्य है वाराणसी··· !"

"हर-हर महादेव शम्भू, काशी विश्वनाथ गंगे !" चिमटा बजा-बजा कर उच्च स्वर में गाते हुए साधु की तन्मयता ने उसे आकर्षित किया।

वह सीढ़ियां उतरते हुए घाट पर आ खड़ा हुआ। गंगा की वेगवती लहरें पक्के घाट से टकरा-टकरा कर ऐसा निनाद कर रही थीं मानो ब्रह्म मुहूर्त में आचमन और स्नान करने वाले भक्तजनों का स्वागत-अभिनन्दन कर रही हों।

कुछ लोग छुटपुट स्नान कर रहे थे। उसने उधर कुछ ध्यान नहीं दिया और एक ओर सरककर, घाट की अन्तिम सीढ़ी पर खड़ा होकर, गंगा के प्रवाह-सौन्दर्य को निहारने लगा।

उसके गंभीर नेत्र अशान्त जल-राशि की विस्तृत चादर पर फैल गए। जहां तक दृष्टि जाती थी, जल ही जल दीखता था। ऐसा लगता था जैसे गंगा की विस्तारहीनता में संसार का कोई अस्तित्व ही न हो।

"सचमुच तेरी महिमा अपार है गंगा मैया। मैं नित्य ही ब्रह्म मुहूर्त में तेरा दर्शन करने आता हूं, तेरे अंक में बैठकर तेरी निद्रा नहीं भंग करता। बस तेरा चरणामृत लेकर लौट जाता हूं। किन्तु इतने मात्र से हृदय प्रफुल्लित···"

"अपाओ···अपाओ···!" किसी ओर से ऐसी रोमांचक और करुण

पुकार आई कि रामानन्द का विचार-प्रवाह क्षण-भर में भंग हो गया और वह घबराकर चारों ओर देखने लगा।

करुण पुकार अब तक घाट पर झनझना रही थी, परन्तु किसी ओर कोई दिखाई न देता था। धुंधलका छंट रहा था। रामानन्द ने घूर-घूरकर देखा।

सहसा उसका रोम-रोम सिहर उठा! सामने कोई सौ गज की दूरी से "बचाओ, बचाओ!" की गुहार लगाती हुई एक स्त्री अत्यन्त अस्त-व्यस्त दशा में घाट की ओर भागी आ रही थी।

"क्या मामला है?" रामानन्द साहस के साथ उस ओर झपटा और उस समय वह चकित रह गया जब उसकी दृष्टि उस भीमकाय शरीर वाले व्यक्ति पर पड़ी जो उस महिला को पीछे से खदेड़ता आ रहा था।

क्षण-भर में उसने स्थिति का ज्ञान कर लिया। उसका सारा शरीर क्रोध से फड़क उठा और वह स्वयं उस महिला के समीप आ गया।

गुहार ने आस-पास के लोगों को भी अपने पास खींचा।

जिस प्रकार कसाई के खूंटे से छूट कर भागी हुई गाय धड़ल्ले से अपने मालिक के घर में घुसकर पनाह लेती है ठीक उसी तरह वह महिला अपरिचित रामानन्द की भुजाओं में समाती हुई चीखने लगी, "मुझे इस भेड़िये से बचाओ भैया ‥ बचाओ मुझे!"

वह 'भेड़िया' जो अपनी सूरत-शक्ल और हाव-भाव से भी भेड़िया ही नजर आता था, निकट आकर निर्दयता पूर्वक उस महिला का हाथ खींचते हुए गुर्राया, "सीधे से चलती है कि नहीं? तुझे कोई यहां बचा नहीं सकता।"

"होश में बातें करो।" ब्रह्मचारी और हृष्ट-पुष्ट रामानन्द ने कड़कती हुई आवाज में कहा, "एक अबला स्त्री के चरित्र पर डाका डालने चले हो? कौन हो तुम? तुम्हारा इनसे क्या सम्बन्ध है?"

पहनावे और रंग-रूप से संन्यासपथानुगामी दीखने वाले उस भेड़िये ने अपनी क्रूर आंखों से रामानन्द को घूरा।

रामानन्द की विशाल कसरती देह और चौड़ी छाती ने उसे थोड़ा-सा

विचलित कर दिया।

"आप नहीं समझते साहब, यह घरेलू मामला है। चल तू।" कह-कर वह पुनः महिला का हाथ खींचने लगा।

"नहीं भैया, यह पापी झूठ बोलता है।" भयभीत आँखों से उस संन्यासी भेड़िये की ओर देखती हुई महिला गिड़गिड़ा पड़ी, "यह दुआ-तावीज देने के धोखे में मेरा सतीत्व भ्रष्ट करना चाहता था। मैं किसी तरह जान बचाकर भागी।"

"ओह! यह बात है!" दाँत पीसते हुए रामानंद ने संन्यासी का गला दबोच लिया "दुष्ट, कुकर्मी कहीं के। साधु-सन्यासी बनता है। बड़े-बड़े बाल रख छोड़े हैं, सन्यासी बाना धारण कर रखा है और धर्म-सन्यास की ओट में भोली-भाली अबलाओं को लूटता फिरता है। अभी देता हूँ तुझे पुलिस में।"

पापी मनुष्य कितना ही बलवान क्यों न हो, रंगे हाथों पकड़े जाने की स्थिति में कायर हो जाता है। ऐसी ही दशा उस सन्यासी भेड़िये की भी हुई।

क्षण-भर में उसके सिर से वासना और काम-उत्तेजना का भूत उतर गया।

जैसे-तैसे अपना गला छुड़ाकर वह भागने की चेष्टा करने लगा। अब तक दर्शकों की काफी भीड़ वहाँ एकत्र हो चुकी थी। लोग रामानन्द की सद्भावना की सराहना कर रहे थे और सन्यासी को गालियाँ दे रहे थे।

"आप इसे पुलिस में अवश्य दें।" एक अधेड़ व्यक्ति जो स्नान के लिये जाता हुआ कोई गृहस्थ मालूम होता था, कहने लगा, "धर्म-आस्था और ईश्वर के नाम पर कलंक लगाने वाले ऐसे धूर्तों को फाँसी पर भी लटका दिया जाए तो कम है। ये वासना के कुत्ते हैं। सन्यासी बाने में धर्मविश्वासी हिन्दू समाज को भ्रष्ट करना इनका खास पेशा है।"

"छि:, छि:, बाबा विश्वनाथ की नगरी में यह पापाचार?" एक वृद्ध महिला मुँह बिचकाकर बोली। वह महिला रामानन्द की बाँहों में सिमटी अब तक थर-थर काँप रही थी।

"तुम डरो नहीं, भगवान ने तुम्हारी रक्षा की।" रामानन्द ने उसे सांत्वना दी और 'सन्यासी भेड़िये' को घसीटता हुआ आगे ले बढ़ा।

घाट पर नित्य एक सिपाही की ड्यूटी लगती है ताकि स्नानार्थियों के जान-माल की सुरक्षा रहे। संयोग से वह अपनी ड्यूटी पर आ ही रहा था।

"लीजिये इन महात्मा जी को।" रामानन्द ने झटका देकर संन्यासी महाशय को सिपाही के आगे धकेल दिया और उसके कुकृत्य का विवरण दिया।

सिपाही ने महिला का बयान लिया। भीड़ में से दो-चार गवाहियां लीं। रामानन्द का पता-ठिकाना पूछा और भद्दी गालियां देते हुये संन्यासी को पुलिस चौकी की ओर ले बढ़ा।

धुंधलका साफ हो गया था। भीड़ छंट गई थी। महिला इस तरह से रामानन्द के साथ थी मानो घनिष्ठ परिचित हो।

"कैसे फंस गईं आप यहां ? कहां घर है ?" उसने महिला को सिर से पांव तक भर आंखों देखा।

पौ फटने को थी। पूर्व की सुनहरी अरुणिमा में महिला के अप्रतिम सौन्दर्य ने नवयुवक रामानन्द को चकित कर दिया। उसकी अवस्था और लावण्य के अनुसार उसे महिला कहना अन्याय होगा। वह एक अठारह-उन्नीस वर्ष की अविवाहित नवयुवती थी। बहुमूल्य परिधानों से अलंकृत।

"मैं आपका एहसान जीवन-भर न भूलूंगी, भाई साहब।" अथाह आभार और श्रद्धा से वह बोली।

"वह तो ठीक है, मगर आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया ?" रामानन्द ने दुबारा उसका परिचय पूछा। अब दोनों अगल-बगल सँकरी गली में से गुजर रहे थे।

"बताऊंगी, सब कुछ बताऊंगी आपको।" वह उसके आकर्षक व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित होकर कहने लगी, "कबीर चौरा पर हमारा मकान है। गनपति वर्मा एडवोकेट का नाम सुना होगा आपने··· ।"

"हां-हां, वह तो यहां के बहुत नामी वकील हैं।" रामानन्द बीच ही में बोल पड़ा।

"जी हां, मैं उनकी सगी छोटी बहन हूं।"

"वर्मा जी की बहन है आप ?"

"जी हां।" उसने घटना का रहस्य खोला, "बात यह है कि शादी को पांच वर्ष होने को आए, हमारी भाभी की गोद न भरी। उन्हें चिन्ता होने लगी कि अवश्य ही उन पर भगवान की अकृपा है। इसीलिए उन्हें बच्चा नहीं होता। संतान के लोभ में पूजा-पाठ, दान-धर्म और दुआ-तावीज में उनका विश्वास जगा। अचानक एक दिन यही संन्यासी भेड़िया हमारे द्वार पर भिक्षा मांगने आया।

" भाभी जब भिक्षा देने निकलीं तो उन्हें घूर-घूर कर देखते हुए इस पापी ने कहा 'बहू तुझे संतान शोक है न ?'

" भाभी आश्चर्य चकित रह गईं कि एक अपरिचित साधु को उनकी संतान प्राप्ति की इच्छा कैसे मालूम हो गई। मैं भी मौजूद थी मगर उसने हमारे भूत-वर्तमान के बारे में इतनी सत्य बातें बताईं कि मैं भी चक्कर में पड़ गई। हमने अनुमान किया कि अवश्य ही यह कोई पहुंचा हुआ महात्मा है।"

"ये पापी ठगने के लिए पहले से सब कुछ पता लगा रखते हैं।" रामानन्द बीच ही में बोला।

" जी हां, मगर उस समय हम दोनों इसके फेर में आ ही गये। मुझे भी भाभी की गोद सूनी होने का दुःख था इसलिये मैंने भी गहरी रुचि ली।

" हमें आकर्षित देखकर यह बड़े विश्वास और सद्भाव के साथ बोला, 'तेरी अभिलाषा शीघ्र पूर्ण होगी बहू।'

"सच महाराज ?" भाभी पुलक उठी।

"बिल्कुल, मैं ऐसा-वैसा संन्यासी नहीं हूं। बीस वर्ष तक मैंने हिमालय की कंदरा में तपस्या करके शंकर भगवान की सिद्धि पाई है और अब

जनता का कल्याण करने के लिये बाबा विश्वनाथ की नगरी में आकर आसन जमाया है। दशाश्वमेध घाट पर बाईं ओर की गुफा में मेरा निवास है। तुम किसी दिन रात्रि में बारह बजे के बाद वहां आओ, उस वक्त मैं शिव महामाया की सिद्धि करने बैठता हूं, तुम्हें फूंककर एक बूटी दे दूंगा। बस कल्याण हो जायेगा।"

"बाबा, आप बूटी फूंककर यहीं दे जाइये।" भाभी ने झिझकते हुए कहा।

"बिना अपने परिश्रम के फल नहीं मिलता बहू। अगर मुराद मांगने वाला खुद भोले शंकर के दरबार में जाकर मुराद न मांगेगा तो औघड़ बाबा क्यों कर सुनने लगे? झिझक कैसी बहू? हम साधु-संन्यासियों से कैसा डर? एक औलाद के लिए आदमी को जाने कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। जैसी तेरी मर्जी··जय महामाया!" अपने ढोंग और व्यक्तित्व का भरपूर असर डाल कर वह चला आया।

भाभी को दृढ़ विश्वास हो गया कि इस महात्मा की जड़ी-बूटी उनकी गोद अवश्य भर देगी। फिर किसी वस्तु के लिये व्याकुल रहने वाले व्यक्ति का सहज ही छला जाना स्वाभाविक होता है।

भाभी ने इस पापी महात्मा के दरबार में जाकर मुराद मांगने का निश्चय किया और मुझे भी साथ लेने को राज़ी कर लिया।

"आश्चर्य है!" रामानन्द हंसते हुए बोले, "एक चतुर और प्रख्यात एडवोकेट की सुशिक्षिता पत्नी इतने मूर्खतापूर्ण धोखे में आ गई?"

"मैंने कहा न! आकांक्षा की अतृप्ति मनुष्य का बुद्धि-विवेक हर लेती है।" नवयुवती फिर से कहने लगी, "फिर हमने भैया से यह बात छिपा भी तो ली क्योंकि वे अन्धविश्वासों के सख्त खिलाफ हैं।

हमने उनकी अनुपस्थिति में यहां आने का प्रोग्राम बनाया। एक मुक़दमे के सम्बन्ध में वे कल रात इलाहाबाद हाईकोर्ट गए हैं और अभी दोपहर तक आयेंगे। बस मौका देखकर हम रात को यहां चल दीं। और फिर मुराद पूरी करने के बहाने उसने हमारे साथ जो व्यवहार किया वह,

आपने अभी देखा ही।"

"और आपकी भाभी कहां चली गईं?" रामानन्द ने पूछा।

"हम दोनों साथ ही थीं परन्तु वह पहले मुझी पर झपटा। तब तक भाभी को मौका मिला और वे निकल भागीं। अब तक वे घर पहुंच गई होंगी। यदि वे मुझे बचाने का प्रयास करतीं तो हम दोनों ही लुट जातीं।'

सारी कथा समाप्त कर नवयुवती ने एक दीर्घ निःश्वास ली।

"अब कभी ऐसे गोरख-धन्धे में मत पड़ियेगा?" रामानन्द ने मुस्कराते हुये कहा, "आपने अपना नाम तो बताया नहीं? किस कक्षा में पढ़ती हैं आप?"

"मेरा नाम इन्दिरा है, इस साल इण्टर फाइनल में हूं। और आपने तो अपने बारे में कुछ भी नहीं बताया?"

"अपने बारे में क्या बताऊं? बस रमता जोगी, बहता पानी समझिये।" रामानन्द ने कुछ इस हास्यपूर्ण ढंग से हाथ मटकाकर कहा कि इन्दिरा के होंठों पर बरबस ही हंसी फूट पड़ी।

रामानन्द का व्यक्तित्व, सद्व्यवहार और स्वभाव सब कुछ उसे आकर्षित और आश्चर्यचकित कर रहा था।

"फिर भी कुछ न कुछ परिचय तो होगा ही आपका?" उसने जोर देकर पूछा।

"मेरा नाम रामानन्द है। यहीं मान मन्दिर के पास मकान है। पिताजी पुलिस सब-इन्स्पेक्टर हैं। मैंने इसी साल इण्टर पास किया है, फिलहाल आगे की पढ़ाई स्थगित कर रखी है।" रामानन्द एक ही सांस में सब कुछ बता गया।

"ऐसा क्यों?" इन्दिरा ने अचरज से उसकी ओर निहारा।

"इसीलिये कि स्कूली पढ़ाई में मेरा मन नहीं लगता। आजकल स्कूल-कालेजों में जो शिक्षा दी जाती है उससे मेरा मन मेल नहीं खाता।"

"आपकी कुछ धार्मिक और आध्यात्मिक रुचि मालूम पड़ती है।"

"हां, अभी आध घंटे पहले तक मुझमें गहरी धर्म और भक्ति पूर्ण अभिरुचि रही है, परन्तु अब वे स्रोत भी छिन्न-भिन्न हो गये !"

"आधे ही घण्टे में विचार परिवर्तन हो गया ?" इन्दिरा ने अचरज से उसके गम्भीर हो आये चेहरे की ओर देखा।

"जी हां।" रामानन्द मस्तक सिकोड़कर बोला, "क्या अब भी धर्म और भक्ति के प्रति आस्था बनी रहेगी ? जरा अपने साथ की दुर्घटना पर विचार कीजिये। धर्म और भक्ति को आड़ बनाकर लोग अनेक पापाचार कर रहे हैं। खैर, छोड़िये इन बातों को। अपना घर तो बताइये। आपको सुरक्षित दशा में पहुंचा दूं। फिर मुझे भी अपने घर पहुंचना है।"

"वह रहा।" इन्दिरा ने सामने के एक मकान की ओर संकेत किया।

"अरे, बातों में हम यहां तक पैदल ही पहुंच आये ?"

इन्दिरा उसके साथ घर में प्रविष्ट हुई।

"अच्छा मुझे विदा दीजिये।" उसने मुड़ते हुए कहा।

"ऐसे नहीं, आइये, आइये।" उसने रुक कर आग्रह किया, "परिचय तो करा दूं आपका। मुंह अँधेरे से घर से निकले होंगे, कुछ जलपान तो कर लीजिये।"

"देखिये मेरा कर्त्तव्य समाप्त हुआ। अब मुझे जाने दीजिये।" वह चल पड़ा।

"सुनिये तो सही।" इन्दिरा झपट कर उसका हाथ खींचने लगी।

वह विवश हो गया। इन्दिरा उसे घर में लाई।

मगर बैठक में कदम रखते ही वह सिहर उठी। उसके भैया-भाभी और कुछ पुलिस के आदमी बाहर की ओर जाने को उद्यत दिखाई देते थे।

"ओह ! इन्दिरा आ गई, आ गई इन्दिरा ?" दौड़कर भाभी ने उसे बाहों में समेट लिया।

एडवोकेट गनपति वर्मा और पुलिस टुकड़ी की अचरज-भरी दृष्टि इन्दिरा और नवयुवक रामानन्द पर पड़ी।

"हम इसका ही पता लगाने जा रहे थे ? आप कौन हैं ?" एडवोकेट

साहब ने पूछा।

"आपको कष्ट करने की कोई जरूरत नहीं।" रामानन्द सरल मुस्कान के साथ कह पड़ा :

"मैं इन्हें उस संन्यासी भेड़िये से बचाकर ले आया और उस पापी को पुलिस के हवाले कर आया हूं। घबराने की कोई बात नहीं।"

"मैं आपका बहुत-बहुत एहसानमन्द हूँ।" उसकी ओर बढ़कर उसका कन्धा थपथपाते हुए एडवोकेट साहब गद्‌गद् स्वर में बोले, "आइये, बैठिये आपकी महानता की जितनी भी सराहना करूं थोड़ी है।"

रामानंद कुर्सी पर बैठ गया और एडवोकेट साहब के भव्य भवन की साज-सज्जा निहारने लगा।

पुलिस वाले उसके साहस की प्रशंसा करते हुए चलते बने।

इन्दिरा अपनी भाभी से अपनी मुक्ति और रामानंद के साहस की सारी कथा सुना रही थी।

"मैं इन लोगों की बेवकूफी को क्या कहूं ? सच कहा गया है, औरतें कितना ही पढ़-लिख क्यों न जाएं, वे बुद्धि और दिमाग से हमेशा खाली होती हैं। मैं बाहर गया था। यहां इतना बडा काण्ड हो गया। आप न होते तो आज मैं समाज में मुंह दिखाने के काबिल न रह जाता। बहुत शुक्रगुजार हूं आपका।" एक ही सास में इतनी सारी बातें कहकर वर्मा जी ने नौकर को चाय-नाश्ता लाने का आदेश दिया।

इन्दिरा भाभी को रामानद का परिचय देने लगी। वर्मा जी थोड़ा रोष मे बोले, "तुम्हारी ही वजह से इन्दिरा वहां गई थी। तुम तो अपनी जान बचाकर भाग आई और उसे ···।"

"और मेरे सामने कोई रास्ता ही न था। रुकना हम दोनों के लिये ही खतरनाक था। मैंने देखा कि वह इन्दिरा को खदेड़ता आ रहा है, मैंने वहां गुहार लगाई मगर कोई सहायता के लिये आता हुआ न दिखाई पड़ा। हार कर मैं घर की ओर भागी और आपको सूचित किया।"

"खैर जो हुआ उसे भूल जाइये। अब भविष्य मे सावधान रहें कि

रामानन्द भैया ! मैं सदैव तुम्हारी महानता की पूजा करूंगी । तुम मेरे सगे भाई से भी बढ़कर हो ।" उसने उसी क्षण संकल्प किया कि वह रामानन्द को जीवन-भर अपने सगे भाई की भांति आदर-सम्मान देगी ।

घर लौटते हुए रामानंद के हृदय में गहरी उथल-पुथल थी । एक अबला की सतीत्व-रक्षा की उसे जितनी प्रसन्नता, संतोष था, उससे कहीं अधिक धर्म-मार्ग की ओट में होने वाले पापाचार से वह क्षुब्ध हो रहा था ।

उसके मन में भीषण द्वन्द्व उठ रहे थे । वह सोच रहा था इस संसार में जाने कितने ऐसे ही संन्यासी भेड़िये होंगे जो साधुता और सिद्धता का स्वांग भरकर समाज में नाना प्रकार के पापाचार को जन्म देते होंगे । संन्यास भी एक ऐसा बाना है जिसके आवरण में अनेक अमानवीय कृत्य पलते-पनपते हैं । उफ ! ऐसे धर्म-पथ को वह दूर ही से प्रणाम करता है ।

धर्म, साधुता और ईश्वरत्व के प्रति उसकी समस्त आस्थाएं और विश्वास डिगने लगे ।

वह एक स्वच्छंद विचारों का निर्लिप्त नवयुवक था । किन्तु धर्म और संन्यास में उसकी गहरी अभिरुचि थी । ईश्वरत्व को सहज प्राप्त करने के लिये उसने संन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया था क्योंकि समाज की कुंठा, कुवृत्ति और पापाचार से वह बिलबिला रहा था ।

मगर संन्यास-पथ ग्रहण करने की भावना भी आज आहत हो उठी ।

वह गहरे अन्तर्द्वन्द्व में डूब-उतरा रहा था । घर पहुंचा तो मित्र नरेन्द्र बैठक में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था ।

"आज बड़ी देर से लौटे ।" नरेन्द्र ने उसके भावपूर्ण मुख-मण्डल की ओर दृष्टि डाल कर पूछा ।

"हां, आज दूर तक टहलने निकल गया था ।" हारा-थका-सा वह तख्त पर नरेन्द्र के समीप आ बैठा ।

"क्या बात है बहुत उजड़े-उखड़े से दिखते हो ।" नरेन्द्र ने हैरानी से पूछा "कोई दुर्घटना हो गई ?"

"नहीं, मैं दुनिया की कुरूपता पर हैरान हूं । सोचता हूं आज चारों

तरफ जो गंदगी और अमानुषिकता फैली है वह समाज को किस रसातल में ले जाएगी ?"

"बहुत बहक रहे हो आज, जरूर तुम्हारे साथ कोई दुर्घटना हुई है।" नरेन्द्र ने उसकी बांह पकड़कर झकझोरा और उसके भावपूर्ण हो आए चेहरे पर अचरज-भरी दृष्टि डाली।

"क्या बताऊँ भाई। तुम जानते हो मैं बहुत विकृत मस्तिष्क का मनुष्य हो गया हूं।" रामानन्द ओज में कहने लगा "आज मेरे साथ एक असाधारण घटना घटी है।"

"किसी से आंखें लड़ गईं क्या ?" नरेंद्र हथेली बजाकर हंस पड़ा।

"तुम्हें तो हर वक्त मजाक ही सूझता है भाई।" रामानन्द उसके व्यंग्य से मुस्कराकर कहने लगा "तुम जानते हो, किसी से आंखें लड़ने का मेरे लिये कोई महत्त्व नहीं, मगर घटना एक सुन्दर लड़की से ही सम्बन्धित है।"

"ओह, सुन्दर लड़की ? कोई रूपसी ! कहां मिली ? क्या नाम था उसका ?" नरेन्द्र आतुरता में सभी बातें एकसाथ ही पूछ गया।

"कोई तुम्हें लड़कियों के किस्से सुनाने लगे तो तुम रात-दिन सुनते रह जाओ।"

"मजाक में मत टालो, बताओ तो सही।" नरेन्द्र ने अधीरता से पूछा, "तुमने उससे परिचय जरूर किया होगा। क्या उम्र थी ?"

"हद है तुम्हारी आतुरता की।" रामानन्द कहने लगा "इसमें कोई शक नहीं कि लड़की अत्यन्त सुन्दर है। मैं उसके स्वभाव और व्यवहार से अत्यधिक प्रभावित भी हुआ हूँ।"

"ओह ! तो तुम्हारा दिल आ ही गया उस पर।" नरेन्द्र ने फिर चुटकी ली।

"मेरी बातों का गलत अर्थ मत लगाओ।" रामानन्द खीझकर बोला, "यहां सवाल है उस लड़की से सम्बन्धित घटना का। वह घटना जो घण्टों से मेरे मस्तिष्क को कुरेद रही है, जिसने मुझे विकृत कर रखा है।"

इस वार उसने जो कुछ कहा था उसमें गम्भीरता और मार्मिकता थी । द्र ने इस सचाई का आभास किया और स्वयं भी गम्भीर हो आया ।

"आखिर हुआ क्या ?" सारा हास्य भूलकर उसने हैरानी से पूछा ।

"तुम्हें याद है न ।" उसका कन्धा थपथपाते हुए कहने लगा रामानन्द, मैं अभी कुछ दिन पहले तुम से कह रहा था कि मैं संन्यास ग्रहण करूंगा, इस सामाजिक जीवन से विरक्ति लेकर इसी पवित्र काशी भूमि पर कहीं एकान्त में अपना साधना कुटीर बनाकर चिंतन करूंगा···।"

"तो···?" नरेन्द्र बीच ही में अकुलाया ।

"यही कि आज मैंने उस विचार को तिलांजलि दे दी ।" और फिर उसने प्रातःकाल वाली सारी घटना उसे अक्षरशः सुना डाली ।

नरेन्द्र मौन, सब कुछ सुनता रहा और जब सारी कथा समाप्त हो गई तो उसने कहा, "छोड़ो भी यार । कहां तक तुम अपना दिमाग खराब करोगे ?

"मियां ये वाराणसी है, वाराणसी । कहनेको बाबा विश्वनाथ की पवित्र ..... । महात्मा गौतम बुद्ध का ज्ञान धाम, माता सुरसरि का आंचल, परन्तु यहां क्या नहीं होता ? मैं तो समझता हूँ धर्म-नगरों में अधिक कुकर्म होते हैं। ऐसी जगहों पर तमाम रंगे-सियार गेरुआ वस्त्र धारणकर बसते हैं। धर्म माने धोखा और मजहब माने मार-पीट, एक मशहूर परिभाष है।"

"मुझे आज तुम्हारे इन विचारों से सहमत ही होना पड़ेगा ।" दी नि:श्वास के साथ रामानन्द बोला "अब समझ में आया कि नैतिक का लिबास केवल ऊपरी जीवन में पहनना चाहिये । भीतरी जीवन अनैतिकता के बिना चल ही नहीं सकता, क्योंकि उससे मनुष्य की कु भावनाओं को बल नहीं मिलता ।

"खैर जो कुछ भी हो, आज से अपना प्रातः कालीन गंगा-दर्शन अन्यथा इस तरह की घटनाएं फिर मेरे सामने आएंगी और मेरी जाएगी ।"

· · "कहां की बातें करते हो रामानन्द भाई।" वह उसकी बांह में चुटकी भर कर बोला "अभी तुमने देखा ही क्या है ? किसी दिन मेरे साथ घाट पर चलो। मैं तुम्हें कितने ही ऐसे ढोंगी, बूढ़े और सिद्धहस्त महात्मा, साधु कहे जाने वाले भेड़ियो को दिखाऊँ जो घाट पर बैठे हुए चिंतन, मनन या हरिस्मरण का बहाना मात्र रचते हैं मगर उनकी कामुक दृष्टियां स्नान करती हुई स्त्रियों की छातियों, नितम्बो और उनके यौन-अंगों पर बिछलती रहती है। फिर इन्दिरा तो एक रूपवती लड़की थी, उस बेचारे सन्यासी का संयम डिग जाना स्वाभाविक ही था।"

"तुम ठीक कहते हो मगर ऐसे वातावरण और पातकी समाज में मेरा निर्वाह तो नही हो सकता।"रामानंद ने उपेक्षा से कहा और लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा।

"अरे भाई, तुम्ही को अगर ऐसा अवसर मिले तो क्या तुम छोड़ दोगे? औरत किसी शराब के नशे से कम नहीं है · · ।"

"कैसी बेहूदी बातें करते हो। रामानद बीच ही मे भुड़क पड़ा "संयम भी कोई चीज होती है। स्त्री कितनी ही रूपवती और कामुक क्यो न हो, वह मुझे व्यभिचार के लिए प्रेरित नही कर सकती।"

"कठोर सच को झुठलाया नही जा सकता।" नरेन्द्र ने मेज़ पर मुक्का जमाकर कहा, "गम्भीरता पूर्वक विचार करना। अभी तुमको अनुभव नहीं है। तुम ब्रह्मचर्य, अध्यात्मवाद और आदर्शवाद के नशे मे डूबे हुए हो इसलिये स्वाभाविक और प्राकृतिक काम भी तुम्हे अनैतिक और पापाचार मालूम होते है मगर जिस दिन अनुभव क्षेत्र मे उतरोगे तुम्हारी भावनाए कुछ और होंगी।"

"हो सकता है।" नरेन्द्र की दलील से कुछ परास्त होकर रामानन्द ने नया तर्क उठाया "औरत और शराब की तुलना करके तुमने नारी की महत्ता को बहुत गिरा दिया है।"

"कुछ हद तक।" नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए तर्क को दूसरा रूप दिया। "यहां प्रसंग चल रहा था एक रूपवती लड़की का जिसे एक

संन्यासी चकमा देकर अपनी काम-क्षुधा शान्त करने का दानवी प्रयास कर रहा था। तुमने उस लड़की की रक्षा की और निस्सदेह एक मानवतावादी कर्त्तव्य की पूर्ति की—है न यही कथानक ?"

"हाँ, तुम तो अदालत जैसी जिरह करने लगे।" रामानन्द उसे धौल जमाकर बोला।

"बिना जिरह के तुम्हारी विक्षिप्तता की तुष्टि न होगी।" नरेन्द्र विस्तार में आया "क्या ये सम्भव नहीं कि यदि उस बालिका पर तुम्हारी आसक्ति होती तो तुम भी उसे एकान्त में पाकर संन्यासी जैसा ही उपक्रम करते ?"

"कदापि नहीं।" रामानन्द ने आत्माभिमान में दृढ़ता के साथ कहा।

"बिलकुल करते जनाब, यह जवानी का तकाज़ा है।"वह अपने कथन की पुष्टि करने लगा "तुम नौजवान हो, तुम में पुरुषत्व के सारे गुण हैं। फिर तुम आसक्ति की स्थिति में नारी आकर्षण से प्रभावित क्यों नहीं हो सकते ? देखो, उन चन्द कायर और अहमी तथा आदर्श का ढोंग भरने वाले कामुकों की बात छोड़ दो जो काम-पिपासा के नशे में चूर रहते हुए भी स्त्री-प्रसंग के अवसर पर उस हड्डी चूसने वाले कुत्ते की तरह खीसे काढ़े और दुम हिलाते रह जाते हैं, जो 'स्वादिष्ट मांस' का आनंद केवल सूँघ कर प्राप्त कर लेता है।"

"मैं तुम्हें इतना बड़ा 'सेक्स सायक्लोजिस्ट (काम-विज्ञानवेत्ता) न समझता था।" रामानन्द ने अचरज से आंखें काढ़कर कहा।

"देखो टालो नहीं, मैं तुम्हें कनविन्स कर दूंगा।" वह पुनः कहने लगा, 'मैं फिर दुहरा रहा हूँ, औरत एक नशा है, शराब से भी अधिक प्रभावशाली नशा।"

"अजीब परिभाषा है।"

"अजीब ही नहीं सर्वथा सत्य।" नरेन्द्र समझाने लगा "शराब जब तक गले के नीचे नहीं उतरती तब तक आदमी पर उसके स्वरूप का कोई

प्रभाव नहीं होता, परन्तु स्त्री का साक्षात्कार मात्र पुरुष में सिहरन और झिझकन व्याप्त कर देता है . . ."

"यौन-भार से परिपूर्ण सुन्दरी ! क्या पूछना है !" क्षणभ को रुककर नरेन्द्र ने ऐसी मादक सिसकी ली मानो कोई नवयौवना उसकी बांहों में सिमटी हो। फिर गर्म सांसें खींचता हुए बोला, "नारी उपभोग के बाद पुरुष को कातर और क्षुब्ध करती है जबकि शराब अपने उपभोग के बाद पुरुष को उद्दण्ड, सशक्त और सतेज बनाती है।

"एक उपभोग के बाद ग्लानि उत्पन्न करती है और दूसरी उपभोग के बाद प्रचंडता और पुरुषत्व जगाती है।"

"छोड़ो इस बकवास को।" रामानन्द ऊबकर उठ खड़ा हुआ मानो उसका मन अस्थिर हो रहा हो।

वास्तव में उसका मन अस्थिर हो रहा था। नरेन्द्र ने जो तर्क किए थे उनसे सहमत न होना चाहकर भी वह सहमति की स्थिति का आभास कर रहा था। कैसी विडम्बना थी ? जब नरेन्द्र नारी की परिभाषा दे रहा था अनायास ही अप्रतिम सुन्दरी इन्दिरा का चित्र रामानन्द की आंखों के सामने उभर रहा था। मानो उसकी आत्मदुर्बलता के लिए इन्दिरा एक चुनौती के रूप में उसके संयम और पुरुषत्व की परीक्षा ले रही हो।

"छि, छि., कैसी दुर्भावना है। मैं उसे बहन के रूप में स्वीकार कर चुका हूं।" वह अपने-आपसे फुसफुसाया। फिर सब कुछ विस्मृत करने का प्रयास कर बोला, "आओ, थोड़ा घूम आएं।तुम्हारी नारी-चर्चा ने मेरा मस्तिष्क और भी विकृत कर दिया। यह सब व्यर्थ का विवाद है।"

"देखा ना।" उसके कन्धे पर धौल जमाकर बोला नरेन्द्र, "जब चर्चा-मात्र तुम्हें असंतुलित कर सकती है तो दूसरी स्थिति में तुम विवेकहीन भी हो सकते हो।"

"भगवान के लिये मेरी विकृति का उपहास न करो।" रामानन्द के स्वर में याचना-सी थी।

नरेन्द्र ने उसे परेशान देखा। अधिक तर्क उसे उचित न जान

...दोनों खुले वातावरण में निकल पड़े। तर्क ने उन्हें इतना थका डाला कि उनमें वाक्-शक्ति शेष न थी।

रामानन्द का जीवन सामाजिक परिस्थितियों और समस्याओं से मुक्त ... यद्यपि परिवार पूर्णरूपेण गृहस्थ है। प्रारम्भ से ही वह भावुकता, ...ध्यात्म और चिंतन प्रकृति का पोषक है। उसके विचार और आत्मा किसी प्रकार का बन्धन और व्यवधान स्वीकार नहीं करती। परिवार ने प्रारम्भ में उसकी उन्मुक्तता पर कड़े नियन्त्रण लगाकर विधिवत् गृहस्थ-पारिवारिक जीवन बिताने को विवश किया, परन्तु ज्यों-ज्यों उसकी जन्म-जात प्रवृत्तियों का स्रोत सशक्त होता गया, नियंत्रण की सीमायें टूटने लगीं।

पिता ने अनुभव किया कि उनका पुत्र नियंत्रण की सीमाओं में विक्षिप्त हो जाएगा, क्योंकि उसकी स्वतंत्र प्रवृत्तियां परिपुष्ट हो चुकी हैं। अतः उन्होंने रामानन्द को उसकी इच्छा पर छोड़ दिया और उसके भविष्य की चिन्ता भी त्याग दी।

मनमौजी और स्वाभिमानी रामानन्द का जीवन आत्मनिर्भरता की दशा में अपने-आप प्रशस्त होने लगा।

स्कूल की पढ़ाई को तिलांजलि देकर उसने कालेज की पढ़ाई ... विचार त्याग दिया और व्यायाम तथा मल्लयुद्ध में अभिरुचि लेने लग... शरीर-गठन के साथ उसकी दूसरी रुचि वैदिक संस्कृति और अध्यात्... हुई। अतः स्वचिंतन-मनन में भी उसके जीवन का काफी समय ... होने लगा।

उसे जीवन की अन्य दिशाओं में रंचमात्र भी लगाव और दि... नहीं है इसलिए उसका परिचयक्षेत्र सीमित है। अपने जीव... स्वभाव-विचित्रता के कारण परिचितों में वह 'विकृत मस्तिष्क... युवक' कहा और समझा जाता है। इसलिए यों भी उससे सम्पर्क... करने में लोग कतराते हैं। यद्यपि वास्तविक रूप से वह ऐसा न... ...मान्यतायें अन्य लोगों से भिन्न हैं। इसलिये भ...

उसे अन्यथा समझें।

जो भी हो, स्पष्ट होते हुए भी उसका व्यक्तित्व बहुत उलझा हुआ है।

इतने बड़े समाज में अगर उसे किसी से अनुराग, लगाव और मित्रता है तो केवल दो व्यक्तियों से।

एक महर्षि आत्मानंद से, दूसरे नवयुवक नरेन्द्र से।

विचित्र चुनाव है उसका।

महर्षि आत्मानन्द जितने बड़े योगी, तपस्वी और अध्यात्म-चिंतक हैं, नरेन्द्र उतना ही प्रचंड भोगी, विलासी और आसक्त।

जब लगभग १४-१५ वर्ष की अवस्था में प्रथम बार गहरी मानसिक अशांति और कुंठा ने उसे व्याकुल किया था तो महर्षि आत्मानन्द के वरद्-हस्त और उपदेशामृत ने उसे विक्षिप्त होने से बचाया था और वह उसी दिन से सदैव के लिये उनका शिष्य बन गया।

और जीवन में अनुभव और अनुभूति के लिए वह नरेन्द्र के प्रति आकर्षित हुआ।

नरेन्द्र उसका बाल-मित्र है। वाराणसी नगर के एक धनाढ्य व्यापारी का लड़का। दोनों साथ-साथ स्कूल में पढ़े हैं।

नरेन्द्र इसलिए उसके स्नेह और आकर्षण का केन्द्र है चूंकि वह जीवन के अनेक मीठे-कड़ुवे अनुभवों से परिपूर्ण है। वह भोगी है और प्रत्येक सांसारिक मार्ग पर चलकर जीवन की गहराइयों को समझने-झांकने वाला। रामानन्द उससे जीवन के विभिन्न पहलुओं पर तर्क करता है। उसकी तर्क तृष्णा को तृप्ति मिलती है और नरेन्द्र को उसके तर्क से जीवन के अनुभवों से रस और रहस्य निचोड़ने का विवेक मिलता है।

इस प्रकार एक-दूसरे के प्रतिकूल पथानुगामी होकर भी वे दोनों आग और पानी की तरह सम्बन्धित हैं। वे मित्र हैं, प्रतिपक्षी और समवयस्क भी। दोनों की अवस्था लगभग पचीस वर्ष की होगी। स्वभाव व विचार-विभिन्नता उनकी मैत्री में रचमात्र भी बाधक नहीं है।

"यहां पुलिस चौकी की ओर कहां चल रहे हो ?" सहसा नरेन्द्र ने उसकी ध्यानावस्था भंग की।

"जान-बूझकर इधर आया हूं।" उसने मुस्कराते हुए कहा, "देखूं तो सही, उस संन्यासी भेड़िये का क्या हुआ जिसे मैं पुलिस के हवाले कर आया था ?"

"इससे कोई लाभ ?" नरेन्द्र ने झुंझलाहट से पूछा, "तुम तो अपना कर्त्तव्य पूरा कर ही चुके।"

"तो भी।" रामानन्द पुलिस चौकी के निकट आकर दरोगाजी से पूछने ही वाला था कि सहसा ही उसकी दृष्टि एक ओर मजमा लगाये उसी भेड़िये संन्यासी पर पड़ी। वह दो-तीन सिपाहियों से घुल-मिलकर कहकहा लगाते हुए ऊंचे स्वर में कह रहा था, "क्या बताऊं दोस्तो, उस पहलवान के आ जाने से वड़ा अच्छा माल हाथ से निकल गया। खैर, फिर कभी तो जाल में आएगी।"

"तबियत तो हमारी भी उस पर आ गई थी महन्तजी। मगर काफी पब्लिक इकट्ठा हो गई थी इसलिए हमें ड्यूटी निभानी पड़ी।"

"उफ़ !' रामानन्द ने अपना सिर थाम लिया मानो किसी ने सिर पर लाठी दे मारी हो।

"सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।" नरेन्द्र मुंह सिकोड़कर बोला, "अरे यार, यह बनारस है ! बाबा विश्वनाथ की पावन नगरी, यहां हर काम धरम खाते में होता है।"

रामानन्द क्रोध से होंठ फड़फड़ाते हुए जलती आंखों से घूर रहा था और वह साधु भेड़िया मस्त चाल से बाज़ार की भीड़ में चला जा रहा था।

रामानन्द अपने मन में सहसा ही उठ आई आसक्ति से हैरान था। इन्दिरा को लेकर उसके मस्तिष्क में गहरी उधेड़-बुन हो रही थी। नरेन्द्र ने उस दुर्बलता को गहराई तक छू लिया था जो रामानन्द के संयम और आत्माभिमान की चक्की में प्रायः पिस चुकी थी।

इन्दिरा रह-रहकर उसकी आंखों के सामने नाच रही थी। उसका रूप-लावण्य, सुवासित शरीर और यौन-मदिरा में भीगी मुस्कान, सभी कुछ उसकी आंखों के समक्ष नाच रही थी, उसके मस्तिष्क में उन्मत्तता व्याप्त कर रही थी।

"उफ़, कैसी विडम्बना है!" वह अपने-आपसे फुसफुसाया, "क्या नारी सचमुच मदिरा से भी अधिक उत्तेजक है? क्या उसके सामीप्य और आसक्ति-आमंत्रण पर उदासीन रह पाना वास्तव में प्रायः असम्भव है?"

वास्तव में सचाई कुछ ऐसी ही है।

नारी-सौन्दर्य और संसर्ग की उपेक्षा कर पाना एक दुष्कर कार्य है।

वह जितना ही इन्दिरा को अपने मन से अलग कर अपने संयम-सतुलन को दृढ़तर रखना चाहता था उतना ही वह उसके करीब, और करीब आती चली जा रही थी। आत्मदुर्बलता को नियन्त्रित करने के लिए उसने आंखें बन्द कर लीं और सीने पर बांहें जकड़कर लेट रहा।

सत्य ही कहा गया है कि जो प्रकृति और कठोर सचाइयों को परे रख-कर निजत्व के अहम में अपना अनुभव पक्ष परे रखते हैं, मानवीय दुर्बलता और प्रकृति उन्हें कभी क्षमा नहीं करती।

तन को एक बार झुठलाया जा सकता है परन्तु मन को झुठलाना सर्वथा असम्भव होता है।

ऐसी ही दशा आमविन की इस स्थिति में नवयुवक रामानन्द की भी हुई!

आंखें बन्द करते ही उसे लगा कि इन्दिरा उसकी बाहों में समायी हुई करुणालाप कर रही है। "बचाओ, बचाओ मुझे!" और गंगा घाट का वह दृश्य साकार हो उठा।

इन्दिरा का सुन्दर मांसल शरीर। उस समय रक्षा-कर्त्तव्य की अनु-भूति में नारी-स्पर्श-अनुभूति विलोप थी, परन्तु इस समय रक्षा-अनुभूति विलोप थी और नारी-स्पर्श-अनुभूति प्रबल।

रामानन्द, पचीसवर्षीय ब्रह्मचारी नवयुवक रामानन्द। सिर से पांव

तक इस प्रकार कांप उठा जैसे किसी ने बर्फ का टुकड़ा उसके सीने पर रख दिया हो।

अब तक वह नारी-संसर्ग अनुभव से सर्वथा कोरा था अतएव काम-चर्चा उसे बकवास और अनावश्यक प्रतीत होती थी परन्तु आत्मदुर्बलता की इस स्थिति में वह निजत्व के ब्रह्मचर्य अभिमान को धूल-धूसरित अनुभव करने लगा।

'क्या नरेन्द्र ने सच कहा है।' वह अपने-आपसे फुसफुसाया, 'तुम नौजवान हो, तुममें पुरुषत्व के सारे गुण मौजूद हैं। फिर तुम आसक्ति की स्थिति में नारी-आकर्षण से प्रभावित क्यों नहीं हो सकते ?'

देखो, उन चन्द कायर और अहमी तथा कोरी आदर्शवादिता का ढोंग भरने वाले कामुकों की बात छोड़ दो जो काम-पिपासा के नशे में चूर रहते हुए भी स्त्री-प्रसंग के अवसर पर उस हड्डी चूसने वाले कुत्ते की तरह खीसें काढ़े और दुम हिलाते रह जाते हैं जो सुस्वादिष्ट मांस का आनन्द केवल सूंघकर ही प्राप्त कर लेता है।

क्या वह स्वयं इसी श्रेणी का कामुक और तृपित व्यक्ति नहीं है ? क्या वह स्वयं मन-मैथुन और मानसिक संभोग से व्याकुल नहीं है ?

उसके माथे पर अनगिनत पसीने की बूंदें चुहचुहा आईं। शरीर उसे आसक्ति और पिपासा से व्याकुल होता अनुभव हुआ।

उसे लगा मानो उसके अंगो-पांग किसी मांसल प्रतिमा को अपने साथ एकाकार कर लेना चाहते हों। बहुत प्रयास किया उसने, परन्तु आसक्ति और तृष्णा उत्तरोत्तर फलीभूत होती चली गई।

उसने तकिया अपने सीने से समो लिया और उसे दोनों हाथों से जकड़े हुए इस तरह गर्म लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा मानो एक अत्यन्त क्षुधित व्यक्ति पीपल की पत्तियां चबाकर अपनी क्षुधा को झुठलाने का असफल प्रयास कर रहा हो।

सहसा द्वार पर किसी ने दस्तक दी।

"कौन है ?" वह हांफता हुआ-सा बोला।

"कोई है घर में ? खोलिये तो सही ?" आगन्तुक ने उच्च स्वर में कहा।

उसने अनुमान किया। यह कोई नारी कण्ठ था। क्षण-भर को उसे लगा जैसे उसे आसक्ति की चरम सीमा पर पहुंचाकर ईश्वर उसके संयम, देवत्व और ब्रह्मचर्य की कटु परीक्षा ले रहा हो।

चेहरे पर झांई-सी पड़ गई, मानो आगन्तुक ने उसकी भंगिमा पढ़ ली हो—वह अस्थिरता की दशा में पुनः द्वार खोलना भूल गया।

आगन्तुक ने जब दुबारा सांकल बजायी तो उसकी शून्य चेतना में सुई-सी चुभी और वह द्वार खोलने बढ़ा।

द्वार झटके के साथ खोल दिया उसने।

"कौन, इन्दिरा ?" उसके होंठ फड़फड़ा उठे और वह काम-जनित आंखों से इन्दिरा को घूरता रह गया।

साक्षात् परम सुन्दरी इन्दिरा मनमोहक प्रसाधनों से अलंकृत एक हाथ में एक चमचमाती हुई थाली लिये खड़ी थी।

वह अवाक्-सा अपलक उसे निहारता रहा।

"हां, मैं ही हूं भाई साहब !" मोहकता से मुस्कराती हुई इन्दिरा अन्दर आती हुई कह पड़ी, "आपने तो हमें एकदम से भुला ही दिया भैया। उस दिन से दर्शन तक न दिए।" क्षण-भर को उसे लगा जैसे उसके अहम् और ब्रह्मचर्यत्व के पवित्र पात्र पर किसी ने थूक दिया हो।

वह लौटकर तख्त पर अपना सारा शरीर चादर में लपेटते हुए बैठ गया।

"हां, नहीं आ सका, कुछ व्यस्त था।" आंखें झुकाकर उसने कांपते स्वर में उत्तर दिया।

"तो हम स्वयं ही चले आए।" इन्दिरा बिना किसी झिझक-सकोच के तख्त पर उसके इतने समीप आ बैठी कि उसकी सांस का उतार-चढ़ाव तक उसे अपनी सांसों में समाता हुआ महसूस हुआ।

उफ़ ! उसका शरीर अंगार हो रहा था। काम-उत्तेजना की प्रचण्डता से

वह ओत-प्रोत हो रही थी और आंखों के तले विवेकहीनता का अंधकार-सा छाता जा रहा था।

सुलगती 'आग' के समीप ही घी से भरी मटकी रखी थी, जिसकी गन्ध आग की साँसों में समायी जा रही थी।

"खामोश क्यों बैठे हो भैया ? क्या मेरे आने से तुम्हें खुशी नहीं हुई ? मैं आज एक महान भावना को मूर्त रूप देने आई हूं।" कहकर इन्दिरा ने अतुल नेह से उसकी बांह पर हाथ रख दिया।

जो गति आग में घी पड़ने से होती है और जो स्थिति बाढ़ में टूट जाने वाले बांध की होती है इन क्षणों में वही स्थिति रामानन्द की हुई।

"अरे, तुम्हारा शरीर तो तप रहा है भैया !" इन्दिरा उसके तमतमाये चेहरे पर हैरान दृष्टि डालकर बोली। हाथ की थाली उसने बगल की मेज पर रख दी थी और उसका माथा छूकर ज्वर की भीषणता का अनुमान कर रही थी।

मानो इन्दिरा की सात्त्विक सान्निध्यता उसकी कुत्सित-लिप्सा में डूब गई हो। उसने अपनी कांपती हथेली इन्दिरा के सुडौल कन्धे पर रख दी और गर्म उच्छ्वास के साथ फुसफुसा उठा—"सचमुच तुम कितनी सुन्दर हो···कितनी।"

"भैया···?" अथाह अचरज से, सशंकित इन्दिरा ने उसके चेहरे पर देखा।

"सचमुच तुम उन्माद की मादक सरिता हो, जिसमें डूबने को मन ···।" वह उसे अपनी ओर खींचने का प्रयास करने लगा।

"यह क्या भैया ?" इन्दिरा सहसा ही तड़प-सी उठी, "तुम्हारी महान आत्मा में यह पाप कहां से समा गया ? भगवान के लिए अपने को संतुलित कर लो। मैं तुम्हें राखी बांधने आई हूं।"

"राखी···। राखी ? मेरी झुलसन का मजाक न उड़ाओ।" और वह भेड़िया-सा भयानक दीखने लगा।

"संभल जाओ भैया !" उसने चेतावनी देनी चाही—"मेरे पवित्र

उद्देश्यों को कलंकित न करो। अपने देवत्व की गरिमा कलंकित करके तुम्हें आजन्म पश्चात्ताप होगा। तुम मुझे सगी बहन मानने का संकल्प कर चुके हो।" उसने रामानन्द को धकेल दिया।

"इन्दिरा ···। मैं उस भावना को सुरक्षित नहीं रख सकता। मैं वासना में पागल हो रहा हूं ··· मुझे मजबूर ···।"

"होश में आ जाइये ···।" तत्क्षण ही इन्दिरा का हाथ झटके के साथ उठा और रामानन्द के गाल पर जा बैठा।

वह लड़खड़ाकर धरती पर बैठ गया। और इन्दिरा हांफती-कांपती वहां से दूसरे कमरे में भाग खड़ी हुई।

वह वासना की प्रबल उत्तेजना में अपने-आपसे लड़ता रहा ··· लड़ता रहा और नफरत की आग उसके दिलो-दिमाग को झुलसाती रही।

वह सिर थामकर पृथ्वी पर बैठ गया। मन और मस्तिष्क को सुस्थिर करने का प्रयास करने लगा। सारा शरीर पसीने से भीग गया था। चेहरा स्याह पड़ रहा था। अपने अंग अपने को ही बोझिल लग रहे थे।

कल तक ब्रह्मचारिता, आत्माभिमान और संयम के नशे में डूबा रहने वाला रामानन्द आज अपने को संसार का सबसे अधम व्यक्ति समझ रहा था। उसे अपने-आपसे घृणा हो रही थी।

'इन्दिरा क्या सोचेगी ? वह भोली-भाली स्नेहमयी इन्दिरा, जो भातृत्व स्नेह की महान भावना से ओत-प्रोत होकर उसे राखी बांधने आई थी ?'

क्या इन्दिरा उसे कभी क्षमा कर सकेगी ? 'नहीं, कदापि नहीं।' बेहया और निर्लज्ज पुरुष अपना चरित्र और संयम विनष्ट करके भी स्वाभिमान की हेकड़ी भरता है मगर नारी अपनी शील, लज्जा और सतीत्व विनष्ट करने के बाद सिर उठाकर चलने का अहम नहीं उठा पाती।

फिर इन्दिरा तो एक अत्यन्त विनम्र और भावुक लड़की है। अपनी स्थिति का आभास कर वह कदापि न जीवित रह सकेगी।

तो फिर उसकी मृत्यु या विनाश का सारा दोष रामानन्द पर पड़ेगा।

रामानन्द फिर से बिलबिला उठा। मस्तक की नसों को कसकर भींचते हुए वह पराजित स्वर में बुदबुदा पड़ा, 'क्या इन्दिरा क्षमा-दान नहीं कर सकती ? क्या उसके चरणों पर गिरकर इस महाव्याधि से मुक्त नहीं हुआ जा सकता ?'

वह उठा और मन तथा मस्तिष्क को काबू में लाने का प्रयास करते हुए दूसरे कमरे की ओर झपटा।

किन्तु सहसा ही मानसिक क्षोभ ने उसे लताड़ा, 'अपना कलुषित मुंह लेकर उसके सामने जाएगा ? लाज न आएगी तुझे ? उसी पर भातृत्व का नेह जताकर क्षमा मांगने जा रहा है ?

अरे मूर्ख ! क्षमा-याचना आत्मिक शान्ति का उपचार नहीं, ऊपरी ढोंग मात्र है।

आंखें मिला सकेगा उससे ?

उजड़ी हुई फुलवारी भंवरे के करुणालाप में दुबारा नहीं खिलती।

जा, कहीं चुल्लू-भर पानी में डूब मर।

उसे इतनी गहरी यंत्रणा हुई कि वह छोटे बच्चे की तरह रो पड़ा।

"आह दैव ! मैं क्या करूं ? मेरा दम घुट रहा है। क्या अपने दुष्कर्म के बदले मुझे मौत नहीं मिल सकती ?"

सहसा उसे कुछ ध्यान आया। वह पागल की तरह बाहर की ओर झपटा और सड़क पर दौड़ता चला गया।

"तुम ठीक कहते थे नरेन्द्र। मैं हार गया।" वह लगभग चीख-सा उठा। नरेन्द्र अपने कमरे में अकेला बैठा हुआ मदिरा-पान कर रहा था।

चौंक कर उसने उसकी विक्षिप्त मुखाकृति की ओर देखा और उठ कर उसके समीप आया।

"यह क्या हालत बना रखी है दोस्त।" उसके कन्धे पर हाथ रखकर वह मन्द-मन्द मुस्कराया।

"मैं पापी हूं। बहन के सतीत्व का घातक। तुम ठीक कहते थे ···।"

वह पागल की तरह ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"मगर तुम्हारे तो कोई बहन नहीं।" कौतूहल से उसकी आंखों में झांकते हुए नरेन्द्र बोला, "ओह, समझ गया। तुम इन्दिरा की बात कह रहे हो न। धर्म ही धोखे की टट्टी है। तभी मैं कह चुका हूं कि धर्म माने धोखा, तुमने स्वाभाविक कार्य ही किया है।"

"नरेन्द्र···!" बीच ही में रामानन्द लगभग चीख-सा उठा, "मैं तुम्हारे पास जहरीले व्यंग्य और उपदेश सुनने नही आया हूं। मुझे अधिक विक्षिप्त बनाने की कोशिश न करो।'

"बैठो-बैठो, तुम भावुक और अनुभवहीन हो। इसलिए पश्चात्ताप की उत्तेजना ने तुम्हें गहरा आघात लगाया है।" स्नेह से उसकी बाहें पकड़कर नरेन्द्र ने अपने समीप बिठा लिया।

"देखो मित्र, नारी रूपी मदिरा बड़े-बड़े ऋषियों, मुनियों और आदर्शवादियों का संयम डिगा देती है और वे पाप कर बैठते हैं। फिर हम-तुम तो अभी साधारण नवयुवक हैं। उस दिन तुम मेरे तर्कों का खण्डन कर रहे थे क्योंकि तुम्हें प्रत्यक्ष नारी-संसर्ग का अनुभव नहीं था। परन्तु आज जब नारी रूपी मदिरा की उत्तेजना···।"

"मेरी आत्मा अपने कुकृत्य पर बिलबिला रही है नरेन्द्र! मैं आत्म-शान्ति की तलाश मे भटक रहा हूं। प्रायश्चित्त का कोई मार्ग बताओ मुझे।"

"जो कुछ तुमने किया वह पुरुषोचित था। उसमें प्रायश्चित्त का सवाल नहीं उठता···।"

"बहन के साथ बलात्कार का प्रयत्न पाप नहीं तो और क्या है?"

"नातेदारी दोनों ओर से निभती है।" नरेन्द्र ने फिर तर्क किया, "उसने तुम्हें भाई मान लिया था मगर तुम्हारी आत्मा तो उसे बहन के रूप में न स्वीकार कर सकी थी। फिर उसका संसर्ग पाप कहां हुआ? पाप तब होता जब सम्बन्ध को दोनों की आत्मा ने आत्मिक भाव से स्वीकार किया होता।"

"तुम मित्रता के नाते मेरे पाप पर पर्दा डाल रहे हो।" वह क्षुब्ध हुआ।

"नहीं दोस्त, ऐसा नहीं।" मदिरा की एक चुस्का लेकर वह बोला, "देश की छाती पर कितनी ही ऐसी घटनाएं बिखरी पड़ी हैं कि पिता ने अपनी सगी पुत्री को, भाई ने अपनी सगी बहन को और बेटे ने मां को भ्रष्ट···।"

"चुप रहो, मेरा मस्तिष्क और विकृत न करो नरेन्द्र।" वह तड़प उठा और तत्क्षण ही उठ खड़ा हुआ।

"फिर बहक रहे हो।" मदिरा का गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए नरेन्द्र ने चुटकी ली, "लो कण्ठ भिगो लो! स्त्री रूपी मदिरा-पान तब तक मनुष्य को वास्तविक विषय-भोग का आनन्द नहीं देता जब तक वास्तविक मदिरा!···।"

"तुम सब पापी हो, समाज के कोढ़ और मैं महापापी।" उत्तेजना में रामानन्द ने नरेन्द्र के हाथ के गिलास पर कसकर एक हाथ मारा।

फर्श पर गिरकर गिलास चकनाचूर हो गया!

नरेन्द्र अवाक्-सा उसकी ओर देखता रहा और वह पुनः आत्मशांति और प्रायश्चित्त की तलाश में सड़क पर भागता चला गया।

हांफते हुए वह अपने गुरुदेव आत्मानन्द के निवास-स्थान के द्वार पर रुका, मानो समस्त मानसिक विकारों और पापों को धोने का एकमात्र स्थल यही हो!

"गुरुदेव, महर्षि!" वह पूरी शक्ति से चिल्ला पड़ा।

"महर्षि तो नहीं हैं।" एक व्यक्ति ने आकर उत्तर दिया।

"कहां गए?" उसने व्याकुलता से पूछा।

"वे राधास्वामी आश्रम, आगरा गए हुए हैं।"

"ओह, अभी मुझे और भटकना होगा?—"

उल्टे पांव वह लौट पड़ा।

उसके पैर अब स्टेशन की ओर भाग रहे थे। मानो गुरुदेव के चरणों में ही उसकी आत्मशान्ति और प्रायश्चित्त-भावना लिपटी हुई हो।

बदहवास-सा वह प्लेटफार्म पर पहुंचा। गाड़ी रेंग चुकी थी।

हांफते हुए दौड़कर वह अंतिम डिब्बे में चढ़ गया।

गाड़ी ने चाल पकड़ी, रफ्तार बढ़ती चली गई। लम्बी-लम्बी सांसें लेते हुए उसने डिब्बे के बाहर झांककर देखा।

वाराणसी विलोप हो चुका था और गाड़ी अंधकार में समाती जा रही थी।

'आगरा में मिलेंगे गुरुजी।' वह फुसफुसाया और तेजी से बढ़ गया।

गाड़ी बढ़ती चली गई।

२

गुलाबी धूप-भरा दिन और आगरा कैण्ट।

प्लेटफार्म के बाहर आकर क्षण-भर को उसने चारों ओर उड़ती-उड़ती दृष्टि डाली।

"राधास्वामी आश्रम पता है ? शायद दयालबाग मुहल्ले में पड़ता है।"

"जी हां, ले चलूं ?" रिक्शे वाले ने घण्टी घनघनाई।

"चलता तो···।" वह जेब टटोलने लगा।

जेब में एक धेला भी न था। वह अपनी विकृति पर मुस्कराया और सड़क पर झपटता हुआ चला गया।

वह राधास्वामी आश्रम की ओर इतनी तेज रफ्तार से झपटता चला जा रहा था मानो वह उसके जीवन की अंतिम मंजिल हो, वहां पहुंचने पर उसकी सारी पीड़ा···कुंठा, धुलकर साफ हो जाएगी।

महर्षि आत्मानन्द वेद-वेदान्त के ज्ञाता तो थे ही साथ ही संस्कृत भाषा के विख्यात विद्वान भी।

श्री-सम्पदा और मान-सम्मान उनके चरणों पर लोटता थी परन्तु उन्होंने संसार की मोह-माया से विरक्ति ले रखी थी और एक वास्तविक तपस्वी का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

यौवनावस्था में वे रामानंद से कम आकर्षक न थे। आज साठ-बासठ वर्ष की आयु में भी उनकी कंचन-सी दमकती देह, उन्नत ललाट, चौड़ी छाती और मधुर वाणी आकर्षण की अद्भुत क्षमता रखती है।

आजीवन अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के लिये वे

प्रख्यात हैं।

ऐसे ही दिव्य महापुरुष की शरण में रामानंद आत्म-शान्ति की आकांक्षा से भागता हुआ चला जा रहा था।

राधास्वामी आश्रम की विशाल अट्टालिका के समक्ष पहुंचकर वह ठिठक गया।

"क्या महर्षिजी भीतर होंगे ?" उसने एक सभ्य दिखने वाले व्यक्ति से पूछा।

"कौन महर्षि ? आत्मानन्द जी ?"

"हां, हां ! वे मेरे गुरुदेव होते हैं। मुझे उनसे मिलना है।" उसने अभिलाषा प्रकट की।

"सीधे सामने वाले बराण्डे में चले जाइए, बाईं तरफ के कमरे में उनका आसन है।"

उसने उस व्यक्ति को धन्यवाद दिया और बरामदे की ओर चल पड़ा।

कमरे का द्वार खुला था। मोटे कपड़े का रंगीन कलात्मक पर्दा झूल रहा था।

"गुरुदेव, मैं वाराणसी से आया हूं, आपका शिष्य रामानन्द।" उसने सादर सम्बोधित किया।

"ओह, रामानन्द ? चले आओ, भीतर चले आओ।" वह तत्क्षण ही भीतर प्रविष्ट हो गया।

एक शानदार मोटे गद्दे और उजली चादर वाली तख्त पर महर्षि मसनद से टिके किसी पुस्तक के अध्ययन-मनन में तल्लीन थे।

उसने झपटकर उनके चरण स्पर्श किये तो महर्षि जैसे सोते-से जगे। उन्होंने विद्यु गति से हाथ की पुस्तक उजली चादर के नीचे डाल दी। और सस्नेह मुस्कराते हुए उसे आशीर्वाद देने लगे।

"आपके दर्शन के लिए मारा-मारा फिर रहा हूं गुरुदेव !" वह भर-भराए कण्ठ से बोला।

"वाराणसी से प्रस्थान करते हुए मुझे तुम्हारा स्मरण आया था।
जीवन स्वस्थ तो है ?" महर्षि ने पूछा।

"क्या बताऊं देव···।" वह अपना वाक्य पूर्ण भी न कर पाया था
सहसा आश्रम-सेवक ने द्वार पर आकर कहा, "महर्षि, सेठ रद्दीवाला की
र बाहर खड़ी है। वे आपके सिर्फ दो मिनट लेंगे।"

"आया, आया।" मुस्कराते हुए महर्षि शय्या पर से उठे और बाहर
निकलते-निकलते रामानन्द से बोले, "मैं अभी आया रामानन्द, फिर तुमसे
वार्तालाप होगा।"

गुरुदेव बाहर चले गए तो रामानन्द की फटी-फटी आंखें कक्ष के चारों
ओर घूमने लगीं।

वैभव, आकर्षण और सुख-प्रसाधनों से युक्त कक्ष, किसी सुख-सौन्दर्य-
धनिक के कक्ष से कम न था।

रामानन्द आंखें फाड़े कक्ष की साज-सज्जा निहारता रहा।

'संसार की मोह-माया और सुख-वैभव से विरक्ति लेकर संन्यास-
पथ ग्रहण करने वाले गुरुदेव के लिए इस वैभव-विलासपूर्ण स्थान का
क्या महत्त्व ? वाराणसी में तो एक एकान्त निर्जन में उन्होंने पर्ण कुटी
डाल रखी है ? पूर्ण संन्यासी का जीवन व्यतीत करते हैं।'

वह तर्क-वितर्क कर रहा था। कक्ष से फिसलकर उसकी दृष्टि गुरु
की शय्या पर आ टिकी। कुशासन पर विश्राम करने वाले महर्षि
सुकोमल बिस्तर ने उसे चकित कर दिया।

'संन्यास, वैराग्य में भी मनुष्य को जीवन-स्तर बनाना पड़ता
तभी तो महर्षि ने यह जीवन-स्तर अपनाया है।'

महर्षि दो मिनट कहकर गए थे, मगर लगभग दस मिनट बीते
भी वे न लौटे।

रामानन्द उकता रहा था। उसके मस्तिष्क की विकृति उसे
थी।

··· स्मरण आया, जब वह कमरे में प्रविष्ट हुआ

किसी पुस्तक का अध्ययन बड़ी तल्लीनता के साथ कर रहे थे।

उसे उत्सुकता हुई। कौन-सी ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसने महर्षि को इतना तन्मय कर रखा था। उसे वह पुस्तक देखने की इच्छा हुई।

उसने गुरुदेव को पुस्तक चादर के नीचे डालते देखा था। चादर हटाकर उसने पुस्तक उठा ली और यथास्थान बैठकर देखने लगा।

पुस्तक के पृष्ठ उलटते ही उसे ऐसा लगा मानो सहसा एक तपती हुई लौह-शलाका किसी ने उसके सीने में घुसेड़ दी हो।

आंखें फैल गईं! जिह्वा दांतों से कट गई और वह एक छटपटाहट-भरी सिसकी लेते-लेते रह गया!

'आह देव···!' तप्त होंठ कंपित होते रहे और पुस्तक के पृष्ठ अपने-आप खुलने-सरकते चले गए।

क्या सारा संसार इसी आग में जल रहा है? इसी भाव-भावना और कालिमा से ओत-प्रोत है? उसे लगा, उसका मस्तिष्क फट जाएगा। पुस्तक बन्द कर उसने एक जलती हुई निःश्वास छोड़ी। पुस्तक को यथास्थान रखकर खम्भ से बैठ गया।

महर्षि या मारीच? निरन्तर दस वर्षों से जिसे गुरुदेव, श्रद्धास्वामी और महानपस्वी समझकर चरण-रज लेता रहा, वही आत्मानन्द है यह? क्या उसी योगिराज आत्मानन्द का यह स्वरूप है? हे परमात्मा···?

मस्तक थामे वह निर्जीव की भांति बैठा रहा। तर्क-वितर्क की शक्ति उसमें शेष न थी।

जिस प्रतिमा की आराधना में उसने जीवन के दस वर्ष बिताए थे, वह प्रतिमा आज स्वयं उसके सिर पर फट पड़ी और उसकी आस्था लहूलुहान हो उठी।

उसकी दशा उस श्रमित पथिक-सी हो रही थी जो घोर निराशा से प्लावित होते हुए भी केवल क्षीण आशा-रश्मि के सहारे निर्दिष्ट स्थान तक पहुंचा हो; परन्तु सहसा ही उसे चेतना आई हो कि जिसे वह अपने विश्राम का अंतिम पड़ाव समझ रहा था, वह बालू के खोखले टीले के

अतिरिक्त कुछ नहीं है।

वह पुस्तक काम-विज्ञान की सर्वाधिक चर्चित पुस्तक थी। महर्षि आत्मानन्द उसी के अध्ययन-मनन में तल्लीन थे।

सहसा कक्ष में प्रविष्ट होते हुए महर्षि बोले, "सेठ रद्दीवाला ने बड़ा समय ले लिया। तुम्हारी ही तरह मेरे बड़े भक्त और अनुयायी हैं। अपनी कोठी में मेरा प्रवचन कराना चाहते हैं, सो अनुमति के लिए आए थे।"

महर्षि शय्या पर पुनः बैठ गए।

रामानन्द ने कुछ सुना नहीं। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके सामने दशहरे की चौकी में राम का पार्ट अदा करने वाला वह व्यक्ति बैठा हो, जो दैनिक जीवन में चोरों और गिरहकटों की सरदारी करता हो।

उसे महर्षि की सूरत से घृणा हो रही थी। अभी कुछ क्षण पहले सुपवित्र, सतेज और अलौकिक दिखने वाला मुखमण्डल इस समय कालिमा और कुत्सितता में डूबा हुआ नजर आ रहा था।

गुरुदेव उसकी मनोभावना न भांप सके और मधुर कण्ठ से बोले, "तुम्हारे लिए कुछ जलपान मंगाऊं? सम्भवतः गाड़ी से उतरकर सीधे यहीं चले आ रहे हो?"

"जलपान की इच्छा नहीं।" उसने मन को संयत कर कहा।

गुरुदेव सेवक को पुकारने ही वाले थे कि एकाएक एक परम सुन्दरी षोडशी ने लहराते-मुस्कराते कक्ष में निःसंकोच भाव से प्रवेश किया।

महर्षि का दमकता मुख-मण्डल क्षण-भर को इस प्रकार स्याह पड़ गया मानो वे कोई दुष्कर्म करते हुए पकड़ लिए गए हों। परन्तु दूसरे ही क्षण अपने को संयत कर निष्फल मुस्कान के साथ बोले, "रामानन्द, ये है राजबाला, सेठ रद्दी वाला की एकमात्र सुपुत्री। बड़ी ही विदुषी और प्रतिभावान। यहीं विश्वविद्यालय से देवभाषा (संस्कृत) में एम० ए० कर रही है। मेरे पास अध्ययन के हेतु चली आती है।"

रामानन्द कुछ बोला नहीं। सिमटी-सिमटी प्रश्नसूचक दृष्टि से राजबाला को घूरता रहा।

वह सुन्दर थी । बेशकीमती वस्त्रों एवं आधुनिक परिधानों में सुसज्जित ।

बड़ी ही चपल, निस्संकोच और एड्वांस दीखती थी !

राजबाला महर्षि की शय्या पर उनके एकदम निकट आ बैठी और ऐसे हाव-भाव में मानो वे उसके मित्र हों अथवा प्रेमी। रामानन्द की उपस्थिति ने उसे विचलित नहीं किया ।

गुरुदेव के मुखड़े की भांई उनके बहुत प्रयास से भी विलुप्त न हुई । वे नहीं चाहते थे कि राजबाला के साथ उसके सम्बन्धों की कोई प्रतिक्रिया रामानन्द पर हो, परन्तु राजबाला की चपलता और स्पष्टता को संकेत-मात्र से दबा पाना असम्भव हो गया ।

"और इनका परिचय ?" राजबाला ने आंखें नचाकर, शरारत से रामानन्द की ओर इंगित किया ।

"अरे, सो तो मैं भूल ही गया । तुम्हारी ही तरह ये भी मेरे एक प्रतिभाशाली शिष्य हैं । नाम है रामानन्द । मेरी तपोभूमि वाराणसी के निवासी हैं, दर्शन करने चले आए ।"

"नमस्कार, आपके साक्षात्कार से प्रसन्नता हुई ।" राजबाला ने वाचाल, निर्लज्ज आंखों से रामानन्द के उस कुम्हलाए हुए मुखमण्डल की ओर देखा जो इस समय कान्तिहीन होते हुए भी पर्याप्त आकर्षक दीखता था ।

"धन्यवाद ।" रामानन्द के अधर फिसलकर रह गए, मानो धन्यवाद के साथ उसकी आत्मा की बिलबिलाहट तड़पकर रह गई हो ।

"मैं चलूंगा गुरुदेव !" उसने उठते-उठते कहा, "यथासमय पुन: दर्शन करूंगा ।"

"बैठोगे नहीं ?" गुरुदेव के स्वर में ऐसी अकुलाहट थी, जो उनके धामागवर होने का आभास दे रही थी । रामानन्द सब कुछ समझ चुका था । बुद्ध भी उसकी दृष्टि-क्षमता से अदृश्य न था ।

वह वायु के झोंके की भांति कमरे से निकला और झंझावात की तरह

झपट पड़ा मानो कई पापात्माएं पीछे से उसे खदेड़ती चली आ रही हों।

"बड़ा भोला नवयुवक था, मुझे अच्छा लगा।" राजबाला उम्र से वृद्ध, परन्तु शरीर से जवान योगिराज की कामुक आंखों में झांकती हुई बुदबुदाई।

"छोड़ो उसका ज़िक्र, मेरे संतुलन की सीमा टूट चुकी है।" महर्षि के स्वर लड़खड़ाए और दूसरे ही क्षण राजबाला का मादक, मांसल शरीर उसके लम्बे-चौड़े शरीर में समा गया, समाता चला गया।

वह विक्षिप्त दशा में सुनसान सड़क पर भागता चला जा रहा था—निरुद्देश्य, अनिश्चित यात्री की भांति।

उसकी विकृति और कुंठा अपनी चरम सीमा पर थी और उस सीमा का विस्तार निरन्तर होता जा रहा था।

'सारा संसार काम-वासना, पापाचार और कृत्रिम प्रतिष्ठा की अग्नि में दहक रहा है। नरेन्द्र ने ठीक कहा था। क्या महर्षि उस भेड़िये संन्यासी से कम हैं? वह पकड़ा गया इसलिए भेड़िया था। महर्षि अप्रकट हैं इसलिए संन्यासी हैं।'

उसने फिर से झटका देकर समस्त विकारों और विकृतियों से मुक्ति पाकर अपने-आपको सुस्थिर करने का प्रयास किया तो आत्मा से अपने आप स्वर फूट पड़े, 'अरे पगले, तू भावुक है, अल्पदर्शी। अभी तूने देखा ही क्या है? संसार विचित्रताओं और विद्रूपताओं का अथाह सागर है जिसमें मछलियां, मगर, घड़ियाल, कछुए और विविध स्वरूपधारी जीव-जन्तु हैं। हर एक की थाह कहां तक लेगा तू? देख और देखता चल! हर ठोकर एक अनुभव है, हर अनुभव एक कठोर सांसारिक सत्य।

इसलिए संसार में तेरा पाप एक बूंद के समान है।'

'तो मैं छोटा पापी हूं।' वह अट्टहास लगा उठा।

एकाएक आंखें चौंधिया उठीं मानो भरी धूप में किसी ने आईना उसकी आंखों के सामने कर दिया हो।

तिलमिलाकर उसने दृष्टि स्थिर की।

ताज सामने ही मुस्करा रहा था। उसकी बुर्जें और मीनारें भरी धूप में दूधिया बर्फ की तरह लम्बी-पतली सलाखों-सी दीखती थीं। भरी धूप में वे इस तरह चमक-दमक रही थीं मानो रूई के खम्भे खड़े कर दिए गए हों।

ताजमहल विश्व की एक अनूठी कलामूर्ति के समक्ष ग्राकर वह मंत्र-मुग्ध हो गया। उसे लगा, ताजमहल की दूधिया मुस्कराहट उसके मन का कलुष धो रही है।

धूप चिलक रही थी। दोपहर के ठीक बारह बजे थे। ताज-प्रदर्शकों और इक्के-दुक्के दर्शकों के अतिरिक्त चांदनी रात वाली भीड़-भाड़ और चहल-पहल न थी।

धीरे-धीरे ताज के सौन्दर्य को निरखता हुआ वह आगे बढ़ा और घबराहट की लम्बी-लम्बी सांसें लेता हुआ ताज-दर्शन करने लगा—ताज की एक चिकनी बुर्ज से लगकर मुमताज के प्रेम की कल्पना।

लोग चांदनी रात में ताज की सौन्दर्य-सुषमा पर विमुग्ध होते हैं किन्तु वह कड़ी दोपहरी में ताज के अपूर्व सौन्दर्य पर मंत्रमुग्ध हो रहा था।

जिस प्रकार मुग्धा नायिका क्रोध में भी सौन्दर्य की अद्भुत मूर्ति दिखती है, उसी प्रकार भरी दोपहरी में भी ताज अजीब सुन्दर लग रहा था।

ताज की सौन्दर्यानुभूति में अपनी विकृतियों को डुबोकर वह इतिहास के पृष्ठ उलटने लगा।

सहसा किसी ने उसकी बांह पकड़कर झकझोरा और वह चौंक-सा पड़ा।

"कहिए जनाब, क्या इरादा है ?" कठोर स्वर और रोबीली मुद्रा ने उसे आतंकित कर दिया।

दो सिपाहियों के साथ एक पुलिस सब-इन्सपेक्टर खड़ा था और उसे घेरे में लेने की कोशिश कर रहा था।

यह पुलिस टुकड़ी ताज की सुरक्षा और रखवाली के लिए तैनात थी। वहां से सरकारी वल्व उतार ले जाने, दर्शकों की जेब साथ कर देने (फारेन-विज़िटर्स) विदेशी दर्शकों को लूट लेने की घटनाएं हो जाया करती थीं, इसलिए पुलिस-विभाग ने सुरक्षा की व्यवस्था कर रखी थी।

हृष्ट-पुष्ट, आवारा और निरुदेद्श्य दीखने वाले रामानन्द पर संदेह हो जाना स्वाभाविक ही था।

"कुछ नहीं···यूं ही।" स्पष्ट उत्तर देने में रामानन्द सिटपिटा गया।

"शातिर वदमाश मालूम होते हो।" सव-इन्सपेक्टर घुड़क पड़ा और उसे खींचते हुए एक ओर ले जाने लगा।

पुलिस के फेर में पड़ने का, सीधे-सादे रामानन्द के लिए यह पहला मौका था इसलिए वह घवरा गया। उसका विवेक ही शून्य हो गया।

"साले यहां पब्लिक को लूटने आते हैं। ऐसी भोली सूरत वना रखी है, मानो कुछ जानता ही न हो। गुरू है गुरू।"

"भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिए। मैं एक शरीफ···।" रामानन्द गिड़गिड़ाया।

"शराफत तो तेरे चेहरे पर लिखी है। वदमाश कहीं का।"

रामानन्द मुक्ति के लिए याचना कर रहा था, अपनी सभ्यता और सद्‌भावना की दुहाई दे रहा था परन्तु पुलिस-इन्सपेक्टर उसे गिरफ्तार करने पर आमादा था।

एक खूबसूरत-सी छोटी कार वहां आ रुकी।

क्षण-भर को दारोगा पुलिस का ध्यान उस ओर गया।

आगे की ड्राइविंग सीट का द्वार खुला।

गंदुमी-गुलाबी रंग-सा एक लचकदार आर्कपक नारी-शरीर वाहर निकला। कोई फॉरिन विज़िटर मालूम होती थी।

सवके सव उस विदेशी तितली की ओर आकर्पित हो गए। वह अप्रतिम सुन्दरी थी। अवस्था तीस से पैंतीस के वीच मालूम होती थी, परन्तु सौन्दर्याकर्पण में किसी पोडशी को मात करने की क्षमता रखती थी।

सांचे में ढली-सी सुडौल और अर्धनग्न देह। ऐसी लगती थी मानो केले के तने चमक रहे हों। सिर के घुंघराले 'बाव्ड बाल' गोरे-गोरे मस्तक तक लहरा रहे थे और धूप में सुनहली चमक पैदा कर रहे थे।

उसने स्कर्ट पहन रखी थी और बाएं कन्धे में एक लम्बा थैला और दायें कन्धे से कैमरा लटका रखा था।

कार से उतरते ही फुदकती हुई-सी वह अपनी गहरी भूरी-भूरी आंखें और कदली जैसी दन्त पंक्तियां चमकाकर ताज की ओर निहार फिर, बड़ी नजाकत के साथ आगे बढ़ी।

दर्शक तो दर्शक, पुलिस सब-इन्सपेक्टर भी लुटकर रह गया।

वह इधर ही आ रही थी अतः पुलिस इन्सपेक्टर ने एक सिपाही को रामानन्द की बांह पकड़ाकर हिदायत की, "ले जाकर इसे बन्द करो। मैं जरा उस फारेनर।" (विदेशी) को अटेण्ड कर लूं।"

सिपाही रामानन्द को खींचने-घसीटने लगे और रामानन्द निरीह दृष्टि से मुक्ति-प्रार्थना करने लगा।

विदेशी तितली की भूरी आंखें उस नवयुवक पर आ टिकीं! वह अचरज से देखने लगी—नवयुवक उसे आकर्षक और सुन्दर लगा। सरसराती हुई वह दारोगा के पास आकर बोली—

"टुमारा सिपाही लोग उस यंगमैन को किडर ले जाता है ?"

"ही इज ए थीफ, मैडम !" (वह चोर है देवीजी) दारोगा ने शिष्टता से उत्तर दिया।

"वो थीफ नहीं है। टुम झूठ बोलता। ही सीमस् टू बी लिटरेट एण्ड जेंटिल (वह सुशिक्षित और सभ्य दीखता है)।" विदेशी महिला ने रामानन्द की सहानुभूति में दारोगा को लताड़ा, "टुम पुलिस वाला जेंटिलमैन को झूठा टंग करता। रिलीज हिम (उसे छोड़ो) नहीं तुम्हारा एस० पी० को कम्पलेण्ट करेगा।"

अप्रत्याशित रूप से एक अपरिचित विदेशी महिला की सहानुभूति ने रामानन्द को उसके प्रति अपार अचरज और श्रद्धा से भर दिया साथ ही

-इन्सपेक्टर भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। वह उसके आदेश का
लंघन करने का साहस न कर सका और पुलिस को रामानन्द को छोड़
की आज्ञा दी।

पुलिस से छुटकारा पाए हुए रामानन्द ने अथाह आभार और श्रद्धा
विदेशी महिला को प्रणाम किया। फिर बुदबुदा पड़ा, "आई यम हाइली
ोबलाइज्ड ऑफ यू। आई कांट रिपे (मैं आपका बहुत आभारी हूं, मैं इस
का बदला नहीं दे सकता)।"

'नेवर माइण्ड (कोई बात नहीं)" दन्त पंक्तियां चमकाती वह बोली;
"कम विथ मी, आई शैल लाइक ए कम्पनी विथ यू)। (मेरे साथ आओ,
मैं तुम्हारा साथ पसन्द करूंगी)।"

रामानन्द के हर्ष का अन्त न था। वह आगे बढ़कर धीरे-धीरे विदेशी
महिला के साथ ताज की ओर बढ़ने लगा।

इस संयोग पर वह जितना प्रफुल्लित था उतना ही चकित भी।
विदेशी महिला के रूप में भगवान ने उसे साक्षात् दया-प्रेम की देवी के
दर्शन करा दिए थे।

दारोगा-पुलिस मन ही मन रामानन्द के सौभाग्य और विदेशी
महिला की 'विदेशी सभ्यता' को गालियां देते हुए एक ओर सरक गए।

"आई कैन इज़ली टॉक इन हिन्दी। आई नो हिन्दुस्तानी वेल ! यू
प्लीज़ स्पीक इन योर मदर टंग। (मैं हिन्दी में सरलतापूर्वक बोल सकती
हूं। मैं हिन्दुस्तानी अच्छी तरह जानती हूं। तुम अपनी मातृ-भाषा में ही
बोलो।" उसने रामानन्द को ऊपर से नीचे तक निहारते हुए कहा।

"पहले हम लॉन में बैठकर काफी पिएगा, फिर तुम्हारे साथ ता
देखेगा।" वह दुबारा बोली और रामानन्द के साथ ताज के सामने
क्यारी की हरी-भरी धरती पर आ बैठी।

"टुमारा नाम? टुमने अपना इन्ट्रोडक्शन (परिचय) नहीं दिया।"

"मुझे रामानन्द कहते हैं। इसी यू०पी० के वाराणसी सिटी में म
है। ताज देखने के लिए आया था।" रामानन्द ने संक्षेप में कहा।

"हम ग्रमरीका से ग्राया है। मेरा नाम ब्रिकी योना है। नावेल राइटिंग करता है।" वह यरसस से, थरमसी कटोरों में कॉफी उंडेलती हुए बोलती गई, "टुम बड़ा इम्प्रेसिव ग्राडमी है, वहोट लव्ली।"

"ग्रोह, ग्राप ग्रमरीकी नावलिस्ट हैं।" ग्रब रामानन्द उसकी ग्रोर विशेष रूप से ग्राकर्षित हुग्रा।

"हां, ग्राजकल हम एक हिस्टोरिकल (ऐतिहासिक) नावेल लिख रहा है जिसका थीम (पृष्ठभूमि) इंडियन हिस्ट्री का मेडुवल (मुगल) पीरियड (काल) है। उसमें हम शाहजहां ग्रौर मुमताजमहल का लव्ह स्टोरी खास तौड पर लिखेगा। इसलिए हम टाज विजिट करने ग्राया है।"

"ग्रापसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।" रामानन्द ने कहा ग्रौर उसके ग्राग्रह पर काफी पीने लगा।

ग्रमरीकी महिला-लेखिका उसपर विमुग्ध थी। उसकी कसरती देह, सुडौल ग्रंगोपांग ग्रौर मदभरी ग्रांखें उसके दिल में गुदगुदी ग्रौर हरकतें पैदा कर रही थीं। मानो ग्राज तक ग्रपने देश में ऐसा बांका नौजवान न मिला हो!

"टुम जानता है शाहजहा ग्रपनी बेगम मुमटाज को बहुत लव करता था।" वह भूरी-भूरी ग्रांखें नचाकर बोली।

"जी!" रामानन्द शिष्टता से इतना ही कह सका।

"टुम भी किसी को लव करता है?"

रामानन्द चौंक-सा पड़ा, मानो पैरों तले चिनगी पड़ गई हो।

"सब यंग मैन लव करता है।" वह फिर बोली।

'जी!' दुबारा भी रामानन्द इतना ही बोल सका।

"ग्रोह, टुम बहुत भोला है।"

उसने रामानन्द का कन्धा पकड़कर कहा ग्रौर रामानन्द ऊपर से नीचे तक सिहर-सिहर उठा।

दोनों ताजमहल में प्रविष्ट हुए। वही दोपहरी का समय था, इसलिए दर्शकों की भीड़ न थी। इक्के-दुक्के लोग छुट-पुट इधर-उधर बिखर

रहे थे।

एक बूढ़े और तजुर्बेकार पथप्रदर्शक (चिरागची) ने जब विदेशी महिला को आते देखा तो खासा इनाम-बख्शीश पाने की उम्मीद में झपट-कर समीप आया।

उसने बड़े अंदाज से लतर की तरह मुड़कर आदाब बजाया कि महिला खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"तशरीफ लाइए मेम साहब। ताज की डेहरी पर इस नाचीज़ की तमाम उम्र गुजरी। बन्दानवाज हुज़ूर, वो-वो अफसाना सुनाएगा कि तबियत खुश हो जाएगी। ताज का हर बुर्ज, हर पत्थर एक काबिले-तारीफ़ आर्ट है।"

महिला उसके पीछे-पीछे हो ली। वह बड़ी दिलचस्पी और बारीकी के साथ दोनों को ताज की खासियत-खसूसियत दिखाने समझाने लगा। चेहरे का हाव-भाव बदल-बदलकर वह इस तरह शाहजहां और मुमताज़ बेगम की मुहब्बत के अफसाने सुना रहा था, मानो सब कुछ उसने अपनी आंखों से देखा हो।

"ओह ! सो डीप लव (इतना गहरा प्रेम)" वह मादकता से फुसफुसाई फिर रामानन्द की हथेली अपनी मांसल हथेली में भींच ली, मानो उसे सर्दी लग आई हो।

रामानन्द के सामने फिर एक नई पहेली, नई समस्या और नई उलझन आ खड़ी हुई।

विदेशी महिला के हाव-भाव, विचार और व्यवहार उसे गहरी कामुकता, वासना और उन्मत्तता में डूबे हुए अनुभव हो रहे थे।

उसके हाथों में भिंची हुई अपनी हथेली वह खींच तो न सका परन्तु स्वयं को भी उसने उन्माद में तिरता-सा महसूस किया।

"टुम खामोश क्यों है ? हम तुमको अच्छा नहीं लगटा ?" वह उसकी कमर में बांहें पिन्हाकर बुदबुदा पड़ी।

"आप बहुत सुन्दर हैं।" रामानन्द इससे अधिक कुछ न कह सका।

"तुम हमको प्यार क्यों नहीं करता?" वह उन्माद से लगभग चीख उठी। इस बार उसने क्षण-भर को रामानन्द का हाथ पकड़ लिया।

रामानन्द ऊपर से नीचे तक सिहर-सिहर उठा। आयरीन की नीलिमा भरी आंखों में वासना के सुरमई डोरे लहर रहे थे। ऐसा लगता था मानो वह भीतर ही भीतर मोम की भांति पिघल रही हो।

बूढ़ा चिरागची गाते-गाते बड़बड़ाए जा रहा था, "हुजूर, बादशाह की बेमिसाल मुहब्बत, अफसाने से इमारत में बदल गई और वह इमारत है ताज। दुनिया में अपनी मुहब्बत की इतनी शानदार यादगार किसी ने नहीं बनाई...।"

"तुम किसी लेडी को इतना प्यार किया है?" वह रामानन्द के कान से सटकर फुसफुसाई, "हम तुम्हारा [illegible] पर [illegible] गया।"

"कुछ सभ्यता का भी ख्याल रखिए।" रामानन्द [illegible] बोल उठा।

उसने कुछ ध्यान नहीं दिया और वह बूढ़े चिरागची के कंधे पर हाथ मारकर कुछ बुदबुदा गई।

चिरागची ने भी उस के [illegible] जिसकी आंखों में बुढ़ापे की [illegible] मन-मन मुस्कराते हुए साहिब से कहा, "[illegible]।"

प्रबन्ध कर रखा था, जहां कामोद्दीपन-हेतु सभी सामग्री की समुचित व्यवस्था थी।

"कित्ता देर लगेगा ?" कलाई घड़ी पर दृष्टि डालकर वह अधीरता से मुस्कराई।

बूढ़ा शरारत से मुस्कराते हुए बोला, "थोड़ी देर और लगेगी हुज़ूर। हाजी उमराव हसन अपनी माशूका के साथ भीतर हैं। जईफ़ आदमी हैं, कितनी देर ठहरेंगे ?"

"हाजी उमराव हसन ?" रामानन्द फुसफुसाकर रह गया।

"तुम बिल्कुल इन्नोसेण्ट···!"मादक और मधुर हास्य के साथ विदेशी महिला बोली और रामानन्द की कमर में हाथ डाले बूढ़े चिरागचीं के प्रबन्धित कक्ष की ओर उसका अनुसरण करने लगी।

"आखिर आप मुझसे चाहती क्या हैं ?" मार्ग में चलते हुए रामानन्द से अमरीकी महिला ने पूछा।

"आई लव यू" वह उसके बदन से लता की भांति लिपटती हुई बोली। रामानन्द कुछ उत्तर भी न दे पाया कि कमरे से निकलते हुए वृद्ध की ओर इंगित करते हुए चिरागचीं बुदबुदाया।

"लीजिए हाजी साहब आ गए, मेम साहब। अब आप जाइए।"

रामानन्द की आंखें अचरज और घृणा से फैलकर रह गई। लगभग सत्तरवर्षीय वृद्ध अपनी पीपल की टेढ़ी डाल-सी झुकी हुई पीठ को सीधी करके चलने का असफल प्रयास करता-सा कक्ष से निकल रहा था। इस समय उसके चेहरे पर कालिख-सी पुती हुई मालूम देती थी मानो वह कोयले की खान से निकलकर आ रहा हो।

"कैसी विडम्बना है !" रामानन्द आंखें फाड़े हाजी जी को देख ही रहा था कि सहसा उसी कक्ष से आती हुई एक मासूम लड़की पर उसकी दृष्टि पड़ी।

वह लड़की मुश्किल से १६-१७ साल की रही होगी और उसके चेहरे पर मासूमियत और बेवसी की पीडा साक्षात दिखाई दे रही थी।

मुमताज का प्यार-मन्दिर ? और उसके आश्रय मे पलने वाला यह विलासियो का भोगस्थल ?

यह हाजी और यह मासूम लड़की ? कितना विषम और विचित्र संयोग है! रामानन्द दीर्घ निःश्वास लेकर लगभग कराह उठा। वह वहा से भाग जाना चाहता था किन्तु विदेशी महिला के सुकोमल हाथ की पकड़ और कड़ी होती जा रही थी। वह आतुरता से उसे लगभग खींचती हुई कक्ष में प्रविष्ट हुई, चिरागची ने द्वार पर पड़े रेशमी पर्दे को ठीक किया और अपना इनाम लेकर एक ओर चला गया।

आखों से मदिरा उड़ेलती हुई और रामानन्द के पैरों मे चिकोटी काटती हुई अमरीकी महिला बोली—

"हम टुमको इनज्वाय के लिए यहा लाया है। टुम हमको लव क्यों नहीं करता ?" और उसने रामानन्द के कपोल चूम लिए।

"आप एक पढ़ी-लिखी विदेशी स्त्री हैं; एक विदुषी महिला। आपको यह शोभा नही देता।" वह उसे झिड़कता हुआ बोला।

"टुम आइडियल (आदर्शवादी) बात करता ? ओ माई गाड ! टुम कितना भोला मैन है।" उसकी कमर मे बाह डाल कर उसे उत्तेजित करने का प्रयास करती हुई वह कह पड़ी, "सेक्स दुनिया का सबसे बड़ा चीज है। इसको हर आदमी लाइक करता। जिसको टुम सभ्यता कहता वो हमारे कण्ट्री मे इलिटृसी (असभ्यता) और पिछड़ापन समझा जाता। टुम फालतू बात मे टाइम वेस्ट करता।"

"मगर पराई स्त्री के साथ सम्पर्क करना हमारी सभ्यता मे पाप समझा जाता है। और मैं पाप करने से डरता हूं। एक पाप ऐसा कर चुका हूं जिसके प्रायश्चित्त मे दर-दर की ठोकरें खा रहा हू, लेकिन अभी तक आत्मा को शान्ति नहीं मिली। ईश्वर के लिए मुझे नया पाप करने को मजबूर न करें।" धर्मभीरु रामानन्द के स्वर मे याचना थी।

"ओह बाबा, टुम बिलकुल हार्टलैस, रुड (कठोर) मैन मालूम होता ?' वह मानो भूरी-भूरी आंखें उसके दयनीय हो आए चेहरे पर टिकाकर

टुम हमको सेटिस्फाई (संतुष्ट) करके पुन्न करेगा। टुमको गलत
है। जानता है हम ताज देखने आया है। हम सोचा था, यहां किसी
के साथ इनज्वाय करेगा ··· जानता है क्यों ? जो विज़िटर्स ताज
ने को शाहजहां और अपने विलवेड (प्रेमिका) को मुमताज समझ
नज्वाय करता, उन्हें बड़ा आनन्द मिलता। उत्ता आनन्द जितना
जहां को मुमताज के इनज्वाय से मिला होगा।"

रामानन्द के हृदय में द्वन्द हो रहा था। महिला का एक भी तर्क उसे
भोग के लिए डावांडोल नहीं कर पा रहा था वल्कि उसकी विरक्ति
ौर कटुता वढ़ती जा रही थी। मगर उसकी दया और सहानुभूति से दबे
होने के कारण सर्वथा उसकी इच्छाओं का विरोध कर पाना भी
दुष्कर था।

"मुझे सेक्स में कोई रुचि नहीं।" उसने मुंह विगाड़कर कहा, "मैंने
अनुभव किया है, जब उत्तेजना बुझ जाती है, आदमी अपने-आपको
पानी में बुझे हुए कोयले की तरह महसूस करता है।"

"तुम इम्पोटेंण्ट (नपुंसक) तो नहीं है बाबा ?" वेहूदे ढंग से कहकर
वह मुस्करा दी। फिर सांस के भार से अपने उठते-गिरते उरोजों को देखती-
देखती बोली, "टुम अभी उस वूढ़े हाजी और यंग गर्ल को देखा था। अगर
सेक्स में कुछ न होटा तो वो दोनों इनज्वाय करने क्यूं आया होता ? एक
मरने के करीब वूढ़ा भी सेक्स का भूख नहीं दबा सका, फिर टुम तो फुल
फ्लेश यंगमैन है।"

"आप गलत समझती हैं, मैं इम्पोटेण्ट नहीं हूं।" इस वार अ
पुरुषत्व पर आघात होने के कारण वह दृढ़ता के साथ वोला, "
जीवन में केवल किसी एक स्त्री को अपना कर ही संसर्ग करना चा
मैं इस भावना को मानने वाला व्यक्ति हूं। आप फारेनर हैं, मेरे ख्या
अनमैरिड (अविवाहिता) भी। ऐसी हालत में मैं आपके साथ संसर्ग
अनुचित समझता हूं।"

"ये सब दकियानूसी हिन्दुस्तानी ख्याल है।" वह झुंझलाक

"सिर्फ एक लेडी से इनज्वाय करने वाला आदमी सेक्स का असली मजा नहीं पा सकता। जिस तरह खाना का स्वाद अलग-अलग होता, वैसा ही सेक्स का स्वाद भी अलग-अलग होता।

"मैं आपके विचार से सहमत नहीं।" उसने तर्क पेश किया, "स्त्री-पुरुष के अंग समान होते हैं और संसर्ग-भावना एक होती है। सेक्स एक प्रबल भूख है और प्रबल भूख में स्वाद नहीं, केवल तृप्ति का महत्व होता है।"

"भूख और स्वाद में डीप कोनेक्शन (गहरी मित्रता) होता।" वह रामानन्द को समझाने लगी, "खाना जितना ही 'टेस्टी' (स्वादिष्ट) होगा भूख को उतना ही गहरा सेटिस्फेक्शन (सन्तोष, तृप्ति) मिलेगा। उसी तरह सेक्स में भी डिफरेण्ट टेस्ट होता है। मनपसन्द आदमी के साथ···।

"सेक्स सिर्फ सेक्स है, सिर्फ एक स्वाद।" रामानन्द ने प्रतिवाद किया, "उत्तेजना की हालत में किसी भी पुरुष अथवा किसी भी स्त्री का संसर्ग एक-सी स्थिति पैदा करता है।"

"तुम को तजुर्बा नहीं।" वह जिद पर अड़कर बोली, "इस फील्ड (क्षेत्र) में तुम बिल्कुल बच्चा है।"

"देखिए, मैं अभी आपको कनविन्स (सहमत) कर देता हूं।" उसने दूसरा रुख अपनाया, "मेरी बात गौर से सुनिए फिर ऑनेस्टी (ईमानदारी) के साथ उसका जवाब दीजिए।"

"तुम हमको सेक्स-साइकलोजी [illegible] वह खिलखिला [illegible]

"सुनिए भी सही।" वह [illegible] कहने लगा, "[illegible] आपकी मेज पर पांच सड़े सेब हैं [illegible] ऊपर के [illegible] रंग क्रमशः लाल, हरा, [illegible]

कोई भी एक सफा उठाकर [illegible]

ऊपर के रंग की तरह [illegible]

"आई सीन्डू [illegible]

कोई भी गोली— [illegible]

ति में सब का स्वाद एक-सा होता है । सेक्स का स्वद वदलने की भावना अनेक स्त्रियों या पुरुषों से संसर्ग करना मात्र करॅप्शन् (चरित्रहीनता, भिचार) है !"

रामानन्द का यह तर्क इतना यथार्थ और अकाट्य था कि विदुषी, विदेशी महिला कुछ क्षणों को गहरे सोच में पड़ गई ।

वह रामानन्द को कोरा एक भोला-भाला और शर्मीला नौजवान-मात्र समझती थी परन्तु इस तर्क ने उसे परास्त और चकित-सा कर दिया ।

"विल यू रिप्लाई ? हैव यू एनी आँनसर ? (क्या आप जवाब देंगी ? है आपके पास कोई उत्तर ?) ।" रामानन्द उसकी भूरी-भूरी आंखों में झांककर मन्द-मन्द मुस्कराया ।

"डोण्ट चैलेंज मी (मुझे चुनौती मत दो) ।" महिला अपनी गोरी पतली अंगुलियों से अपना मस्तक भींचती रही । वह कुछ क्षणों तक अपने-आप से तर्क करती रही फिर सहसा दन्तपक्तियां चमकाती हुई बोली, "ऐग्स (अण्डों) का टेस्ट अलग-अलग भी हो सकता है । अगर वे अलग अलग मुर्गियों ने अलग-अलग दिन पर दिए होंगे तो नेचुरली (स्वाभविक रूप से) वे अलग-अलग टेस्ट के होंगे ।"

"देयर इज़ नो क्यूश्चन ऑफ डिफरेण्ट हेन्स (यहां पर अलग-अलग मुर्गियों का प्रश्न नहीं है) सवाल केवल अण्डों का है ।" रामानन्द ने दृढ़ता के साथ कहा—

"टेल मी वन थिंग ।" (मुझे एक वात वताओ)" वह एक गहरा त सोचकर वोलो "सपोज़, (मान लो) तुम्हारे सामने टेवल पर तीन ग्ल (गिलास) रखी हैं, एक में पानी भरा है, दूसरे में (कण्ट्री मेड) देशी श और थर्ड में शर्वत । तीनों का कलर (रंग सफेद है, क्या तीनों का टेस्ट माफिक होगा जवकि ग्लास तीनों एक जैसे सफेद कलर के हैं ।"

"कदापि नहीं। पानी, शर्वत और देशी शराव तीनों का स्वाद एक-भिन्न होगा ।" चूंकि महिला का तर्क विशुद्ध यथार्थ और वैज्ञ

ा, अतः रामानन्द हठात् ही ऐसा कह गया।

"वेरी गुड।" वह उसकी दोनों भुजाओं को जकड़ती हुई बोली।

रामानन्द एक बार पुनः 'काम-भट्ठी' में सुलगने को विवश हो गया। वह जितना ही वासना से दूर भाग रहा था उस महिला का मदिरोन्मत्त सौन्दर्य उसे उतना ही वासना में लिप्त करता जा रहा था।

जिस विदेशी महिला ने उसे पुलिस की गिद्ध दृष्टि से बचाया था, उसके प्रति स्नेह, सहानुभूति दर्शायी थी और उसे अपने तर्क से पराजित किया था; भला उसकी अवहेलना वह किस साहस से कर सकता था।

वह उसके मांसल शरीर से लता की भांति चिपटती चली जा रही थी मानो नीम के तनों से गुरुच की शाखाएं लिपट रही हों।

सब कुछ के बाद पुरुष पुरुष ही है—नारी जिसकी जन्मसिद्ध दुर्बलता है। जब वह स्वयं पुरुष को आमन्त्रित करती है, उस दशा में पुरुष का संयम मोम की तरह पिघलने लगता है। उसका देवत्व और ब्रह्मचर्यत्व उस बालू के टीले की भांति ढहने लगता है जिसे बच्चे घण्टों में उठाकर खड़ा करते हैं।

वह उसके अंगों से खेलने लगा।

ताज शाहजहां और मुमताज के प्रेम का स्मृति-मंदिर है, परन्तु जब दो प्रेमी ताज की रंगीनियों को निहारते हैं तो वे एक-दूसरे को शाहजहां और मुमताज बनाकर अपनी प्रेमानुभूति की तुष्टि-पुष्टि करते हैं।

'इस वक्त तुम अपने को शाहजहां समझो, मैं अपने को मुमताज समझ रही हूं। डियरी, इट इज ए ग्रेट फीलिंग दैट विल गिव अस लिव इनटनाम, प्रिय, यह एक महान अनुभूति है, जो हमें इस संसार में वास्तविक आनन्द

पर रख दिया।

"खुदा आप दोनों की मुहब्बत बादशाह सलामत की मुहब्बत-की तरह कायम रखे।" वह लजीज उर्दू में दुआएं देता रहा।

वे दोनों सुनी-अनसुनी करके ताज से दूर होते रहे !

दोनों मौन, यंत्रवत् चल रहे थे, ठीक उस प्रकार जैसे तूफान खत्म होने के बाद निर्जीव हवा में कोई आवाज़ और सरसराहट नहीं रह जाती।

ताज से लगभग दो-डेढ़ फर्लांग की दूरी पर टूरिस्ट रेस्ट्रां था, जो विशेप रूप से विदेशी ताज दर्शकों के जलपान के निमित्त स्थापित था।

अमरीकी महिला उसी रेस्ट्रां की एक खाली केबिन में रामानन्द सहित आकर बैठ गई और बेयरा झपटता हुआ केबिन में आ पहुंचा।

"टुम क्या खाएगा ?" महिला ने रामानन्द से ऐसी सूखी आवाज़ में पूछा जैसे वह उसके सिर पर कोई बोझ हो और उसे उठाए रहने में वह अब अपमान महसूस कर रही हो।

"कुछ भी मंगा लीजिए।" रामानन्द ने संक्षेप में कहा।

उसने दुबारा नहीं पूछा। अपने-आपसे बेयरे को आदेश देने लगी।

रामानन्द को गहरी भूख लगी थी मगर इस स्थिति में भी वह अमरीकी महिला के मनोभावों से अनभिज्ञ नहीं रहा।

वह अपने आप से कह पड़ा, 'काम-वासना भी कैसी अद्भुत चीज़ है। जो भोग के पूर्व स्त्री-पुरुप को एक-दूसरे का अनुचर बनाए रखती है और भोग के बाद दोनों को एक-दूसरे की क्षोभ और ग्लानि का कारण बना देती है।'

तभी तो आध घंटे पूर्व यह कामान्ध महिला उसे प्राणों से लगाए रही है और अब ऐसा व्यवहार कर रही है मानो वह उसका सेवक हो।

ऐसे अपमान का घूंट पीकर भी उसने अपने उदर की क्षुधा तृप्ति की। भोजन के बीच महिला ने कोई भी प्रसंग नहीं उठाया।

महिला ने रेस्ट्रां का बिल चुकाया। फिर लचकती-मटकती बाहर निकलकर औपचारिक मुस्कराहट के साथ रामानन्द से बोली, "थैंक्स फार योर

कम्पनी, नाउ आई दैल गो टू माई प्लेस (तुम्हारे संसर्ग के लिए धन्यवाद। अब मैं अपने ठिकाने पर जाऊंगी)।"

रामानन्द के किसी उत्तर से पहले ही हाथ हिलाकर टा ' ' टा करती हुई वह विदेशी तितली फुदकती हुई अपनी कार की ओर चली गई और रामानन्द किंकर्तव्य-विमूढ़-सा खड़ा-खड़ा फटी-फटी आंखों से उसे जाते हुए देखता रहा।

मन ने आहत स्वर में कहा, 'सेक्स एक भूख है, एक स्वाद। कोई आवश्यक नहीं कि वह केवल एक ही प्रकार के भोजन पर संतुष्ट रहे।'

महिला जब उसकी दृष्टि और भावक्षमता से परे हो गई तो सहसा उसे अपना ध्यान आया और एकबारगी उसका मस्तिष्क भिन्नाने लगा।

अब वह कहां जाए? क्या करे? उसके सामने एक विषम समस्या थी। कोई निर्दिष्ट पथ अथवा मंजिल उसके सामने न थी, जिधर भी मन दौड़ता था, गहरे अंधकार, घुटन और कुंठा के अलावा उसे और कुछ न दिखाई पड़ता था! हर ओर धर्म माने धोखा, साधु माने ढोंग, ईमान माने बेईमान और इंसानियत माने पापाचार ही दृष्टिगत होता था।

हर ओर उसे वासना के कीड़े, पापाचार के पिस्सू, दुराचार के दीमक और हैवानियत के पुतले बिलबिलाते दिखाई पड़ते थे! कहीं उसे दो पग भूमि भी ऐसी स्वच्छ-निर्मल न दिखाई पड़ रही थी जहां अपना आसन लगाकर वह अपनी भटकी हुई आत्मग्लानि को पुन: प्रतिष्ठापित कर सके।

'आह दैव!' एक दर्द भरी आह उसके सूखे होंठों से फिसलकर रह गई। उसका सिर फिर से चकराने लगा, संसार फिरकी की तरह नाचता दिखाई पड़ने लगा।

मारे ग्लानि के मस्तक दोरते हुए अपने भूत को विस्मरण करने की भावना से वह तेज़ कदमों से आगे बढ़ने लगा।

एक लावारिस कुत्ते की भांति वह अनिश्चित मंजिल की ओर बढ़ता चला जा रहा था।

सहसा कोई मजबूत हाथ उसके कन्धे पर पड़ा और एकदम से चौंककर वह पीछे मुड़ा।

ऊपर से नीचे तक अप्रत्याशित रूप से वह कांप उठा।

वही पुलिस-इन्सपेक्टर उसका कन्धा थामे हुए आग्नेय नेत्रों से उसे घूर रहा था।

"कहिए मिस्टर, मिजाज तो ठीक है ?"

"जी···जी···।" वह अस्फुट स्वर में घिघियाकर रह गया।

"जी, जी, के बच्चे।" सब-इन्सपेक्टर उसे ज़ोर का धक्का देकर गुर्राया, "कहां गई वह तितली ?"

संभल न पाने के कारण वह मुंह के बल पृथ्वी पर औंध गया।

"देखता हूं अब कौन बचाता है तुझे ?" दारोगा ने कालर पकड़कर उसे खींचा और थाने की ओर ले बढ़ा।

मुक्ति के लिए उसने याचना-प्रार्थना नहीं की, केवल निरीह-दयनीय दृष्टि से दारोगा के चेहरे की ओर देखता रहा।

दारोगा उसकी आवारगी को पहले ही भांप चुका था मगर खास तौर से वह उस पर इसलिए कुपित था चूंकि अमरीकी महिला ने उसे छुड़ा दिया था और उसी के कारण उसे अपमानित होना पड़ा था।

उसने एकाध बार गिड़गिड़ाकर दारोगा को अपनी निर्दोषता और सचाई की दुहाई देनी चाही मगर दारोगा ने उसे इसलिए नहीं पकड़ा था कि वह अपराधी था, बल्कि इसलिए पकड़ा था कि वह सीधा-सादा और परेशान था। अन्यथा कुशल अपराधी और सफल बदमाश को पकड़ने की भूल पुलिस कभी नहीं करती।

बिना किसी जांच-परख के उसके ऊपर दफा १०९ का अपराध लगाकर जेल में ठूंस दिया गया। पुलिस अपराधी बनाती है और अपराधी पुलिस विभाग की महत्ता की वृद्धि करते हैं।

उसे बन्दी बनाकर दारोगा सेठ झंगामल बताशा वाला के पास आया। सेठ झंगामल बताशा वाला पुलिस का पुराना मुखबिर और गवाह था।

गवाही-शहादत की रकम पर ही उसने आगरा शहर में तीन मंजिल की इमारत खड़ी की थी। वैसे उसकी बताशा की भी एक दूकान थी मगर वह बरायनाम ही चलती थी।

"क्या हुकुम है हुजूर?" छंगामल दारोगा को सिर झुकाकर फिक्क से हँस पड़ा।

"गवाही देनी है, और क्या?" दारोगा मन्द-मन्द मुस्कराते हुए बोला, "इधर बहुत दिनों बाद एक केस बना है।"

"सही वाकया है?" छंगामल ने आँखें फाड़कर पूछा।

"सही केस में फर्जी गवाही की जरूरत नहीं पड़ती।" कहने लगा दारोगा, "अपने एरिया में कोई शातिर बदमाश सालों से हाथ साफ कर रहा है मगर आज तक हमारे हाथ नहीं लगा। पब्लिक ने एस० पी० के पास शिकायत की जिससे हमारे पास साहब का जवाबतलब आया है और मुझे 'वारनिंग' दी गई है कि अगर पन्द्रह दिन के भीतर मैंने उस बदमाश को गिरफ्तार न किया तो मेरे ऊपर चार्ज लगेगा।

"हफ्ते भर से ऊपर होने को आए वह बदमाश हमारे हाथ नहीं आया। रोज हमारी आँखों में धूल झोंककर एक न एक वारदात कर जाता है। आज मैंने एक आवारा आदमी को गिरफ्तार किया है। अब उसी के खिलाफ उस बदमाश का चार्ज लगाकर मुकदमा तैयार करना है।"

"उसकी गिरफ्तारी कहाँ हुई?" छंगामल ने पूछा।

"गिरफ्तारी तो ताजमहल एरिया में हुई है मगर उससे तुम्हें क्या मतलब?"

"फिर?"

"तुम्हें तो साफ-साफ गवाही देनी है कि वह तुम्हारे घर में चोरी की नीयत से घुसा था। खटपट से तुम जाग गए और उसे पकड़ लिया। तब तक गश्ती पुलिस वाले आ गए और उसे पकड़ लिया गया—समझे।"

"मगर सरकार?"

"अगर-मगर कुछ नहीं।" दारोगा घुड़का। फिर बड़े

से मुंह लगाकर कुछ कहता रहा ।

छंगामल की वांछें खिल गईं । । मुजरिम और मुकदमे की सारी बनावटी कथा का रिहर्सल उसने दारोगा को उसी दम कर दिखाया ।

निर्दोप रामानन्द को सेठ छंगामल के यहां चोरी करने के अपराध में अदालत ने चार माह की सज़ा सुना दी । पुलिस ने उसके विरुद्ध जो मुकदमा बनाया था, रामानन्द का उससे रंचमात्र भी सम्बन्ध न था किन्तु सेठ छंगामल ने अपना पार्ट इतनी कुशलता के साथ अदा किया कि निर्दोप रामानन्द की सचाई-सफाई की कोई आवश्यकता हो न पड़ी ।

अदालत के फैसले के बाद वह आगरा डिस्ट्रिक्ट जेल भेज दिया गया, जहां उसे अपनी सज़ा भुगतनी थी । यथार्थ की कठोर धरती पर, अनुभव की नई दिशा रामानन्द को सहज ही मिल गई ।

अपराधियों के विस्तृत संसार में आकर रामानन्द दुःखी या विचलित नहीं हुआ । यह एक ऐसा संसार था जो नाना प्रकार की विचित्रताओं, रोमांच,अनूठी जीवन-कथाओं और विद्रूपताओं से परिपूर्ण था ।

उस दिन उसने प्रथम बार 'अद्‌भुत यातना गृह' (जेल) के दर्शन किए और आंखों में घृणा नहीं, वरन् कौतूहल समेटे सब कुछ देखता-निहारता रहा ।

'बैरक' कहे जाने वाले उस लम्बे बाराण्डे को जिसमें उसे रहना था फटी-फटी आंखों से देखता रहा जो उसीकी श्रेणी के अनेक दोपी-निर्दोपी लोगों से भरा था । मनुष्य कहे जाने वाले तमाम लोग जो अपने-अपने मिट्टी के बने चौदरों पर कम्बल-फट्टा, जो मूज के बने थे, बिछाए और उधड़े मैले बदबूदार झिन्ने कम्बलों को ओढ़े बैठे थे मानो वह कोई अजायबघर का जानवरों के रहने का स्थान हो या भेड़ों का ठौर ।

वे सब के सब निश्चिन्त, प्रसन्न और संतोप पूर्ण दीखते थे, जैसे संसार की कटुता-विपमता से भिन्न उनका यह सूक्ष्म संसार अत्यन्त आकर्पक हो ।

बैरक के द्वार पर ठिठका खड़ा रामानन्द सारे अनोखे दृश्य देख रहा

था—यह दुनिया उसे अजीब लग रही थी, अनुभवों की खुली पोटली।

तरह-तरह के चेहरे, अजीबोगरीब शक्लें। कुछ बहुत भयानक और कुछ मासूम सूरतें। कहने को जेल मगर एक ऐसी निराली दुनिया जो छोटी-सी होने के बावजूद भी संसार की अनेकानेक भाव-भावनाओं का अगम सागर-सी लगती थी।

वह अपने निर्दोष ही जेल में ठूंसे जाने के विक्षोभ को भूल रहा था क्योंकि अनुभवों और विचारों का यह नया संसार उसकी उत्सुकता का केन्द्र बन रहा था।

थोड़ी ही देर में बैरक के एक मिट्टी के चबूतरे पर खाली स्थान पर उसका भी फट्टा और कम्बल बिछ गया, और दूसरे दिन शरीर के शरीफाना वस्त्रों का स्थान जेली कपड़ों ने ले लिया।

बैरक के अन्य साथी जो संख्या में नौ थे (इस समय वहां आठ ही उपस्थित थे) उस नए 'मेहमान' को अजीब ढंग से घूर रहे थे मानो उसके स्वभाव, मनोभाव और अपराध का अध्ययन कर रहे हों। उनकी आंखों में दया, व्यंग्य, सहानुभूति, उपेक्षा और हिंसा अनेक भावों का मिला-जुला प्रभाव था।

रामानन्द अपने स्थान पर बैठा-बैठा सहमा-सा, भावपूर्ण मुद्रा में उन सबों को घूर रहा था मानो आंखों ही आंखों में उन सबकी निकटता और मैत्री भाव की लालसा प्रकट कर रहा हो।

चार साथी एक के ओटे पर आ जमे आपस में कुछ फुसफुसाए, ठहाका मारकर हंसे। फिर सबने बीड़ी सुलगाई और ताश के पत्ते बट गए जिसमें जेल का वार्डर भी शरीक हो गया! रामानन्द गुम-सुम सा सब कुछ देख रहा था। जाहिर था कि वे लोग जुआ खेल रहे थे क्योंकि बीच-बीच में बाजी खत्म होने पर वे एक-दूसरे से पैसे का हिसाब करते। फिर नया दौर शुरू हो जाता।

'जेल में भी जुआ?" रामानन्द अचरज से फुसफुसा उठा।

चार अन्य साथी जो जुआ में रुचि नहीं रखते थे, अपने-अपने स्थान

से मुंह लगाकर कुछ कहता रहा।

छंगामल की बांछें खिल गईं।। मुजरिम और मुकदमे की सारी बनावटी कथा का रिहर्सल उसने दारोगा को उसी दम कर दिखाया।

निर्दोष रामानन्द को सेठ छंगामल के यहां चोरी करने के अपराध में अदालत ने चार माह की सज़ा सुना दी। पुलिस ने उसके विरुद्ध जो मुकदमा बनाया था, रामानन्द का उससे रंचमात्र भी सम्बन्ध न था किन्तु सेठ छंगामल ने अपना पार्ट इतनी कुशलता के साथ अदा किया कि निर्दोष रामानन्द की सचाई-सफाई की कोई आवश्यकता ही न पड़ी।

अदालत के फैसले के बाद वह आगरा डिस्ट्रिक्ट जेल भेज दिया गया, जहां उसे अपनी सज़ा भुगतनी थी। यथार्थ की कठोर धरती पर, अनुभव की नई दिशा रामानन्द को सहज ही मिल गई।

अपराधियों के विस्तृत संसार में आकर रामानन्द दुःखी या विचलित नहीं हुआ। यह एक ऐसा संसार था जो नाना प्रकार की विचित्रताओं, रोमांच,अनूठी जीवन-कथाओं और विद्रूपताओं से परिपूर्ण था।

उस दिन उसने प्रथम बार 'अद्‌भुत यातना गृह' (जेल) के दर्शन किए और आंखों में घृणा नहीं, वरन् कौतूहल समेटे सब कुछ देखता-निहारता रहा।

'बैरक' कहे जाने वाले उस लम्बे बाराण्डे को जिसमें उसे रहना था फटी-फटी आंखों से देखता रहा जो उसीकी श्रेणी के अनेक दोषी-निर्दोषी लोगों से भरा था। मनुष्य कहे जाने वाले तमाम लोग जो अपने-अपने मिट्टी के बने चौदरों पर कम्बल-फट्टा, जो मूज के बने थे, बिछाए और उधड़े मैले बदबूदार झिन्ने कम्बलों को ओढ़े बैठे थे मानो वह कोई अजायबघर का जानवरों के रहने का स्थान हो या भेड़ों का ठौर।

वे सब के सब निश्चिन्त, प्रसन्न और संतोष पूर्ण दीखते थे, जैसे संसार की कटुता-विषमता से भिन्न उनका यह सूक्ष्म संसार अत्यन्त आकर्षक हो।

बैरक के द्वार पर ठिठका खड़ा रामानन्द सारे अनोखे दृश्य देख रहा

था—यह दुनिया उसे अजीब लग रही थी, अनुभवों की अनूठी पोटली।

तरह-तरह के चेहरे, अजीबोगरीब शक्लें। कुछ बहुत भयानक और कुछ मासूम सूरतें। कहने को जेल मगर एक ऐसी निराली दुनिया जो छोटी-सी होने के बावजूद भी संसार की अनेकानेक भाव-भावनाओं का अगम सागर-सी लगती थी।

वह अपने निर्दोष ही जेल में ठूंसे जाने के विक्षोभ को भूल रहा था क्योंकि अनुभवों और विचारों का यह नया संसार उसकी उत्सुकता का केन्द्र बन रहा था।

थोड़ी ही देर में बैरक के एक मिट्टी के चबूतरे पर खाली स्थान पर उसका भी फट्टा और कम्बल बिछ गया, और दूसरे दिन शरीर के शरीफाना वस्त्रों का स्थान जेली कपड़ों ने ले लिया।

बैरक के अन्य साथी जो संख्या में नौ थे (इस समय वहां आठ ही उपस्थित थे) उस नए 'मेहमान' को अजीब ढंग से घूर रहे थे मानो उसके स्वभाव, मनोभाव और अपराध का अध्ययन कर रहे हों। उनकी आंखों में दया, व्यंग्य, सहानुभूति, उपेक्षा और हिंसा अनेक भावों का मिला-जुला प्रभाव था।

रामानन्द अपने स्थान पर बैठा-बैठा सहमा-सा, भावपूर्ण मुद्रा में उन सबों को घूर रहा था मानो आंखों ही आंखों में उन सबकी निकटता और मैत्री भाव की लालसा प्रकट कर रहा हो।

चार साथी एक के ओटे पर आ जमे आपस में कुछ फुसफुसाए, ठहाका मारकर हंसे। फिर सबने बीड़ी सुलगाई और ताश के पत्ते बट गए जिसमें जेल का वार्डर भी शरीक हो गया! रामानन्द गुम-सुम सा सब कुछ देख रहा था। जाहिर था कि वे लोग जुआ खेल रहे थे क्योंकि बीच-बीच में बाजी खत्म होने पर वे एक-दूसरे से पैसे का हिसाब करते। फिर नया दौर शुरू हो जाता।

"जेल में भी जुआ?" रामानन्द अचरज से फुसफुसा उठा।

चार अन्य साथी जो जुआ में रुचि नहीं रखते थे, अपने-अपने स्थान

०

र वैठे आपस में कुछ मंत्रणा कर रहे थे।

एक मस्तक पकड़े कुछ ऐसी करुण मुद्रा में वैठा था मानो घर-परिवार की स्मृति में डूबा हुआ हो। दूसरा पेट से घुटने टिकाए लेटा हुआ कराह रहा था मानो उसके पेट में पीड़ा उठ रही हो जिसे वह इस प्रकार सहन करने का प्रयास कर रहा हो।

तीसरा यथास्थान वैठा हुआ कभी मुट्ठियां भींचता, कभी दांत पीसता और कभी ओटे पर घूंसा मार कर अपने-आप-से कुछ कहने लगता मानो वह किसी भयानक शत्रु से वदला लेने की अनुभूति में पागल हो रहा हो और चौथा सवसे विलग सिर झुकाए कुछ लिखने में तल्लीन दीखता था।

हर कैदी रामानन्द के लिए एक रोमांच और रहस्यपूर्ण चरित्र वन कर रह गया। वह सभी के प्रति उत्सुक और जिज्ञासु हुआ परन्तु अत्यन्त घुटन और गंदगी भरी वैरक में सर्वत्र से एकाग्र होकर लेखन कार्य करने वाले जेल-यात्री के प्रति वह सर्वाधिक उत्सुक और जिज्ञासु हो उठा।

कई क्षणों तक वह भाव भरी आंखों से उसकी ओर देखता रहा। मगर उस वीच एक वार भी उस व्यक्ति की लेखन-व्यस्तता भंग नहीं हुई।

रामानन्द का जी वार-वार चाह रहा था कि वारी-वारी से वह प्रत्ये सह-जेल-यात्री के पास जाए, उसका परिचय प्राप्त करे परन्तु सर्वथा नवी और संकोचशील जेल यात्री होने के नाते वह ऐसा न कर सका। म उसकी दृष्टि उन्हीं लोगों पर थी।

सहसा एक विचित्र व्यक्तित्व का कैदी वैरक में दाखिल हुआ रामानन्द उसकी ओर आकर्षित हुआ। वह वैरक के दसवें खाली ओटे का कैदी था मगर वेष-भूषा और स्वभाव में अन्य कैदियों से सर्वथा दीखता था। वड़ी मस्त चाल से एक सस्ता फिल्मी गीत गुनगुनाते वह अपने ओटे की ओर चला आ रहा था।

उसकी दृष्टि अचानक रामानन्द के विस्तर पर पड़ी और मुंह सीटी वजाते हुए वह फिक्क-से हंस पड़ा, मानो अपने नए सह-या

स्वागत कर रहा हो।

रामानन्द के बगल में ही उसका बिस्तर था। बिस्तर पर आते-आते उसने अपनी पैन्ट की जेब से सिगरेट-माचिस निकाली और फर्र से सिगरेट सुलगाकर धुएं के लच्छेदार अम्बार रामानन्द के चेहरे पर फेंकने लगा।

"हल्लो पार्टनर, आप कब तशरीफ लाए ?" उसने मुस्कराते हुए रामानन्द की ओर सकेत किया, "ससुराल पसन्द आई ?" वह मुंह मटरा-कर हंसा जैसे रामानन्द से उसका पुराना परिचय हो।

रामानन्द ऐसे असभ्य और साधारण व्यक्ति के सम्पर्क मे कभी न आया था परन्तु यहा सभ्य और उच्च व्यक्तित्व का सर्वदा अभाव था। तथा यह व्यक्ति बड़ा दिलचस्प मालूम होता था इसलिए वह उसकी ओर आकर्षित हुआ।

"गम किस बात का माई डियर ?" धुए के अम्बार छोड़ते हुए उसने चुहल किया, "कौन यहा लड़ा सीखना है ? अरे खाओ, पीयो मजा करो। ससुराल समझो ससुराल। हा ये बात जरूर है, ससुर बहुतेरे हैं, बीबी एक भी नहीं, क्यो वे शेरखां ··?" एक और व्यक्ति को उसने सम्बोधित किया और अपने-आप ही हथेली बजाकर हस पड़ा।

"अबे, बीबी बिठाने के चक्कर मे ही तो तू यहा लाकर पटका गया ?" शेरखां कहे जाने वाले व्यक्ति ने फब्ती कसी।

रामानन्द अनुभव कर रहा था कि जेल यात्रा उनके लिए दुख, पश्चात्ताप नहीं आनन्द, आराम और निश्चिन्तता का पड़ाव है।

उसने स्वय रामानन्द के ओटे पर आकर उसे अपना परिचय दिया। रामानन्द अपने व्यक्तित्व, शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षक रूप के कारण अभिशप्त होता आया है। यहा भी अपने स्वभाव के कारण अपने को अपने अकेलेपन के बीच न रख सका।

अपना वृत्तान्त सुनाते हुए उस व्यक्ति ने बताया कि वह लखनऊ के एक सुविख्यात कीमती होटल में बेयरे का काम करता था। लगभग चार माह हुए एक लड़की भगाने के केस मे उसे छह मास की सजा हो गई। आधी

लखनऊ में कटी, आधी आगरा ज़िला जेल में कट रही है !

"और तुम्हारा परिचय माई डियर ?" उसने रामानन्द के कन्धे पर स्नेह से हाथ रखकर पूछा, "गज़ब की जानमारू शक्ल पाई है तुमने ! किसी अच्छे-भले रईस खानदान के मालूम पड़ते हो ?"

"ऐसी बात तो नहीं।" रामानन्द ने हल्के से मुस्कराकर कहा," सब भाग्य का खेल है। वैसे मैं किसी अपराध में जेल नहीं आया हूं।"

"खूब कही यार तुमने।" वह कहकहा लगाकर बोला, "असली अपराध करने वाले बहुत कम जेल आते हैं। जेल तो तुम्हारे जैसे शरीफ आदमियों के लिए बनाई गई है।"

"क्यों एक सीधे-सादे आदमी पर कीचड़ उछाल रहा है माधव के बच्चे।" शेरखां घुड़क पड़ा, "ला, कुछ नसा-पानी है ?"

"अभी लो उस्ताद।" माधव पैंट की चोर जेब में से एक पुड़िया निकालते हुए बोला, "कीचड़ नहीं उछाल रहा हूं. सच कह रहा हूं। तुम्हीं बताओ असली मुजरिम जेल में कितने आते होंगे ?"

"दस परसेन्ट भी नहीं माधव।" इस बार उस व्यक्ति ने कहा जो अभी थोड़ी देर पहले अपने ओटे पर बैठा, प्रतिशोध की भावना से आकुल अपने आपसे गुंथ रहा था।

"आप इन्हीं शिवराम भैया को देखो। मेरी बात के जीते-जागते सबूत हैं। अपना घर भी लुटाया, उल्टा यहां ठूंस लिए गये !"

"मुझे छूटने तो दो, फिर देखना।" शिवराम कहे जाने वाले व्यक्ति ने दांत पीसकर कहा, "उस सूअर के बच्चे की जान न ले ली तो कुछ किया, भले ही इस बार फांसी पर चढ़ा दिया जाऊं।"

रामानन्द अवाक्-सा उसकी ओर देखता रहा—उसे आभास हो था कि वास्तव में यह व्यक्ति निर्दोष ही सजा काट रहा है।

रामानन्द अचरज से अपने सह-जेलयात्रियों का वृत्तान्त सुन रहा शेरखां, उसके साथ जुआ खेलने वाले अन्य तीन कैदी, इन चारों को डालने और हत्याएं करने के आरोप में लम्बी सज़ाएं हुई थीं। शेरखां

उसके साथियों ने बताया कि वे चारों पहले किसी फैक्टरी में ईमानदारी की नौकरी करते थे, अचानक ही फैक्टरी को घाटा लगा और वह बारह-बार बन्द हो गया। सालों वे लोग नौकरी की तलाश में मारे-मारे फिरते रहे मगर उन्हें कहीं नौकरी न मिली। इधर-उधर भटके। उधर घर में बाल-बच्चे भूख से तड़प रहे थे इधर उदरपूर्ति का कोई साधन न था। अन्त में हर ओर से हताश-निराश होकर उन लोगों ने लूट-पाट शुरू कर दी। वे सालों लूट-पाट और हत्याएं करते रहे परन्तु कभी पकड़े न गए। परन्तु अभी पांच माह पीछे एक बड़े डाके में पुलिस ने जान की बाजी लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उनके अपराधों के फलस्वरूप उन्हें लम्बी सजाएं हुईं।

"अपने परिवार का पेट पालने के लिए तुम्हें लूट-खसोट करने को मजबूर होना पड़ा मगर इससे तुम्हारा आगे का जीवन तो विनष्ट हो गया।" रामानन्द ने शेरसा और उसके साथियों से कहा।

"जिन्दगी तो हमारी यूं ही बरबाद थी।" वे बड़े संतोष के साथ कह पड़े—"घर पर इतना कमाकर रख आए हैं कि पुश्त-दो पुश्त के लिए काफी है। रही हमारी बात, तो हम यहां आकर रोज-रोज के झंझट से बचे। जेल ही सही, आराम से पड़े-पड़े रोटी तो खा रहे हैं।"

रामानन्द अधिक तर्क न कर सका। ठण्डी निःश्वास लेकर रह गया।

वह व्यक्ति जो सबसे अलग-थलग कोने में बैठा अब तक लिखने में तल्लीन था, उसकी ओर संकेत कर रामानन्द ने बैरे से पूछा, "कोई अध्ययनशील व्यक्ति मालूम होता है ! घण्टों से चुपचाप लिखने में तल्लीन है।"

"अरे वो।" उसकी ओर संकेत कर माधव (बैरे) ने जरा आदर के साथ कहा, "वह लेखक है ! बड़ी अच्छी कहानियां लिखता है। जब-तब मूड ठीक होने पर हमें सुनाया करता है। बेचारा यहां बुरा फंसा · · !" बात आधी ही छोड़कर वह लम्बी सांसें खींच उठा।

"ओह, मुझे आरम्भ में ही, आभास हुआ था कि अवश्य ही वह कोई

ऐसा ही निराला जीव है।" रामानन्द अचरज और सहानुभूति से बुदबुदाया, "क्या उसने भी कोई अपराध किया है ? वह तो बहुत गंभीर और सभ्य दीखता है।"

"मैंने कहा न कि अपराध करने वालों को सजाएं नहीं मिलतीं।" माधव थोड़ा गम्भीर होकर बोला, "किसी से इश्क करना अगर अपराध है तो वह जरूर अपराधी है।"

"क्या मतलब ?" रामानन्द ने उत्सुकता से आंखें फैलायीं।

"नहीं समझे ? बिल्कुल बुद्धू हो यार ! अरे इश्क, मतलब 'लव' ! वह प्रेम करता था।"

"प्रेम और उसकी सजा का क्या सम्बन्ध ?"

"यार, अक्ल के दुश्मन मालूम होते हो !" माधव अपने स्वभाव के अनुसार हथेली बजाकर फिक्क से हंसा।

रामानन्द को उसका सस्ता हास्य बुरा लगा इसलिए इच्छा रखते हुए भी उसने दुबारा कुछ नहीं पूछा।

माधव ने उसकी नाराजगी भांप ली और खुद ही कहने लगा, "एक नामी-गिरामी रईस बैरिस्टर की साहबजादी को ट्यूशन पढ़ाया करता था। वह इसकी कहानियां पढ़कर प्रेम दीवानी हो गई और इससे इश्क करना शुरू कर दिया। इसने उसे बहुतेरा समझाया कि मैं गरीब लेखक हू और तुम एक करोड़पती की बेटी। हमारा-तुम्हारा प्रेम नहीं निभेगा मगर उस पर तो इश्क और जवानी का नशा सवार था। यह भी दिल वाला था। जब मुहब्बत खुद ही हाथ पसारे सामने खड़ी थी, बेचारा कहां तक अपने पर काबू रखता ? इसके दिल में भी प्रेम की ज्वाला धधकने लगी। दोनों इश्क में डूब गए।

"मगर इश्क की आग की आंच जब साहबजादी के बाप तक पहुची तो तूफान उठ खड़ा हुआ। लेखक साहब का पत्ता कट गया और लड़की मार-पीटकर घर की चारदीवारियों में कैद की गई।

"लेकिन सच कहा गया है कि रुकावट प्रेम की ज्वाला को और तेजी से

घबराती है। इधर भी यही हुआ। दोनों विरह में जल रहे थे। अचानक एक दिन रात को वह लड़की घर से भाग खड़ी हुई और लेखक साहब के पास आकर बोली, 'तुम मुझे लेकर कहीं दूर भाग चलो !'

"नहीं, तुम अपने घर लौट जाओ।" लेखक ने समझाया।

"नहीं, मैं नदी में कूद कर आत्महत्या कर लूंगी !"

"बेचारा क्या करता ? लड़की को साथ लेकर दूर चले जाने के प्रोग्राम के साथ स्टेशन गया मगर उधर उन्हें पकड़ने के लिए पुलिस का पहरा लगा था क्योंकि बाप जान ने पुलिस को अपनी लड़की के भागने की सूचना पहले से ही दे दी थी।

"स्टेशन पहुंचते ही लेखक महोदय गिरफ्तार कर लिए गए और लड़की ज़बरन बाप के पास पहुंचा दी गई।

"ये रहा सारा किस्सा !"

"लड़की ने अदालत में कहा क्यों नहीं कि मैं लेखक से प्रेम करती हूं। मैं उसके साथ विवाह करूंगी !"

"नाम न लो, औरत की जात बड़ी बेवफा, हरजाई होती है भैया।" माधव घृणा से मुंह सिकोड़ कर बोला, "ससुरी अदालत में साफ मुकर गई। बाप के सिखाए-पढ़ाए में साफ कह दिया कि वह मुझे भगाए लिए जा रहा था। बस बेचारे लेखक को नाबालिग लड़की भगाने के जुर्म में दो साल की सज़ा हो गई।"

"ओफ्फ ! अजीब है दुनिया।" गहरी सांस के साथ रामानन्द ने अत्यधिक सहानुभूति से लेखक की ओर देखा जो अब भी लिखने में तल्लीन था !

"यहां पर भी शायद कोई किताब लिख रहे हैं ?"

"उसे किसी से कुछ मतलब नहीं, बस दिन-रात लिखता रहता है !"

"अरे बाप रे, अब नहीं सहा जाता।" सहसा वह कैदी अपने बिस्तर पर तड़फड़ाता हुआ ज़ोर से चीख पड़ा जो अभी कुछ देर पहले पेट से घुटने टिकाए धीरे-धीरे कराह रहा था।

"आओ, देखो तो सही, उसके पेट का दर्द बढ़ गया है।" माधव रामानन्द को साथ लेकर झपटता हुआ बीमार कैदी के समीप आया। अब तक बैरक के अन्य कैदी भी उसके समीप आ चुके थे और उसे सान्त्वना दे रहे थे।

वह बिल्कुल निर्दोष ही सज़ा भुगत रहा था। होम करते हुए उसके हाथ जले थे। मुहल्ले में दो दलों में मार-पीट हो रही थी। उससे नहीं देखा गया तो वह बीचबचाव करने पहुंच गया। उसी बीच एक दल के एक आदमी की हत्या हो गई। हत्यारे तो भाग निकले, हत्या का दोष आया उसके सिर।

पुलिस ने गिरफ्तार किया। झूठा जुर्म इकबाल कराने के लिए उसकी खूब मरम्मत की! उसे भीतरी चोट पहुंचाने के लिए उसके पेट पर खूब घूंसे मारे गए। उन आघातों का परिणाम यह हुआ कि पेट के अन्दर की कोई नस उखड़ गई। तब से बराबर उसके पेट में दर्द बना रहता है।

हत्या के अपराध में लम्बी सज़ा मिली, वह आंसू पीकर भुगत रहा है।

मारे दर्द के बुरी तरह चिल्लाते-चिल्लाते वह बेहोश हो गया। सिवा उसे अस्पताल पहुंचाने के और कोई रास्ता न रहा।

शीघ्र ही अपराधियों का यह विचित्र ससार रामानन्द को प्रिय लगा। उसे यह दुनिया बाहर की दुरंगी दुनिया से बेहतर मालूम होने लगी थी जो ऊपर से कुछ और भीतर से कुछ और दिखती थी।

उसने जांच-परख कर देखा और पाया कि इस संसार में वह अकेला ही ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ज़बरन अपराधी बनाकर सज़ा भुगतने के लिए मजबूर किया गया है बल्कि बहुत सारे ऐसे निरीह, निर्दोष और भोले-भाले इंसान जीते-जी यह नरक भोग रहे हैं। इस अनुभव और अनुभूति से उसकी ग्लानि और क्षोभ को कुछ शांति-सान्त्वना मिली।

वह अपने-आपसे कह पड़ा, "मनुष्य कैसे भी कुल में जन्म ले, कैसी भी परिस्थितियों में पले और कैसे भी उच्च संस्कारों-विचारों से ओत-प्रोत हो परन्तु भाग्य और कुचक्रों की विडम्बनायें उसे कल्पना से परे की स्थिति

में ला पटकती हैं।

अपने इस जीवन-स्वरूप की क्या मुझे कल्पना भी हुई थी ? अपने-आप पर ठहाका मार कर हसने को मन करता है—उस अहम, आदर्श और सिद्धान्तवादिता की सुगन्धि और सात्विकता कहां गई जिसने कभी मुझे संन्यास, वैराग्य और श्रेष्ठ जीवन-विधा की ओर प्रावपित किया था; जिसकी छाया में मैं अपने को श्रेष्ठ मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठापित करने का गौरव धारण कर रहा था।

क्या अब कोई विश्वास करेगा कि यह वही रामानन्द है जो अलौकिक भावनाओं में ओत-प्रोत बड़ी स्वच्छन्दता, पवित्रता के साथ स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करता था ?

मेरा मन स्वयं कहता है कि वह रामानन्द मर गया! यह उस रामानन्द की एक जीवित लाश है जो अपना अधूरा-जीवन पथ पूरा कर रही है। कौन सोच सकता है कि रामानन्द अब नाली में फंसे हुए उस कीड़े की भांति बिलबिला रहा है जो कभी देवालय की प्रतिमा पर चढ़े हुए पुष्पों की सुगन्धि मे विहार किया करता था!

रामानन्द सोच रहा था—उसके भूत और वर्तमान मे कितनी गहरी विभिन्नता आ गई है। कल और आज के रामानन्द में आकाश-पाताल का अन्तर है और उत्तरोत्तर यह अन्तर··· !

"किस चिन्ता में डूब गए भाई ?" सहसा माधव ने कन्धे पर हाथ रखकर झकझोर दिया और उसकी ध्यानावस्था भंग हुई।

"यूं ही, कोई खास बात नहीं।" रामानन्द के होठों पर निष्फल मुस्कान फैल गई।

"जो हुआ। सो हुआ अब सोचना-समझना छोड़ो।" माधव बड़े स्नेह-सहानुभूति के साथ कहने लगा, जितना सोचोगे, दुःख उतना ही बढ़ेगा! यह सब भाग्य का खेल है। देखते चलो।"

"वह तो देख ही रहा हूं।" रामानन्द फुसफुसाकर रह गया।

"फिर आगे क्या विचार है ?"

"मैं तो दिशा-हीन पथिक हूं।"

"फिर वही फिलासफी की बातें?" माधव ने मुंह बिगाड़ा।

"तो फिर मेरे सामने क्या रास्ता है?" रामानन्द के स्वर में विवशता थी।

यद्यपि रामानन्द और माधव के स्वभाव में बिलकुल समानता न थी परन्तु परिचय के थोड़े ही समय में वे प्रगाढ़ मित्र बन गए। परिस्थितियों ने रामानन्द को अप्रत्याशित रूप में भले ही पथ और उद्देश्यविमुख कर दिया था परन्तु उसका हृदय और विचारपक्ष अब भी पूर्व जैसा ही विशुद्ध मानवतावादी था।

माधव उसके विपरीत सर्वथा साधारण और सस्ते विचारों का व्यक्ति था। वैसे वह पढ़ा-लिखा आठवीं कक्षा तक ही था परन्तु होटल की बेयरागीरी में अनेक प्रकार के लोगों का सामना पड़ता था जिसने उसे काफी कुशल और व्यावहारिक बना दिया था।

रामानन्द से मेल-जोल बढ़ाने में उसका चाहे जो भी स्वार्थ निहित रहा हो परन्तु स्वयं रामानन्द ने जेल-जीवन की नीरसता और घुटन को बहलाने के लिये ही उसका सामीप्य पसन्द किया।

माधव रामानन्द के मन बहलाव और मनोरंजन का साधन है और रामानन्द माधव की किसी स्वार्थलिप्सा का साधन! वैसे तो बैरक का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे के सुख-दुःख और आनन्द-मनोरंजन का साथी है परन्तु रामानन्द और माधव का साथ, चोलीदामन का साथ हो रहा है अन्यथा इस छोटे-से परन्तु अत्यन्त विकृत, विद्रूप और भयानक अपराधी संसार में केवल एकाकी बनकर रहने की कल्पना-मात्र अत्यन्त भयावह है। रामानन्द जैसे भावुक और विच्छिन्न व्यक्ति के लिए तो मृत्यु के समान कड़वी।

कारागार जीवन के निकट और सूक्ष्म अध्ययन का रंगमंच है जिसे हम घृणित और उपेक्षित मानकर दूर ही से देखते हैं परन्तु इस उपेक्षित रंग-मंच के चरित्रों में कितनी कुरूपता, स्वरूपता, मार्मिकता और करुणा

है ! रामानन्द ने थोड़े ही समय में इन चरित्रों को निकट से देखा परखा, और समझा है। अन्य सहवासियों की भांति बैरक में पड़े-पड़े जुआ खेलने, चरस-गांजा पीने या भद्दे मजाक उड़ाने की अपेक्षा उसका समय अपराध, अपराधी-मनोवृत्ति और अपराधियों को पढ़ने में व्यतीत हो रहा है। नित्य ही वह किसी न किसी बैरक में जाता है। बड़े स्नेह-सहानुभूति के साथ विभिन्न अपराधियों से मिलता है और उनके जीवन की होनी-अनहोनी घटनाओं से एकाकार होकर ज्वलन्त समस्याओं के अटूट जाल में मकड़ी की तरह गुंथता चला जाता है।

माधव उसकी इस अपराध और अपराधी-अध्ययन पद्धति को उसकी भावुकता और पागलपन कहता है, परन्तु रामानन्द उसके व्यंग्य और ठहाके पर सरलता से मुस्कराकर नित नयी भावधारा में बहता चला जाता है।

रामानन्द के मनोरंजन और मनबहलाव में भले ही माधव उसका साथी है, साझीदार है, मगर उसकी विचारधारा और भावभूमि में उसका कोई दखल-बहल नहीं।

माधव सोच रहा था, रामानन्द जैसा रूपवान, भावुक और यथेष्ट पढ़ा-लिखा नवयुवक यदि उसके व्यापार में शामिल हो जाय तो उसकी आय दिन दूनी, रात चौगुनी हो सकती है। उसकी कार्य-कुशलता, प्रवीणता और रामानन्द का रूप तथा माधुर्य सोने में सुहागे की भांति प्रतिफलित होगा। इसीलिए रामानन्द को प्रभावित, आकर्षित करने का कोई भी उपाय उसने शेष नहीं छोड़ा है। कारागार से मुक्ति पाते ही वह रामानन्द को अपनी (स्वार्थ-लाभ) की कारा में बन्दी बना लेगा।

और समय अविराम गति से भागता चला जाता है। जेल-जीवन का अभ्यस्त हो जाने से रामानन्द को अपनी यह दुनिया प्यारी-सी लगने लगी है। प्रथम बार यहां आने पर उसे जितनी ग्लानि और आघात-सा हुआ था अब अभी सोचकर वह व्याकुल हो उठता है कि एक दिन उसकी भी सजा पूर्ण हो जाएगी और तब वह पुनः लावारिस की भांति निरुद्देश्य और निराश्रित भटकने लगेगा। फिर वह कहां जाएगा, क्या करेगा ? अब कोई

भी दिशा और मंज़िल उसके लिए शेष नहीं। संसार-क्षेत्र उसके लिए सर्वथा अन्धकारपूर्ण हो चुका है।

अपने अनिश्चित भविष्य की कल्पना करते ही उसका सिर फटने लगता है, धरती पैरों तले घूमती-नाचती मालूम होती है।

सहसा बैरक में कुछ हलचल हुई तो उसकी ध्यानावस्था भंग हुई। अब तक वह अपने बिस्तर पर पड़ा-पड़ा ऊँघ रहा था।

उसने देखा, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट को घेरे हुए पचासों कैदी खड़े थे और किसी बात पर गरमा-गरम बहस चल रही थी।

उसने माधव को तेज़ आवाज़ में कहते सुना, "आप ही बताइए साहब, यह सारे कैदियों के प्रति अन्याय नहीं है तो और क्या है ? हमारी ज़िन्दगी और हमारे पेट के साथ सरासर बेईमानी है। आप ही फैसला कीजिए।"

मामला रामानन्द की कुछ समझ में न आया। भीड़ के निकट आकर वह समझने का प्रयास करने लगा।

"बिल्कुल सा'ब, हमारे साथ इंसाफ होना चाहिए।" कुछ और कैदियों ने भी माधव की हां में हां मिलाई।

"क्यों हरपाल, क्या ये सब झूठ बोल रहे हैं ?" सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उस व्यक्ति को डपटकर पूछा जो उसके सामने ही खड़ा ढिठाई से अन्य कैदियों को घूर रहा था।

"गुस्ताखी माफ हो सा'ब, आप आज खुद टेस्ट करके देखें।" माधव निस्संकोच भाव से बोला, "सरकारी भण्डारे से तो फी खुराक का अनाज और तेल वगैरह तौलकर मिलता है मगर उसमें से काट-कपट इन मंजे हुए बावर्चियों (भण्डारियों) द्वारा होता है। आटे में रोज़ मिट्टी मिलाई जाती है और तौल बढ़ाने के लिए रोटी कच्ची सेंकी जाती है और तरकारी तेल के नाम पर सूखे पानी में उबाली जाती है और काट कपटकर अच्छे आटे की खूब सिकी हुई रोटियां और तेल मिर्चों में पकी हुई सब्ज़ी अन्य पैसे वाले कैदियों के हाथों बेचकर रोज़ सिगरेट-बीड़ी, गांजा और चरस मंगाया जाता है।"

"बिल्कुल झूठ, हुजूर।" भण्डारी कैदी, जो गाय की चोरी करके उसके सींग तोड़कर और तेज़ाब से उसका रंग बदलकर बेचने में अभ्यस्त था और चोरी में छः माह की सजा भुगत रहा था और जेल अधिकारियों की सहानुभूति और विश्वास प्राप्त कर हेड भण्डारी बन बैठा था; अब रोबीले स्वर में बोला, "सा'ब, लोग मुझसे जलते हैं क्योंकि मैं इन्हें सरकारी हुक्म के बाहर मनमानी खुराक नहीं देता। हुजूर खुद जांच-मुआयना करके देख लें। अगर मेरी कोई गलती निकले तो चाहे जो सजा दें।"

"ठीक है, ठीक है। हम खुद कल जांच करेंगे।" सुपरिन्टेन्डेन्ट ने असंतुष्ट कैदियों को आश्वासन दिया और हेड भण्डारी को छोड़कर बाहर आफिस की ओर चले गए।

मगर माधव क्रोधित मुद्रा में उसे इंगित कर बोला, "देखता हूं अफ-सरों की सिरचढ़ी तुम्हें कब तक बचाती है? कभी न कभी तो तुम्हारी कलई खुलेगी ही।"

उसका दोषारोपण सत्य था। हरपाल को पुराना विश्वस्त कैदी समझ-कर कैदियों की रसोई का काम सौंपा गया था। कारण कि वह चोरी में जब-जब आता हमेशा उसे भण्डारी ही का कार्य सौंपा जाता। जिससे जेल कर्मचारियों का भी भला होता। और वह मनों आटे में दो-चार सेर मिट्टी मिला देता और कच्ची रोटी सेंककर तौल भी पूरी कर देता और सब्ज़ी में गले तक भरे तमेड़े में तेल के नाम पर सेर दो सेर की जगह पाव-आध सेर का ही प्रयोग करता था और शेष बचाकर अपनी और अपनी मित्रमण्डली की ज़रूरत पूरी करता था। यद्यपि कुछ गिने-चुने कैदियों को छोड़कर शेष सभी ऐसे जीवघातक कार्य से असंतुष्ट थे परन्तु आज प्रथम बार माधव ने यह विद्रोह उठाया। यदि उस 'दस' ने बचन के 'मार' से उसे भी हिस्सा दिया होता तो सम्भवतः वह खामोश रहता, परन्तु उस जैसे निपुण बावर्ची को धोखा देकर वह अपना उल्लू सीधा कर रहा था! भला यह ज्यादती उसे क्योंकर सहन होती?

रामानन्द सब कुछ समझ गया और उसने माधव के विद्रोह और दुस्साहस

को प्रोत्साहित किया।

"तुम अच्छी नेतागीरी भी कर लेते हो।" माधव के कन्धे पर धौल जमाकर उसने मुस्कराते हुए कहा, "सच, हमें दो कौड़ी का खाना मिलता है! रोटी का स्वाद मिट्टी-सा लगता है। एक तो कच्ची और दूसरे मुंह में डालते ही किरकिराने लगती है और सब्जी यूं मालूम होती है मानो किसी रोगी का पथ्य हो। सिर्फ उबला हुआ ऐसा लगता है जैसे मानो हम सड़ा हुआ साग खा रहे हों। तुमने पूरे जेल-यात्रियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है अन्यथा ऐसा सड़ा-गला खाना खाते हम सब क्षय और भयंकर रोगों के शिकार हो जाएंगे।"

"सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे छोड़कर अच्छा नहीं किया। लगता है उस बचत में से कुछ न कुछ उसकी भी जेब में जाता है।" माधव रोष में बोला, "कभी तो मेरे हथकण्डे पड़ेगा, तब देखना।"

"जहां अपराधी दंडित किए जाते हैं, वहां अपराध के लिए ऐसी छूट है।" रामानन्द विक्षुब्ध होकर बोला, "माधव, यह कैसी सजा है? कैसा दण्ड जो अपराधी मनोवृत्ति को रंचमात्र भी प्रभावित नहीं कर पाता।"

"तुम तो हर बात में फिलासफी छांटने लगते हो भाई!" माधव एक सिगरेट सुलगाकर बोला, "मैं कई बार सजा काट चुका हूं और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जेल-यात्रा एक वैसी ही आरामतलबी है जो आदमी मेहनत के बाद पाना चाहता है।"

"क्या मतलब?" रामानन्द ने अचरज से मुंह सिकोड़कर पूछा।

"मतलब साफ है।" माधव खिसियाकर बोला, "चोरी, डाकाजनी, चार सौ बीसी, या जालबट्टा में मामूली मेहनत और दिमाग नहीं लगता और उस मेहनत और माथापच्ची को जेल यात्रा में कुछ दिनों के लिए आराम मिल जाता है और मुलजिम इस खाली वक्त में कोई नया हथकण्डा सीख या सोच लेता है। सजा आदमी के खराब इरादों को मजबूत होने का मौका देती है।"

"क्या कहा?" रामानन्द खिझला उठा, "इसके माने जेल व्यर्थ है?

। मंगलवार को पंडितजी की बारी पड़ेगी और इतवार को पादरी हव की ।"

"यह तो नई बात सुन रहा हूं । आओ ज़रा, हम भी सुनें क्या कहते हैं लवी साहब ?" रामानन्द ने उत्सुकता दिखाई ।

"फिर वही पागलपन ।" माधव झुंझलाया—"उनकी मज़हबी शिक्षा से तुम्हारा क्या सरोकार ? पंडितजी आएंगे तो सुनना ! उपदेशों की झड़ी लगा देते हैं ।"

"धर्म-उपदेश में मेरा कोई विश्वास नहीं रहा ।"

"फिर वहां चलना सरासर बेवकूफी है ।" माधव ने दूसरी ओर मुड़ते हुए कहा ।

"मुझे कोई सबक और उपदेश नहीं लेना है । मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि धर्म और मज़हब के ये पण्डे दरअसल खुद कितना धर्म और मज़हब की बातें समझते-जानते हैं ? उनकी सीखों और शिक्षाओं का अपराधियों पर क्या प्रभाव होता है ?" रामानन्द ने व्यंग्यात्मक मुस्कराहट के साथ कहा ।

"चलो बाबा, तुम एक ही झक्की हो ।" माधव ने उसकी बात पर कहकहा लगाया और उसके साथ-साथ बारादरी की ओर बढ़ गया ।

अच्छी-खासी सभा लगी थी । जेल के प्रायः सभी मुसलमान कैदी वहां उपस्थित थे ।

सामने की एक कुर्सी पर श्वेत चोंगे से अलंकृत एक वृद्ध मौलवी साहब बैठे दीख पड़ रहे थे ।

उनकी बुज़ुर्गियत, सन जैसी उजली दाढ़ी और गंभीर मुख-मुद्रा इस बात का आभास दे रही थी कि वे अवश्य ही महान और प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं ।

रामानन्द माधव के साथ मौलवी साहब की कुर्सी के समीप ही आ डटे ।

मौलवी साहब बड़े सुरीले कण्ठ से कुरान की आयतें पढ़-पढ़कर लो को उसके अन्तरनिहित भाव समझा रहे थे ।

रामानन्द चुपचाप खड़ा-खड़ा सुनता रहा। इस्लाम, बाइबिल और गीता पर आधारित एक समन्वित प्रश्नचिह्न उसके मस्तिष्क में मँडरा रहा था।

मौलवी साहब जब अपना पठन-पाठन समाप्त कर चुके तो उसने सादर सिर झुकाकर कहा, "मैं भी आपको थोड़ी-सी तकलीफ देना चाहूँगा।"

"फरमाइए।" अपनी लम्बी-उजली दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए मौलवी साहब मुस्कराए।

"मैं जानना चाहता हूं कि कुरान, बाइबिल और गीता के सिद्धान्तों में कहां-कहां मिलान है और कहां-कहां फर्क ? तीनों का आखिरी मकसद क्या है ?"

मौलवी साहब के पैरों के तले जैसे आग की चिनगारी पड़ गई हो ! उन्होंने चौंककर उस नौजवान की ओर देखा जिसने उनकी अक्ल और काबलियत को चुनौती दी थी। व्यक्तित्व से वे भले साक्षात हजरत मुहम्मद साहब से अवतार मालूम होते थे मगर ज्ञान-विद्वत्ता में वह कुछ न थे।

दरअसल वे 'कामचलाऊ' और पैसा कमाऊ' तक की विद्वता रखते थे मगर आज उनका पाला बीहड़ नौजवान से पड़ गया।

"देखो भाई, ये मजहब की बारीक बातें हैं, इन पर चलते-फिरते बात नहीं हो सकती। वैसे मैं तुम्हारी सूझ की दाद देता हूँ।" इतना कहकर उन्होंने रामानन्द को टालना चाहा।

मगर रामानन्द यूं टलने वाला नहीं था—क्षण-भर में उसने मौलवी साहब के ज्ञान की थाह पा ली और मुस्कराते हुए बोला, 'वैसे अपने सवालों का जवाब खुद मुझे मालूम है। सिर्फ उसे और पक्का करने के लिए मैंने आप-से पूछा था। कहिए तो मैं बता दूं ! हो सकता है फिर कभी कोई मुझ-सा बीहड़ आदमी आप से यही सवाल पूछ बैठे ?"

"शुक्रिया, शुक्रिया।" मौलवी साहब झेंपे-से बोले, "अगली जुमेरात को तुमसे बहस करूंगा। अभी मेरे पास कई प्रोग्राम है।"

"देखा !" रामानन्द माधव को इंगित कर बोला—'आओ चलें।

मैंने तुमसे क्या कहा था ? ज्ञान-विद्वत्ता के नाम पर जनता और सरकार की आंखों में धूल झोंकने वाले ये पंडित-पैगम्बर धर्म की छोटी-मोटी जानकारी नहीं रखते। इसीलिए मैं धर्म को धोखे की टट्टी कहता हूं।"

"गज़ब का दिमाग पाया है तुमने।" माधव ने आंखें फाड़कर कहा और दोनों गप्पें लड़ाते हुए आगे बढ़े।

रसोईघर के पास भारी मजमा देखकर सहसा ही वे ठिठक गए।

"क्या हुआ ?" एक कैदी से आगे बढ़कर पूछा।

"तुम्हारा ही किया-धरा है सब कुछ।" मन्द-मन्द मुस्कराते हुए वह कैदी कहने लगा, "तुम्हीं ने तो रसोई इंचार्ज की रिपोर्ट की थी न कि वह खाने में गफलत करता है सो बड़े साहब मुआयने पर आए हैं।"

"ओह, तो यह मामला है।" माधव हथेली पीटकर बोला, "आओ, ज़रा देखें तो।"

दोनों झपटते हुए उस ओर आए। जेलर साहब, कुछ अन्य जेल अधिकारी और पचासों की संख्या में कैदी रसोईघर घेरे खड़े थे। कैदियों का भोजन बनाने के निमित्त जो खाद्य सरकारी भण्डारे से दिया गया था उसकी जांच-परख हो रही थी।

आटे की जांच की गई, मगर उसमें किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं पाई गई। शायद मुआइने की खबर रसोइये को पहले से ही मिल गई थी।

"साहब, मुझे झूठा फँसाने का जाल रचा गया है।" रसोइया कहने लगा, "हुजूर, आप खुद ही देख रहे हैं। वह (माधव) कहता है कि मैं पानी में साग उबालता हूँ। भला कहीं पानी से सब्ज़ी तैयार होगी सरकार ? मुझे भण्डारे से तेल की जो भरी-भराई पतीली मिलती है पूरी की पूरी पतीली तमेड़े में उलट देता हूँ। हां, जो ज़्यादा चटपट खाने वाले हैं, हो सकता है उन्हें स्वाद न मिलता हो। फिर हुजूर, यह जेल खाना तो है ही। सरकार, घर का सा स्वाद, भला कैसे मिल सकता है।"

और इतना कहने के साथ ही उसने चूल्हे पर चढ़े तमेड़े में साहब के सम्मुख तेल की पतीली पूरी की पूरी उलट दी और अधिकारियों को जांच

करके दिखाया !

"कहां गया वह माधव का बच्चा ?" जेलर साहब आगबबूला होकर बोले, "खामख्वाह के लिए कैदियों में विद्रोह पैदा करता है और हमें परेशान करता है।"

"मैं यहीं मौजूद हूं सरकार।" माधव सामने आकर बोला, "साहब, इन्हें मारके मुआयने का पता लग गया होगा। नहीं तो··· ?"

"बकवास बन्द करो।" जेलर साहब आंखें फाड़कर बोले, "तुम बहुत बदमाश मालूम होते हो, मुझे तुम्हारा दिमाग ठीक करना पड़ेगा।"

"अरे साब, आपने इसकी चार्जशीट नहीं देखी ? शातिर बदमाशों में से है।" एक अन्य जेल अधिकारी ने पुष्टि की।

"हिम्मत तो देखो।" जेलर साहब फिर भड़क पड़े, "यह कैदियों में विद्रोह फैलाने की कोशिश कर रहा है। मैं इसका मकसद समझ रहा हूं।"

अपनी शिकायत का विपरीत परिणाम देखकर माधव अवाक् था। गजानन्द चकित और अन्य जेल वासी मौन।

"सरकार, तुम्हारी [illegible] हो, अभी मौका दें तो मैं खुद पकड़कर दिखाऊं।" माधव ने विनीत भाव से कहा।

"कुछ नहीं।" जेलर साहब ने अधीनस्थ अधिकारी को आदेश दिया "झूठा इल्जाम लगाने के जुर्म में इसे दो हफ्ते की तनहाई कैद में डाल दो।"

तनहाई की सजा सुन सभी कैदी आश्चर्यचकित रह गए। [illegible] के कलेजे दहल उठे। मगर किसकी हिम्मत थी जो कोई जेलर का [illegible] करता ?

"जी हुजूर।" अधीनस्थ अधिकारी नायब जेलर [illegible]

माधव का [illegible] था। वह क्षमा पाने की [illegible] में जेलर साहब की ओर देख रहा था।

गजानन्द के मुंह से [illegible] उबाल आया। [illegible] जेलर के प्रति [illegible] महसूस हो रही थी मगर [illegible] कर वह भी मौन रह गया।

जेल अधिकारी माधव को खींचता हुआ तन्हाई कैद की तरफ ले बढ़ा। कैदियों की भीड़ आपस में कानाफूसी करती हुई अपने-अपने बैरकों को लौट रही थी।

रामानन्द यथास्थान मूर्तिवत् खड़ा इस अप्रत्याशित घटना पर विचार कर रहा था और माधव पलट-पलट कर आंसू भरी आंखों से उसे देख लेता था।

जब वह आंखों से ओझल हो गया तो लम्बी सांसों के साथ रामानन्द फुसफुसा उठा, 'अजीब है यह जेल की ज़िन्दगी भी—माधव बेकसूर ही फँस गया। वह सही रास्ते पर है मगर जेलर की बेइंसाफी से कौन मोर्चा ले ?

माधव के बिछड़ने के गम के साथ वह धीरे-धीरे अपनी बैरक की ओर लौट पड़ा। लेकिन वह बार-बार इसी उधेड़-बुन में डूबता-उतराता रहा कि माधव को तन्हाई कैद से मुक्ति कैसे मिलेगी ? और वह खुद को कैसे बहला सकेगा ?

सहसा किसी ने उसकी बांह पकड़कर झकझोर दी और वह आंखें मलते हुए अपने बिस्तर पर उठ बैठा। देखा, तो सामने बैरक का लेखक सहयात्री खड़ा था।

"क्या बात है भाई ?" उसने अचरज से पूछा।

"पंडित जी का प्रवचन उपदेश सुनने नहीं चलोगे ?" साथी ने पूछा।

"पंडित जी का प्रवचन-उपदेश ?"

"हां, आज मंगल है न ? हिन्दू कैदियों के सत्संग का दिन।"

"तुम हो आओ, मुझे प्रवचन-उपदेश में कोई दिलचस्पी नहीं।" उसने मुँह बिगाड़कर कहा।

"दिलचस्पी तो मुझे भी नहीं है।" लेखक व्यंग्यात्मक हँसी के साथ बोला, "मगर पंडितजी ऐसी रसीली कथा सुनाते हैं कि बस मज़ा आ जाता है ?"

"रसीली कथा सुनाते हैं ?"

"हां भाई। उपदेश-प्रवचन तो दस-पांच मिनट का ही होता है। बाकी

दो घण्टे ये तरह-तरह की रसीली कहानियां सुनाते हैं।"

रामानन्द ने विस्तर समेटकर रख दिया और लेखक के साथ सत्संग-मंच की ओर चल पड़ा। जेल के हिन्दू कैदियों का मजमा वहां एकत्रित हो रहा था।

रामानन्द के लिए पंडित जी का उपदेश-प्रवचन रंचमात्र भी प्रभावशाली न रहा।

मौलवी साहब की तरह उनसे भी उसने प्रश्न किया, "मैं धर्म की परिभाषा जानना चाहता हूँ।"

"धर्म की परिभाषा ?" उसकी ओर अचरज से देखते हुए पंडित जी ने पान की पीक थूकते हुए लटपटाती जबान से कहा, "अरे भाई, तुम्हें धर्म की परिभाषा से क्या लेना-देना है ?"

"वाह पंडित जी, वाह !" रामानन्द ठहाका लगाकर बोला, "[illegible] की परिभाषा जानने वाला व्यक्ति ही तो धर्म पर चलेगा। [illegible] और उद्देश्य को समझेगा ?"

पंडित जी की आंखें कपार पर चढ़ गईं। अब तक वे जेल को [illegible] ियों, अपराधियों का भण्डार समझते थे परन्तु आज उन्हें [illegible] कोयले की खान में हीरे की कनी भी होती है।

"इधर कुछ धर्म-चर्चा का प्रसंग नहीं आया, [illegible] देखीं। तुमने छेड़ा है तो अब देखूंगा। जानते हो बेटा [illegible] का गढ़ है। यहां धर्म-चर्चा की फुर्सत किसे [illegible]"

"फिर आपको क्या जरूरत है ?" रामानन्द [illegible]

"पापी पेट चाहे जो करा दे बेटा !" [illegible]

"अच्छी-खासी सरकारी रकम हाथ [illegible] है।"

"समझा !" भारी हुंकार के [illegible] [illegible]हा मा[illegible] लगाकर कहा, "तभी तो मैं कहता हूं कि [illegible]

"धर्म माने धोखा ? रामानन्द [illegible]

"धर्म के नाम पर तुम [illegible]

उपेक्षा से कहा और उलटे पांव लौट पड़ा मानो पंडितजी की आकृति-
त्र उसे धोखे की टट्टी लग रही हो।

वह अपने-आपसे कह पड़ा, 'कैसा अद्भुत है यह संसार? बड़े-बड़े
ानी-विद्वान भूखे मरते हैं और ज्ञान-विद्वत्ता का झूठा जामा ओढ़ने वाले
पे पैसे के धर्माचार्य आज दुनिया को ज्ञान-धर्म के नाम पर उल्लू बनाते
फिरते हैं।"

रामानन्द बैरक के लान में चहल-कदमी कर रहा था। माधव को तन्हाई
से मुक्त कराने की समस्या उसका मस्तिष्क कुरेद रही थी। तभी सहसा
उसकी दृष्टि समीप के अहाते पर पड़ी।

धुंधलके में, चार-पांच आदमी एक कोने में सिमटे हुए धुआं-धक्कड़
करते दीख रहे थे।

अचरज से वह धीरे-धीरे उनके करीब आया। वे सब आशंका से सिहर
गए, समझे कोई अधिकारी गश्त पर निकला है!

वे एक-दूसरे से सिमटे हुए गांजे की चिलम फूंक रहे थे! सज़ा की
हालत में उनकी यह स्वतन्त्रता और साहस रामानन्द को गहरे अचरज में
डाल रहा था।

करीब आकर रामानन्द ने उनमें से एक को पहचान लिया! वह वही
न। रसोइया कैदी था जिसपर माधव ने इल्ज़ाम लगाया था औ
परिणामस्वरूप तन्हाई भुगत रहा था।

इस वक्त रसोइया इस नशेबाज़ गुट का सरदार बना हुआ था औ
शराब के नशे में भी झूम-झूम के बढ़-बढ़कर बातें कर रहा था।

रामानन्द सब कुछ समझ गया। और बड़ी तरकीब से उसके नि
आकर बोला, "मुझे उस माधव के बच्चे पर बड़ा गुस्सा आया था।
जैसे भले आदमी पर नाहक ही उसने इल्ज़ाम लगाया। आज अगर
रसोई से अपना हाथ खींच लो तब लोगों को पता चले। आखिर तुम
क्या दोष था? सरकारी भण्डार से तुम्हें जितना नाप-तौल कर मि
उतने में ही तो पूरा करना पड़ेगा।"

"और तुम किस मामले में आए ?"

"अब तुमसे क्या छिपाऊं उस्ताद !" इतना कहकर वह खींसे काढ़ते हुए फुसफुसाया, 'मैं चार सौ बीस में आया हूं !"

"चार सौ बीस ?"

"हां, हेर-फेर करने में।" ऊधो इस बार खुलकर बोला, "हम चारों-पांचों देशी में डालडा और शराब में क्लोरोफार्म का ऐसिड मिलाने और कभी किसीकी गाय को चुराकर उसके सींग तोड़कर तेजाब से गाय के रंग को बदलकर इधर-उधर बेच लेते थे। उसी में पकड़ा गया।"

"मगर यह तो कोई जुर्म नहीं।" रामानन्द हंसा, "व्यापार क्षेत्र में तो बड़ल्ले से मिलावट का बोलबाला है।"

"पचासों केस थे हम पर।" ऊधो ने भी रंग जमाया।

"अरे बाबू, जेल आफिसरों और हज़ारों कैदियों की आंखों में धूल झोंकना मामूली बात है ?"

"सो कैसे ?" रामानन्द ने टोह ली।

नशा नशा ही है जो सिर पर चढ़कर बोलता है।

ऊधो भला अपनी कला-कुशलता कैसे छिपाता ? तपाक से कह पड़ा, "माधव का इल्जाम सही था मगर कोई मुझे पकड़ न सका। मैं रोज़ आटे न मिट्टी मिलाता हूं, तरकारी बिना तेल के बनाता हूं—होगा कोई ऐसा कारीगरी ?"

"मैं विश्वास नहीं करता।" रामानन्द तह में घुसकर बोला, "तुम झूठी डींग मारते हो। ऐसा कभी हो ही नहीं सकता।"

"आओ दिखाऊं।" ऊधो उसे एक ओर खींचता चला गया।

रामानन्द मन ही मन फूल रहा था। एक ऐसे जटिल नाटक का पर्दा खुलने जा रहा था जिसने जेल अधिकारियों को भी चक्कर में डाल रखा था।

ऊधो नहीं, उसका नशा बोल रहा था, "अपने हेर-फेर से बड़ों-बड़ों को उल्लू बना देना मेरे बाएं हाथ का खेल है।"

वह रामानन्द को एक कोठरी में ले गया जो रसोई से सम्बन्धित थी और वहां रामानन्द को अपनी हाथसफाई के कई करतब दिखाए।

रामानन्द आंखें फाड़े आश्चर्य से सब कुछ देखता रहा। उसके कौतूहल का अन्त न था।

ऊधो मंजा हुआ खिलाड़ी था। रामानन्द से परिचय बढ़ाने और उसे अपने कौशल दिखाने के पीछे उसका अपना कुछ निजी स्वार्थ भी था। वह रामानन्द को शातिर बदमाश और हत्यारा समझ बैठा था अतः उसे अपने निकट खींचने का प्रयास कर रहा था ताकि भविष्य में मुक्ति पाने पर उसे अपने दल में सम्मिलित कर ले।

परन्तु रामानन्द को तो अपना मतलब पूरा करना था। रहस्यों का पर्दा खुलने तक ही उसे ऊधो से घनिष्ठता रखनी थी।

"इतना ही नहीं, मैं और बहुत सारे कमाल जानता हूं।" रामानन्द का हाथ दबाकर ऊधो खीसें काढ़ कहने लगा, "सजा खत्म होने के बाद तुम्हारा क्या प्रोग्राम है ? मैं तो चाहता हूं कि मेरे दल में शामिल हो जाओ। बिना किसी मेहनत-मशक्कत के मजा मारोगे।"

"बिलकुल, तुम्हारा धन्धा जोरदार है।" रामानन्द ने अपनत्व के साथ कहा, " मुझे तुम्हारे काम में शामिल होकर बड़ी खुशी होगी।"

ऊधो ने विश्वस्त मित्र के रूप में उसे अपने कौशल की अनेक घटनाएं सुना डालीं। रामानन्द उससे सारे रहस्य लेकर लौटा।

अपनी बैरक में प्रवेश करते हुए रामानन्द की दृष्टि एक विशेष व्यक्ति पर पड़ी और वह उधर आकर्षित होकर रह गया।

वह व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक वेष-भूषा का सुशिक्षित और सुयोग्य व्यक्तित्व वाला था।

मजिस्ट्रेट जेलर साहब उससे किसी विषय पर तर्क कर रहे थे, बैरक के समीप ही द्वार पर वे लोग खड़े थे।

बैरक में आने पर पता चला कि वे पादरी साहब हैं। प्रत्येक रविवार

को ईसाई कैदियों को धर्म-शिक्षा देने आते हैं। मौलवी साहब और पंडित जी की अपेक्षा पादरी साहब कहीं अधिक विद्वान और प्रखर दीखते थे।

रामानन्द को इधर कुछ दिनों से ईसामसीह के जीवन-सिद्धान्तों के प्रति आकर्षण हो रहा था। बाइबिल का काफी कुछ अध्ययन उसने विद्यार्थी जीवन में ही किया था।

पादरी के व्यक्तित्व ने उसे प्रभावित किया। असिस्टेण्ट जेलर जो स्वयं भी ईसाई था, जब पादरी साहब से बातें करके विदा हो गया तो पादरी साहब दूसरी बैरक की ओर जाने लगे।

"गुड मानिंग सर।" उसने पादरी साहब के समक्ष आकर आदर से कहा, "विल यू टेल मी वन थिंग ? (क्या आप मुझे एक बात बताने का कष्ट करेंगे ?)"

"व्हाई नॉट ? (क्यों नहीं)" मुस्कराते हुए पादरी साहब ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा।

"ईसामसीह की प्रमुख जन शिक्षाओं की कोई पुस्तक मुझे मिल सकती है ? मैं एक सजा याफ्ता कैदी हूँ। समय नहीं गुज़रता। सोचता हूं कुछ अध्ययन ही कर डालूं।"

पादरी साहब चकित हुए, वह नवयुवक जो उनके समक्ष खड़ा विद्वत्ता-पूर्ण बातें कर रहा था उसके कैदी होने का उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था।

"तुम बहुत टेलेण्टेड (प्रतिभावान) नवयुवक मालूम होते हो—तुम्हें किस केस में सज़ा हो गई ?"

"वह एक बेकार की घटना है। छोड़िए उसे। हो सके तो मुझे जेल-लायब्रेरी से कोई पुस्तक दिलवा दीजिए।"

"क्या तुमने बाइबिल के बारे में कुछ पढ़ा है ?"

"मैं बाइबिल का अध्ययन कर चुका हूं।" रामानन्द ने सगर्व कहा, "उसके सम्बन्ध में आप मुझसे कुछ भी पूछ सकते हैं।"

"शाबाश ! आइ एम वैरी मच प्लीज्ड (मैं बहुत प्रभावित हूँ)। मैं तुम्हें कुछ पुस्तकें दूंगा।"

"धन्यवाद। आप से कब और यहां मुलाकात हो सकेगी?"

"मैं तो हर सण्डे को आता हूँ, ईसाई कैदियों को उपदेश देने के लिए।"

"तब ठीक है, मैं अवश्य ही आपसे सम्पर्क स्थापित करूंगा। मुझे रिली-जस् डिस्कशन में बड़ा आनन्द आता है।"

"ओह गुड।" उसका कन्धा थपथपाकर पादरी साहब ने प्रशंसा की और दूसरी ओर चले गए।

निस्सन्देह रामानन्द की प्रतिभा, ज्ञान-पिपासा और आचार पर वे प्रभावित थे। जेल के ईसाई कैदी उनके व्याख्यान में रुचि न लेते थे क्योंकि अपराधी मनोवृत्ति के कारण उनका मन और मस्तिष्क इधर-उधर की बातों में लगा रहता था। मगर रामानन्द ने ईसाई न होते हुए भी गहरी अभिरुचि दिखाई थी जो उसकी प्रतिभा का संकेत था।

वे अपने आपसे कह पड़े, 'और चाहे जो कुछ भी हो, यह नौजवान अपराधी नहीं हो सकता। अवश्य ही यह जबरन अपराध में फंसाया गया है। मगर ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति के विचार और भावनाओं का प्रयोग अच्छे कार्यों में हो तो बेशक यह बहुत काम का साबित हो सकता है।'

और रामानन्द का मस्तिष्क और मन ईसामसीह और बाइबिल की शिक्षाओं में उलझ रहा था।

विद्यार्थी जीवन में ही उसे ईसामसीह की शिक्षाओं में लगाव हुआ था। अक्सर वह घूमते-घूमते गिरजाघर की ओर चला जाता था और वहां उपदेश सुना करता था।

बाइबिल का हिन्दी अनुवाद उसने पढ़ डाला था और उसकी ज्ञान-पिपासा काफी मात्रा में शान्त हो चुकी थी मगर आज पादरी ने अपने आकर्षक व्यक्तित्व से पुनः उसे अपने धर्म की ओर आकर्षित किया।

बाइबिल की शिक्षाओं पर तर्क करता हुआ वह कब सो गया—आजे

के नशे की झुरझुरी में उसे याद भी न रहा। परन्तु जब उसकी आखें खुलीं तो वह सब कुछ विस्मृत हो चुका था और वह ऊधो का पर्दा फाश करने की गर्ज़ से जेल अधिकारियों के आफिस की ओर बढ़ा जा रहा था।

"साहब, आप चुपके से आइए मेरे साथ।" उसने जेलर साहब से फुस-फुसाकर कहा, "मुझे सारा रहस्य ज्ञात हो चुका है। रसोई का वक्त हो रहा है। इस वक्त छापा मारकर आप उसे रंगे हाथों पकड़ सकेंगे।"

"और जो इस बार भी इल्ज़ाम झूठा साबित हुआ तो? जेलर साहब सख्त आवाज़ में बोले।

"आप मुझे चाहे जो सज़ा दीजिएगा।"

"ठीक है, आओ मेरे साथ।" जेलर साहब दो अन्य अधिकारियों के साथ रामानन्द को लेकर रसोई की ओर चल पड़े।

ऊधो सिर से पैर तक कांप उठा।

क्षण-भर को उसे रात की बातें याद आईं। नशे की झूम में उसने जो गलती कर डाली थी, अब उससे मुक्ति पाने का कोई मार्ग न था।

रामानन्द ने सब्ज़ी से भरी हुई बाल्टी में नीचे दबे हुए भगौने को उघाड़-कर ऊपर खींच लिया। फिर उससे तेल व मिर्चें अलग कर दिखाईं।

उसने कहा, "देखिए कमाल, जेलर साहब।"

"इस तरह सब्ज़ी का सारा तेल जो आप लोगों के सामने सब्ज़ी में धार बनाकर छोड़ा जाता है, आप लोगों के हटते ही गड़े हुए भगौने को निकालकर तेल अलग बचा लिया जाता है।" रामानन्द ने रहस्य स्पष्ट किया।

ऊधो तो इस जांच से अनभिज्ञ था।

उसने आज आटे में मिट्टी भी मिला रखी थी और रोटी भी कच्ची सेंकी गई थीं। जब जेलर साहब ने रोटियों की जांच की तो उसमें मिलावट मिली।

वह रंगे हाथों पकड़ा गया। उसने रामानन्द के सामने अपने कौशल की जो डींग मारी थी, वह क्षण-भर में उसका सत्यानाश कर बैठी।

मन ही मन वह अपनी भूल पर पछता रहा था और रामानन्द को गालियां दे रहा था।

जेलर साहब ने ज्यों की त्यों माह की सख्त तन्हाई कैद की सजा सुनाई और माधव को तुरन्त तनहाई कैद से रिहा कर दिया।

एकाएक अपनी तन्हाई कैद से मुक्त होने पर माधव आश्चर्यचकित रह गया।

रामानन्द ने मुस्कराते हुए कहा,' 'तुमने सिर्फ उसका इल्जाम लगाया था, मगर मैंने उसे रंगे हाथों पकड़ा दिया।"

"सो कैसे ?" विस्मय से माधव ने पूछा।

रामानन्द ने उसे सारी कथा कह सुनाई और अन्त में स्नेह से उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला, 'तुम्हारे बिना मेरा मन न लगता था, अन्त में सोचा, किसी तिकड़म से तुम्हें छुड़ाऊं और मैं कामयाब हुआ।"

'वैसे भी मेरी सजा दो ही तीन दिन में पूरी होने को है। शायद तुम्हारा वक्त भी करीब हो ? छूटने के बाद क्या विचार है ?"

"तुम मुझसे एक सवाल पहले ही तो कर चुके। अब तुम्हारे छूटने के बाद एक हफ्ता के भीतर मुझे भी परवाना मिल जाएगा।'

"मेरे साथ चलोगे न ?" माधव ने बड़े आत्मीय भाव से पूछा।

"इस बात का मैं अभी कुछ फैसला नहीं कर सकता हूं।"

"क्यों ?" माधव ने अकुलाकर पूछा।

"सोच नहीं पा रहा हूं कि यहां से छूटकर किस तरफ जाऊं ? घर में मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहा। मेरे लिए जीवन भार बनकर रह गया है !"

"नासमझों की बातें करते हो।" माधव ने बड़े अपनत्व के साथ कहा, "तुम्हें अपने बारे में कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं। तुम मेरे साथ चलोगे, मैं तुम्हारे काम-धन्धे का जुगाड़ लगा दूंगा।"

'देखा जाएगा।" रामानन्द अवसन्न दशा में बोला, "दरअसल मैं ईसाई बनने की बात सोच रहा हूं, पादरी साहब से मेरी भेंट

उनका शिष्य बनकर···"

"कहां चक्कर में फँस रहे हो ?" माधव बीच में ही डपट पड़ा, "चलो मेरे साथ, खाओ-पिओ। ज़िन्दगी का मज़ा लूटो। धर्म वगैरह के चक्कर में फंस कर कुछ न पाओगे। यह सब धोखे की टट्टी है। सच्ची जिन्दगी मन्दिर, मसजिद और गिरजाघरों में नहीं है, वह तो दुनिया के माहौल में बसती है।"

"तुम ठीक कहते हो, मुझे तुम्हारी दोस्ती का भी भरोसा है मगर मैं अपने मन से हार जाता हूं। आगे क्या करूंगा ? कुछ कह नहीं सकता।"

दोनों तर्क-वितर्क करते हुए बैरक में आए।

पादरी साहब उससे इतना प्रभावित थे कि सीधे बैरक में उसी के पास आए और बड़े स्नेह से उसे सम्बोधित करते हुए कहा, "तुम्हारी प्रतिभा और विद्वत्ता से मैं प्रसन्न हूं, तुम्हारे बारे में बड़ी देर तक सोचता रहा। मैं तुम्हें एक अच्छे नवयुवक के रूप में देखने को लालायित हूं। वैसे तुम्हारी सज़ा कब पूरी हो रही है ?"

"आपका आशीर्वाद है।" रामानन्द कहने लगा, "मैं स्वयं भी आपके स्वभाव-व्यवहार से बहुत प्रभावित हूं। एक सप्ताह बाद मेरी सज़ा समाप्त हो जाएगी।"

"उसके बाद तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हारे जीवन को नई राह और नई रोशनी से भर दूंगा। अनेक भटके हुए नवयुवकों को मैंने राह दिखाई है। फिर तुम तो बहुत होनहार हो।"

थोड़े ही सम्पर्क में वह पादरी साहब से घुल-मिल गया और उनके प्रति अपार श्रद्धा, आदर और विश्वास से भर गया।

उनकी विद्वत्ता, पवित्रता और ज्ञान की उस पर गहरी धाक जम गई और उसने दृढ़ निश्चय किया कि जेल से मुक्ति पाने के बाद वह आत्म-शुद्धि के लिए उन्हीं की शरण में जाएगा। तभी उसका भ्रष्ट-क्षुब्ध जीवन संयमित और सुस्थिर हो सकेगा।

"आपने धर्म और मानवता तथा आध्यात्मिक विचारों के प्रति पुनः मुझ

में विश्वास पैदा किया है अन्यथा मेरी सारी आस्थाएं मिट चुकी थीं।" रामानन्द ने गद्गद स्वर में कहा, "लोग बिना अनुभव, अध्ययन के धर्मगुरु और उपदेशक बन जाया करते हैं परन्तु इन विषयों का क ख ग भी नहीं जानते। मैंने धर्मोपदेशक मौलवी साहब और पण्डित जी से उनकी विद्वत्ता की थाह के लिए कुछ प्रश्न पूछे थे मगर वे एक भी उत्तर न दे सके। ग्लानि और लज्जा से उन्हें बतलाना पड़ा।"

"क्या प्रश्न पूछा था तुमने ?" पादरी साहब ने उत्सुकता दिखाई।

'मेरा एक मौलिक प्रश्न था—इस्लाम, बाइबिल और गीता में कहां समन्वय है और इनके समन्वित सार क्या हैं ?"

"इसका उत्तर नहीं दे सके वे लोग !"

पादरी साहब ठहाका मार कर बोले, "लो मैं बताता हूं। देखो, इस्लाम, बाइबिल और गीता में जगह-जगह परसमन्वय है, ये सभी ईश्वर की सत्ता-महत्ता को स्वीकार करते हैं। इनमें मनुष्य के लिए समान भावनाओं के उपदेश हैं, यद्यपि उन उपदेशों का प्रत्यक्ष रूप दूसरा है और परोक्ष में सब समान हैं। हर एक की अन्तिम मंज़िल मनुष्योचित जीवन व्यतीत करके ईश्वरप्राप्ति और मोक्षप्राप्ति है।

"तीनों पैगम्बरों और अवतारों ने मनुष्यों को एक ही श्रेणी की शिक्षाएं दी हैं। केवल शिक्षाएं देने का रूप उनके जीवन—अनुभव के आधार पर बदल गया।"

"आप बिल्कुल ठीक कहते हैं फादर।" श्रद्धा विभोर होकर रामानन्द ने स्वीकार किया।

"मैं आगे चलकर इस विषय पर तुम्हें गम्भीरतापूर्वक विस्तार से बताऊंगा।" पादरी साहब ने कहा।

'आपके निवास स्थान का क्या पता है !" रामानन्द ने पूछा।

'मैं स्थायी रूप से लखनऊ का निवासी हूं। इधर सरकारी आदेश पर तीन महीने के लिए आगरा आया था, बस लौट जाऊंगा। तुम मेरा पता नोट कर लो। रिलीज़ होने पर सीधे वेयड़ा मेरे पास चले आना यहां

उनका शिष्य बनकर...''

''कहां चक्कर में फंस रहे हो ?'' माधव बीच में ही डपट पड़ा, ''चलो मेरे साथ, खाओ-पिओ। जिन्दगी का मजा लूटो। धर्म वगैरह के चक्कर में फंस कर कुछ न पाओगे। यह सब धोखे की टट्टी है। सच्ची जिन्दगी मन्दिर, मसजिद और गिरजाघरों में नहीं है, वह तो दुनिया के माहौल में बसती है।''

''तुम ठीक कहते हो, मुझे तुम्हारी दोस्ती का भी भरोसा है मगर मैं अपने मन से हार जाता हूं। आगे क्या करूंगा ? कुछ कह नहीं सकता।''

दोनों तर्क-वितर्क करते हुए बैरक में आए।

पादरी साहब उससे इतना प्रभावित थे कि सीधे बैरक में उसी के पास आए और बड़े स्नेह से उसे सम्बोधित करते हुए कहा, ''तुम्हारी प्रतिभा और विद्वत्ता से मैं प्रसन्न हूं, तुम्हारे बारे में बड़ी देर तक सोचता रहा। मैं तुम्हें एक अच्छे नवयुवक के रूप में देखने को लालायित हूं। वैसे तुम्हारी सजा कब पूरी हो रही है ?''

''आपका आशीर्वाद है।'' रामानन्द कहने लगा, 'मैं स्वयं भी आपके स्वभाव-व्यवहार से बहुत प्रभावित हूं। एक सप्ताह बाद मेरी सजा समाप्त हो जाएगी।''

''उसके बाद तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हारे जीवन को नई राह और नई रोशनी से भर दूंगा। अनेक भटके हुए नवयुवकों को मैंने राह दिखाई है। फिर तुम तो बहुत होनहार हो।''

थोड़े ही सम्पर्क में वह पादरी साहब से घुल-मिल गया और उनके प्रति अपार श्रद्धा, आदर और विश्वास से भर गया।

उनकी विद्वत्ता, पवित्रता और ज्ञान की उस पर गहरी धाक जम गई और उसने दृढ़ निश्चय किया कि जेल से मुक्ति पाने के बाद वह आत्म-शुद्धि के लिए उन्हीं की शरण में जाएगा। तभी उसका भ्रष्ट-क्षुब्ध जीवन संयमित और सुस्थिर हो सकेगा।

''आपने धर्म और मानवता तथा आध्यात्मिक विचारों के प्रति पुनः मुझ-

में विश्वास पैदा किया है अन्यथा मेरी सारी आस्थाएं मिट चुकी थीं।" रामानन्द ने गद्गद स्वर में कहा, "लोग बिना अनुभव, अध्ययन के धर्मगुरु और उपदेशक बन जाया करते हैं परन्तु इन विषयों का क ख ग भी नहीं जानते। मैंने धर्मोपदेशक मौलवी साहब और पण्डित जी से उनकी विद्वत्ता की थाह के लिए कुछ प्रश्न पूछे थे मगर वे एक भी उत्तर न दे सके। ग्लानि और लज्जा से उन्हें बलखाना पड़ा।"

"क्या प्रश्न पूछा था तुमने ?" पादरी साहब ने उत्सुकता दिखाई।

"मेरा एक मौलिक प्रश्न था—इस्लाम, बाइबिल और गीता में कहां समन्वय है और उनके समन्वित सार क्या हैं ?"

"इसका उत्तर नहीं दे सके वे लोग !"

पादरी साहब ठहाका मार कर बोले, "लो मैं बताता हूं। देखो, इस्लाम, बाइबिल और गीता में जगह-जगह परसमन्वय है, ये सभी ईश्वर की सत्ता-महत्ता को स्वीकार करते हैं। इनमें मनुष्य के लिए समान भावनाओं के उपदेश हैं, यद्यपि उन उपदेशों का प्रत्यक्ष रूप दूसरा है और परोक्ष में सब समान हैं। हर एक की अन्तिम मंजिल मनुष्योचित जीवन व्यतीत करके ईश्वरप्राप्ति और मोक्षप्राप्ति है।

"तीनों पैगम्बरों और अवतारों ने मनुष्य को एक ही श्रेणी की शिक्षाएं दी हैं। केवल शिक्षाएं देने का रूप उनके जीवन—अनुभव के आधार पर बदल गया।"

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं फादर।" श्रद्धा विभोर होकर रामानन्द ने स्वीकार किया।

"मैं आगे चलकर इस विषय पर तुम्हें गम्भीरतापूर्वक विस्तार से बताऊंगा।" पादरी साहब ने कहा।

"आपके निवास स्थान का क्या पता है ?" रामानन्द ने पूछा।

"मैं स्थायी रूप से लखनऊ का निवासी हूं। इधर सरकारी आग्रह पर तीन महीने के लिए आगरा आया था बस लौट जाऊंगा। तुम मेरा पता नोट कर लो। रिमीज होने पर सीधे केयटन मेरे पास चले आना। हां सहा

तो मैं खुद ही यहां आकर तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा।"

रामानन्द ने एक पर्चे पर उनके लखनऊ निवास-स्थान का पता लिखकर जेब में डाल लिया। वह पूर्णतः उनका भक्त हो चुका था और ईसाई बनने का दृढ़ निश्चय कर चुका था

माधव ने पादरी के साथ उसकी बातें सुनी थी और रामानन्द को उसके प्रभाव में आया देखकर कुढ़ा जाता था।

जिस समय माधव को अपने सजा से मुक्त होने की खबर मिली, प्रसन्नता के बजाय वह दुःखी हो उठा।

"अरे भाई, तुम्हें तो खुश होना चाहिए।" रामानन्द ने स्नेह से कहा, "आज तुम्हारी सजा पूरी हुई, तुम्हें नर्क से छुटाकरा मिला।"

"कोई खुशी नहीं।" माधव बोला, "तुम्हें तो अभी एक सप्ताह और काटना है। क्या अच्छा होता हम साथ-साथ चलते।"

"फिक्र न करो।" रामानन्द ने हंसते हुए कहा, "एक सप्ताह पलक झपकते बीत जाएगा।"

"फिर तुम हमारे साथ चलोगे न ?" माधव के स्वर में अगाध प्रेम-आहग्र था।

"तुम्हें बता चुका हू, मैं पादरी साहब की शरण में जाने का फैसला कर चुका हूं। फिर तुम्हारा साथ कैसे दे सकूंगा ?"

"कोई बात नहीं।" युक्ति सोचकर माधव ने कहा, "तुम्हारे पादरी साहब लखनऊ में ही तो रहते हैं ? तुम मेरे साथ लखनऊ चलो। फिर वहां उनके पास तुम्हें पहुंचा दूंगा।"

"हां, अगर अपने कहने के अनुसार वे मुझे यहां लेने न आए तो मैं अवश्य ही तुम्हारे साथ लखनऊ चलूंगा।"

"मैं बाहर होटल में कमरा लेकर एक हफ्ते तक तुम्हारा इन्तजार करूंगा।"

फिर उसी दिन माधव की रिहाई हो गई और वह रामानन्द की प्रतीक्षा में एक हफ्ते के लिए आगरा में ठहर गया।

अविराम गति से भागते हुए समय के साथ जब एक सप्ताह व्यतीत हुआ तो रामानन्द को लगा जैसे ज़िन्दगी के अन्धकार से उसे प्रकाश की ओर जाने का पथ खुल गया हो।

उसने उस दिन पुराने संस्कारों को मस्तिष्क से दूर फेंक दिया और जेल अधिकारियों से विदाई लेकर जब वह 'मुक्ति-पत्र' के साथ जेल के भयंकर लौह द्वार से बाहर निकला तो उसकी प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े माधव ने दौड़कर उसे बांहों में भर लिया। दोनों ने कहकहे लगाए।

दैवयोग से पादरी साहब मुक्ति के समय आगरा न पहुंच सके। अतः माधव की प्रसन्नता का अन्त न था।

"हमें जल्द से जल्द लखनऊ पहुंचना चाहिए।" माधव ने सुझाव रखा, "यहां की पुलिस हमारी जानी दुश्मन है।"

"बिल्कुल, मैं भी तुरंत यह स्थान छोड़ना चाहता हूं।"

फिर दोनों हाथों में हाथ डाले ताज-मुमताज के उस ऐतिहासिक रंगस्थल से दूर होते रहे।

आगरा कैंट पर पहुंचकर उन्होंने दीर्घ निःश्वास ली।

अब गाड़ी बहुत आगे निकल चुकी थी। और माधव उसका कन्धा थपथपाकर कह रहा था—

"आगरा का ज़िक्र छोड़ो, लखनऊ की बात करो, जहां ज़िन्दगी बड़ी खूबसूरत है, बहुत हसीन, बहुत नाज़नीन और बहुत ।"

"और बहुत बदसूरत भी।" रामानन्द बुदबुदाया और खिड़की से बाहर अन्धकार में झांकने लगा। उस अन्धकार में आगरा डूब गया था।

३

नवाबों की नगरी। तवारीखी नफ़ासत, नज़ाकत का शहर और शामे-अवध।

सिगरेट के छल्ले उछालता हुआ माधव गुनगुना उठा—

"इन चौदह सालों के अन्दर
इस तरह जवानी चढ़ती है—
जैसे कि चन्दरमा दूइज का—
बढ़ता जाए, चढ़ता जाए।"

"तो मैं लखनऊ आ गया?" रामानन्द अचरज से चारों ओर घूरता हुआ फुसफुसा उठा, "बहुत तारीफ सुन चुका हूं यहाँ की..."

"जनाब, इसमें भी आपको शक है? काबिले-तारीफ है लखनऊ। हुस्नोजवानी में देखो, तो; नज़ाकत-नफासत में देखो, तो। तवारीखी कहानियों, रोमांटिक पहलुओं में, हर तरफ से लखनऊ नौशा है नौशा।"

माधव ने मधुरता से मुस्कराते हुए उसका कन्धा थपथपाया।

उनका रिक्शा हज़रतगंज की ओर दौड़ रहा था। गनेशगंज, अमीनाबाद और कैसर बाग को पार करते हुए वे लालबाग तक पहुंच रहे थे!

माधव आत्मानन्द में नहाया जा रहा था। एक मुद्दत बाद उसे अपने दिलोजान से प्यारे शहर का मुंह देखने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। लखनऊ की ज़मीन पर उसका बचपन बीता था, यहीं उसने जीवन की अंगड़ाई ली। मुहब्बत और रंगीनियों के ख्वाब देखे और अब फिर इसी हुस्न और रोमांस की नगरी में आ गया।

रामानन्द के लिए यह जगह बिल्कुल अपरिचित थी। फिर भी उसे

लुभावनी लग रही थी।

वह विस्मय-विमुग्ध दृष्टि से लखनऊ की रौनक और दिलफरेब रंगीनी को निहार रहा था।

चौड़ी-चौड़ी सड़कें, रंग-बिरंगी रोशनी, तरह-तरह की वेष-भूषाएं, भीड़-भाड़, चहल-पहल, स्वरलहरियां और थिरकन-मचलन।

अपनी सपूची जिन्दगी में उसने केवल दो शहर देखे थे। वाराणसी, जहां उसका बचपन और जवानी का कुछ समय व्यतीत हुआ था और आगरा, जहां उसकी विकृति और विवशता उसे अचानक ही खींच लाई थी और आज वह प्रथम बार सारे भारत में प्रसिद्ध उस लखनऊ नगर को देख रहा था जो वास्तव में उसे एक 'अद्भुत रोमांटिक लोक' मालूम हो रहा था।

वह ख्यालों में डूब-उतरा रहा था। सहसा माधव ने उसकी बांहें झकझोर कर कहा, "कहां डूब गए भाई? देखो तो सही, हजरतगंज आ गया।"

वह जैसे चौंक पड़ा हो। आंखें मींच कर हजरतगंज की रंगीनी पर निगाह डाली, उसे लगा वह जैसे भारतीय माहौल से एकाएक अमरीकी माहौल में पहुंच गया हो।

क्या कहने थे हजरतगंज के। एक अजीबोगरीब समां था वहां, अद्भुत जीवन-सिंगार। एक ऐसी निराली चहलकदमी और बांकपन जो रामानन्द जैसे सरल और अल्पदर्शी नवयुवक के लिए सर्वथा कौतूहल का सामान था। जिन्होंने देखा और परखा है उनके लिए भले ही यह सब पुराना हो सकता है परन्तु रामानन्द के लिए एकदम नया और आश्चर्यजनक था।

चौड़ी-चौड़ी, साफ-सुथरी सीमेण्टी सड़क के दोनों ओर भव्य और कलात्मक अट्टालिकाएं और नववधू-सी सज्जित-सुसज्जित दुकानें। सब बेशकीमती, सभी विभिन्न प्रसाधनों से अलंकृत।

रामानन्द कौतूहल से देख रहा था। वे दुकानें खरीदारी करने वालों से चहक रही थीं और खरीदारी करने वाला बहुत कम संख्या में पुरुष वर्ग, बहुतायत संख्या में स्त्री वर्ग था।

"ऐसा लगता है जैसे लखनऊ तुम्हारे लिए कोई अद्भुत अजायबघर बनकर रह गया हो ?" माधव ने चुटकी ली, "मैंने कहा था न अभी तुमने यहां देखा ही क्या है ? मगर अब मैं तुम्हें दिखाऊंगा, यकीन मानो, तुम आंखें फाड़े देखते ही रह जाओगे और तुम्हारे अचरज-कौतूहल का अन्त न होगा ।"

"तुम मुझे किस मीना बाजार में खींच लाए माधव ?" रामानन्द सूखी मुस्कराहट के साथ फुसफुसाया, "मेरी विरक्ति और कंठा की दीवारें धराशायी होती जा रही हैं; मैं अपने को अत्यन्त रोमांचक अवस्था में डूबता-उतराता महसूस कर रहा हूं । लगता है ज़िन्दगी फिर एक अनोखी करवट लेगी ?"

"छोड़ो इन फिलासफी की बातों को, वो देखो अपना पैराडाइज़ आ गया ।" माधव ने उसका कन्धा ठोंककर प्रफुल्लित स्वर में कहा ।

"पैराडाइज़ ?" रामानन्द की आंखें सामने की भव्य अट्टालिका को घूरती रह गईं ।

"रोक भाई जान, यहीं उतरना है ।" सीट से उचककर माधव ने रिक्शे वाले की पीठ में धौल जमाई ।

रिक्शा पैराडाइज़ की भव्य अट्टालिका के सामने ठहर गया । माधव ने बड़ी शान के साथ एक सिगरेट जलाया और रामानन्द को टिहुनी मारकर उतरने को कहा ।

रामानन्द अपलक आंखें फाड़े देख रहा था ।

बीच हज़रतगंज में विख्यात पैराडाइज का भव्य भवन मुस्करा रहा था । ऐसी शानदार और हसीन इमारत उसने दूसरी न देखी थी । हां, ताजमहल भले ही देखा था । परन्तु वह ऐतिहासिक महत्त्व की इमारत थी, शिल्पकला का एक अलग नमूना ।

मगर पैराडाइज अनेक कलाओं का सम्मिलन था । वास्तव में पैराडाइज (स्वर्ग) की सम्भावनाओं से परिपूर्ण था ।

सारी इमारत चाकलेटी रंग में दमक रही थी । फर्श दूधिया चादर

सा लगता था। दरवाजों और खिड़कियों में मोटे कीमती शीशे लगे थे और उन पर रंग-बिरंगे पर्दे झूल रहे थे। अनेक छोटी-बड़ी और कीमती मोटरगाड़ियां पोर्टिको में खड़ी थीं।

उजले कपड़ों में इधर से उधर दौड़ते-भागते बेयरे और वेटर लखनऊ नहीं, पेरिस के होटलों की याद दिला रहे थे।

"उतरो भाई, गँवारों की तरह देख क्या रहे हो ?" माधव ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा।

"कुछ नहीं. अपनी वेष-भूषा को देखते हुए भय-सा लगता है।" रामानन्द दबी-दबी आवाज में बोला।

"धत् तेरे की।" माधव हथेली पीटकर हंसा।

जैसे ही रामानन्द नीचे उतरा, एक झुर्रियोंभरी हथेली उसके सामने फैल गई, "अल्लाह तेरा शुक्र करे। कुछ दे दे बेटा।"

रामानन्द ने चौंककर उधर देखा। गदले, काले बुरके के भीतर से दो कांतिहीन आंखें झांक रही थीं।

उसने विवशता से जेबें टटोली, और गर्म निःश्वास छोड़कर रह गया।

'आगे बढ़ो भी।" माधव ने उसे झटकारा।

"खुदा के लिए सिर्फ दस नए पैसे ...।" फिर वही मिन्नतें।

"तुम दो नये पैसे के काबिल भी नहीं।" माधव ने एक बेहूदा फब्ती कसी और रामानन्द को पैराडाइज की ओर खींच ले गया।

बुर्के वाली निरीह दशा में आगे की ओर सरक गई।

"भीख नहीं देनी थी, न देते, मगर तुमने उसे गन्दा जवाब क्यों दिया ?" रामानन्द ने पूछा।

"तुम नहीं समझते यार।" लापरवाही के साथ माधव कह पड़ा, 'जानते हो वह कौन थी ?"

"मुझे क्या पता, तुम जानो ?"

"क्या मतलब ?" रामानन्द ने उलझकर पूछा ।

"हां, सच कह रहा हूं।" माधव अपने कथन की पुष्टि करने लगा, "आज से दस-बारह बरस पहले सारे चौक बाज़ार में उसकी हुस्नोजवानी का दूसरा जोड़ न था। गज़ब की दिलफरेब · · ·" बात अधूरी ही छोड़कर माधव ने ऐसी चटकार भरी मानो उस बुर्के वाली की पुरानी शक्ल उसकी आंखों के सामने आ खड़ी हुई हो ।

"तो फिर ये दिन कैसे आ गए ?" रामानन्द ने अचरज से पूछा ।

"अमा यार, तुम्हें तो मैं बहुत बुद्धिमान समझता था मगर तुम बिल्कुल कूढ़मगज़ निकले ।" माधव हल्के कहकहे के साथ बोला, "भला ये भी कोई पूछने की बात है ? बड़े-बड़े अमीर-उमराव और राजा-महाराजा फकीर हो जाते हैं, फिर वह तो तवायफ ठहरी ।"

"तुम्हारा मतलब वेश्या ?"

" हां वेश्या। माने रण्डी और दो-चार नाम गिनाऊं ?" माधव की आवाज़ में खीझ आ गई, "जिस्म की सौदागरी मौसमी फूल की तरह होती है। जब तक बहार होती है हज़ारों भंवरे उसके आगे-पीछे गुनगुनाते-मंडराते रहते हैं लेकिन जैसे ही बहार गई, फूल मुरझाया; फिर कोई खूसट भंवरा भी उसकी ओर रुख नहीं करता ।

" समझे कुछ। यही हाल उस कयामत जान का भी हुआ ।

" एक ज़माना था दोस्त मेरे, जब एक हज़ार रुपए कयामत जान की मुंहदिखाई के लिए दहेज चढ़ाना पड़ता था और आज वही कयामत जान सड़कों पर भीख मांगती फिर रही हैं और लोग-बाग उनके मुंह पर थूकने को भी तैयार नहीं। सब मुकद्दर का खेल है। जवानी और पैसे के पंख बड़े तेज होते हैं। इधर पनपे; उधर उखड़ गए।"

रामानन्द का हृदय भर-भर आया। और अधिक नहीं सुनना चाहता था वह। एक निःश्वास के साथ सिमटा-सिमटा-सा वह माधव के साथ पैराडाइज के मुख्य द्वार में प्रविष्ट हुआ ।

पैराडाइज माधव का पुराना होटल है। जब से यह आरम्भ हुआ

तभी से माधव ने यहां वेटरे की नौकरी आरम्भ की और मालिक तथा आगन्तुकों को अपने व्यवहार-सेवा से प्रसन्न कर लिया। कहने को वह वेयरा कोटि में ही आता है परन्तु मालिक की जो मुहलगी, विश्वास और स्नेह उसे प्राप्त है किसी और को नहीं।

वह तो लड़की भगाने के जुर्म में अचानक ही पकड़ा गया। बम्बई के एक सेठ ने पैराडाइज की एक 'तितली' का सौदा पांच हजार रुपयों में किया था और उस तितली को उनकी बम्बइया कोठी तक पहुंचाने का काम माधव के जिम्मे था। वह उस तितली को लेकर स्टेशन की ओर उड़ा मगर रास्ते में ही पुलिस जत्थे ने उसे गिरफ्तार कर लिया क्योंकि वह तितली एक न्यायाधीश की लाड़ली थी।

माधव के भीतर पहुंचते ही पैराडाइज में एक तूफान-सा आ गया।

मालिक और सहकर्मियों को सूचना देने से पूर्व ही वह अप्रत्याशित रूप से आ पहुंचा था।

बेयरों, वेटरों का दल जिसमें महिलाएं भी शामिल थी उसके स्वागत के लिए दौड़ पड़ा।

"माधव आ गया···आ गया माधव।" सब हर्षनाद करते हुए दौड़े मानो कोई बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आ गया हो।

रामानन्द ने पैराडाइज की भीतरी खूबसूरती देखी। उसकी आंखें चौंधियाकर रह गईं।

लम्बा-चौड़ा हाल, छोटे-छोटे केबिन, चमाचम शीशे के बर्तन, काउण्टर पर शीशे की अलमारी में चमकती विभिन्न प्रकार की चटनियां, अंग्रेजी शराब की बोतलें, विविध फलों और खाद्य पदार्थों के जार।

कुछ कमसिन लड़कियां उजले स्कर्ट में इधर-उधर दौड़-भाग रही थी, और दूर से मानसरोवर में फुदकती बतखों-सी मालूम पड़ती थीं।

रामानन्द इस दृश्यावली पर न चाहते हुए भी लुटकर रह गया। उसका मन और मस्तिष्क चारों ओर से पैराडाइज की रंगीनी में उलझकर रह गया।

अपने-आपसे फुसफुसाया वह, 'माधव ठीक कहता था, जिंदगी यहां है, जिंदगी की खूबसूरती और असलियत यहां है। मगर वह बुर्के-वाली···?' सहसा वह सिहर उठा।

"हलो माधव, हल्लो माई डियर···कहिए मियां माधव···? वल्लाह, आप आ गये।" तमाम स्वागत स्वर माधव के गिर्द गूंज उठे।

"आ गया भाई, आ गया।" माधव हाथ हिलाकर मुस्कराया और परिचितों, शुभचिन्तकों की बधाइयों-शुभकामनाओं पर आभार प्रगट करने लगा।

गोल मटोल, विद्रूपी शक्ल, मगर वेष-भूषा से निहायत सभ्य-शिक्षित और व्यवहार-कुशल दिखने वाले पैराडाइज़ के मैनेजर ने अपनी मक्खी मार्का मूंछों को भींचकर मुस्कराते हुए कहा, "तुम जब स्टेशन पर आया था हमने को 'रिंग' करता। हम तुमको लेने वास्ते गाड़ी भेजता।"

"कोई बात नहीं मैनेजर साहब, थैंक यू।" माधव उन्हें सिर झुकाकर खिमिया उठा। फिर रामानन्द को आगे खींच कर बोला, "सर, ये हमारा फ्रेन्ड रामानन्द है। इसको हम जेल में साथी बनाया है। बड़ा काम का आदमी है हमारे साथ ये भी काम करेगा।" और फिर आंखें मारकर वह रहस्यात्मक ढंग से मुस्कराया।

मैनेजर जिसका नाम फन्टू साहब था, उत्तर में इस तरह मुस्कराया मानो कोई कठिन पहेली बूझ गया हो।

रामानन्द ने शिष्टाचारवश उसे प्रणाम किया। यद्यपि वह होटल में नौकरी करने के आशय से माधव के साथ नहीं आया था परन्तु वह कुछ बोला नहीं, चुपचाप कौतूहल से सब कुछ देखता रहा और मन ही मन सोचता, रहा माधव इस होटल का बेयरा है मगर छोटे से लेकर बड़े तक इस प्रकार उसका स्वागत-सत्कार कर रहे हैं मानो वह मालिक का दामाद हो।

"आओ खा-पी लें, फिर तुम्हें मालिक से मिलाऊँगा। कल से हमारा ड्यूटी शुरू हो जाएगा।" माधव ने कहा और उसे खींचते हुए एक

केबिन की ओर ले बढ़ा।

रामानन्द यंत्रवत् उसके साथ चला आया। दोनों एक केबिन में आ बैठे।

केबिन असाधारण थी। दीवारों में नीली ट्यूब लाइट चमक रही थी। दो गद्देदार कोचों के सामने ऐसी चमकदार मेज रखी थी जिसमें चेहरे झलकते थे।

माधव ने दीवार में लगी काल-बेल बजाई और कोई वेयरा उसकी ओर झपटा।

सहसा केबिन में बैठते हुए रामानन्द चौंक पड़ा। बगल की केबिन से करुण सिसकी आ रही थी। कोई सुकुमार नारी कण्ठ था, "भगवान के लिए तंग न कीजिए...छोड़ दीजिए !"

रामानन्द ने कान उसी ओर लगा दिए। वह जो कुछ सुन-समझ रहा था वह पैराडाइज (स्वर्ग) जैसे नाम पर कलंक का टीका था। माधव सुनकर भी अनसुना बना हुआ था मानो ये घटनाएं उसके लिए कोई महत्त्व न रखती हों।

"हलो माधव, क्या खाना-पीना है ?" एक लेडी वेटर ने केबिन में आकर भद्दा-सा मज़ाक किया, "तुम हमको कोई लेटर भी नहीं दिया। तुम बड़ा रूड (रूखा) आदमी है माधो! हम तुम्हारे लिए बहोत तड़पते थे।"

रामानन्द उसकी ऐसी बातें सुनकर भौंचक रह गया। वैसे उसने बड़ी-बड़ी प्रेम कहानियां सुनी थी मगर ऐसा खुला हुआ रोमांस कभी न देखा-सुना था।

वह उड़ती-उड़ती आंखों से उस महिला की ओर देख रहा था, जो उमर में चालीस के लगभग रही होगी मगर जिसने अपने को वेष-भूषा, नज़ाकत और सिंगार में षोडषी बना रखा था।

रंग उसका बहुत कुछ शाम के आकाश की तरह गदला-काला था मगर शरीर इतना मांसल और आनुपातिक था कि उसका सलोनापन उसकी खूबसूरती में शामिल हो रहा था।

उसकी आंखें इतनी भारी-भारी-सी उनींदी थीं मानो वह कई रात जागी हो या उसने दो-चार-पेग व्हिस्की पी रखी हो।

"माफ करना मेरी आका, मैं किसी को भी लेटर नहीं भेज सका।" माधव ने हाथ बढ़ाकर उसकी कलाई पकड़ ली और भींचते हुए बोला, "तुम्हारे इश्क की शराब हमेशा मस्ती के आलम में डुबाए रहती थी रोमा। तेरी जान कसम···।" फिर थोड़ा आंखें मींचकर, रोमा की गदोली में चिकोटी भरते हुए कह पड़ा, "इससे मिलो, यह तुम्हारे लिए नया 'व्याय फ्रेण्ड' लाया हूं···।"

रामानन्द लज्जा से खीझकर रह गया। मगर रोमा वेहयापन के साथ उसे आकर्षित करने के प्रयास में बोली, "आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मगर बड़े शर्मीले हैं आप।"

"शर्म तोड़ने के लिए तुम्हारी एक ही अदा···!"

"ओह माई गॉड।" जोश को दांतों से काटती हुई बीच में ही टपक पड़ी, "मुझे जाने दो बाबा, मेरा ड्यूटी आवर चल रहा है!" और वह हाथ छुड़ाकर भागी।

"दो थाल वेजीटेरियन।" माधो कहकहे के बीच बोला।

रामानन्द की ग्लानि और अचरज का अन्त न था परन्तु माधव सिगरेट के लच्छे फूंकते हुए अपनी शान बघारे जा रहा था, "ये रोमा थी, जिस साल मैं इस होटल में आया उसी साल यह भी आई तब यह बीस बरस की थी। गजब का नमक था इसके चेहरे पर। जाने कितनों को घायल किया, कितनों को तीरे-नजर का शिकार बनाया। इसी की वजह से उन दिनों पैराडाइज ने खूब 'नोट' बनाए। मेरा तो इससे उसी जमाने में 'लव' हो गया और···?"

माधव अपने-आप बड़बड़ाये जा रहा था। रामानन्द का दिलो-दिमाग तो पूरी तरह से बगल वाली केबिन की ओर लगा हुआ था जिसमें अब भी फुसफुसाहट और दबी-घुटी सिसकन के स्वर आ रहे थे।

एक बूढ़ी-सी मरी-मरी आवाज उसके कानों से टकरा रही थी, "लिली,

हम तुमको बहुत जल्दी प्रोमोशन देंगे ! हम तुमको 'गजटेड आफिसर' बना देंगे। तुम हमारा पावर जानती हो, लेकिन बस एक बार···"

"भगवान के लिए मेरी मजबूरियों पर तरस खाइए कमिश्नर साहब !"शायद अब लिली गिड़गिड़ा रही थी—"आप जानते हैं मैं इतनी एडवान्स्ड फेमिली की लड़की नहीं हूं। मजबूरी में नौकरी कर रही हूं। मां अन्धी है, पिता को लकवा मार गया है। छोटे-छोटे भाई-बहन सब मेरी कमाई पर जिन्दा हैं। मैं समाज की भर्त्सना सहकर भी नौकरी कर रही हूं। अगर कहीं यह बात···"

"कैसी छोटी-छोटी बातें करती हो !" वासना के नशे में डूबा हुआ बूढ़ा कमिश्नर घिसियाए से स्वर में कह रहा था, "अपनी तरक्की के लिए लोग जान तक दे बैठते हैं; मैंने तो तुम्हारे सामने बहुत मामूली-सा प्रपोजल रखा है। अगर तुमने मेरी बात मान ली तो मैं तुम्हें कहां से कहां पहुंचा दूंगा।"

"मामूली-सा प्रपोजल ?" लिली बुदबुदाई, "यह मेरी इज्जत का प्रपोजल है कमिश्नर साहब ! आप मेरे पिता के तुल्य हैं, कुछ तो सोचिए।"

"मेरा मूड 'आफ' न करो लिली।" सहसा कमिश्नर के स्वर में तनाव और कठोरता आ गई, "तुम जानती हो कि तुम्हें हासिल करने के लिए मैं बड़े खतरनाक कदम उठा सकता हूं। मेरा एक ही आर्डर तुम्हारे लिए दफ्तर का दरवाजा बन्द कर देगा। और तब···?"

"मेरा परिवार तबाह हो जाएगा कमिश्नर साहब !" लिली की दयनीयता साफ बता रही थी कि वह कमिश्नर के पैर पकड़कर प्रार्थना कर रही है।

"मैं उसे उसकी नालायकी का सबक दूंगा।" सहसा उत्तेजित रामानन्द ने मेज पर मुक्का जमाया और कमिश्नर की केबिन में जाने को उठ खड़ा हुआ।

उसके उग्र रूप से माधव चकरा उठा। दूसरे ही क्षण स्थिति उसकी भी समझ में आ गई।

रामानन्द का हाथ पकड़कर जबरन उसे सीट पर बिठाने की कोशिश करते हुए वह फुसफुसाया, 'क्या गजब कर रहे हो रामानन्द ? ये पैराडाइज है, यहां तुम्हारी इंसानियत का खून हो जाएगा। यह दौलत मन्दों का 'मदरसा' और 'बाजार' है। इस तरह की सैकड़ों सौदेबाजी रोज होती है। कहां तक तुम हरएक से निपटते-झगड़ते फिरोगे ? अपना काम देखो, कभी भूल से भी यह गलती न कर बैठना, नहीं तो खुद अपनी ही शामत आ जायेगी।"

अपनी स्थिति का ज्ञान कर क्रोध से उबलता हुआ रामानन्द यथा-स्थान बैठ गया।

थोड़ी देर बाद उसने बूढ़े कमिश्नर और अल्पवयस्क लिली को 'ब्लैक रूम' की ओर जाते देखा। शायद लिली पेट की खातिर इज्जत बेचने को राजी हो गई थी।

शाम के साये में लखनऊ नगर की आभा देखते ही बनती है। वैसे जहां पैसा है, वहीं की शामें रंगीन होंगी। मगर लखनऊ की शामें हर हालत में रंगीन और खुशनुमा नजर आती हैं।

यहां मुफलिसी भी गजब के करिश्मे दिखाती है। यहां फकीरी में भी जशन मनाना एक कला है। चन्द बाशिंदों को छोड़कर बाकी सब मुद्दतों से चली आई नजाकत-नफ़ासत और शाहमिजाजी की परम्परा को निभाते चले आ रहे हैं।

शाम के वक्त हजरतगंज की रंगीनी देखिए जरा। हर तरह की तस्वीरें नजर आयेंगी, उजली-मैली। बेहद हसीन, इंतिहाई बदसूरत !

हजरतगंज दिल्ली के चांदनी चौक से किसी कदर कम नहीं। फैशन-परस्ती के ये बेजोड़ नमूने दिल्ली में भी शायद ही देखने को मिलें।

रामानन्द पैराडाइज के बाहर बारादरी में खड़ा हुआ हजरतगंज का माहौल देख रहा था, ठीक उसी तरह जैसे कोई नन्हा बच्चा कौतूहल और अचरज से नुमायश देखा करता है।

सहसा उसकी दृष्टि सामने से आते हुए एक विचित्र व्यक्ति पर पड़ी।

वास्तव में यह व्यक्ति विचित्र था।

उसने रेशमी अचकन और चूड़ीदार पाजामा पहन रखा था। उसके सिर पर नवाबी (लखनऊआ दुपलिया) टोपी थी—बेलदार कढ़ी हुई और पैरों में जरी का काम बनी हुई कामदार जूतियां थी।

और सबसे बड़ी बात यह थी कि उसके पीछे-पीछे एक व्यक्ति चल रहा था जिसके हाथों में एक सिल्कन छाता था। छाता उसने अपने आगे चलते हुए इस अद्भुत व्यक्ति पर लगा रखा था।

उनके पीछे बहुत सारे बच्चे शोर मचाते हुए चले आ रहे थे मानो वे लोग कोई तमाशा या मनोरंजन के सामान हों!

रामानन्द को कौतूहल हुआ! धीरे-धीरे वह भी सड़क पर आ गया। यह तमाशा उसे भी रोचक लग रहा था।

लोगों की चर्चा से पता चला कि ये महाशय 'नवाब कनकौवा' हैं। वे कहीं से पतंग (कनकौवा) की बाजी जीतकर लौट रहे थे।

नवाब कनकौवा की लचकती हुई कमर इस समय सीधी होती मालूम होती थी। उनकी चाल और चेहरे में ऐसा भाव था मानो कोई जबरदस्त मोर्चा जीतकर आ रहे हों।

वाकई कनकौवे की बाजी जीतना उनके लिये लड़ाई का मैदान जीतने के ही बराबर था।

नवाब कनकौवा वाजिद अली शाह के खानदान से सम्बन्धित थे। सम्भवतः पीढ़ी दर-पीढ़ी से चले आये शाही खानदान को रोशन करने वाले एक नवाब कनकौवा ही बचे थे। वैसे शाही खानदान के कुनबे के कुनबे भरे पड़े हैं। मगर नवाब साहब एक अपने को छोड़कर बाकी सब-को दोगला नवाब ही कहते हैं।

कुछ भी हो, नवाब कनकौवा की सारी जिन्दगी कनकौवाबाजी में गुजरी। सात बरस की उम्र से उन्होंने कनकौवा और लटाई-डोर उठाई

और आज लगभग साठ वर्ष की उम्र तक कनकौवा के पीछे तबाह और दीवाने हैं।

शायद कनकौवे के इसी इश्क के कारण वे नवाब कनकौवा के नाम से प्रख्यात हो गए और सारे लखनऊ शहर में उनकी जोड़ का दूसरा कनकौवाबाज़ नहीं।

ख़ुदा जाने कहां तक सच है ? लोग कहते हैं कि कनकौवाबाज़ी में नवाब ने अपनी सारी पुश्तैनी दौलत तबाह कर दी, मगर यह नशा जैसे का तैसा बना है। बाहर वे नवाब कनकौवा बने फिरते हैं मगर घर में फांके की नौबत बनी रहती है। उन्होंने अपनी नवाबी कैसे कायम रख छोड़ी है, यह तो नवाब ही जानें, मगर अक्सर बेगम से उनकी लफ्फाज़ी को लेकर तू-तू मैं-मैं हुआ करती है। वह खीझकर कहती हैं. 'कब्र में पांव डाले बैठे हो, मगर कनकौवाबाज़ी तुमसे नहीं छूटती। ख़ुदा के लिए अपने बाल-बच्चों का तो कुछ ख्याल करो। मरोगे तो कफन देने वाला भी कोई न होगा।'

'क्या बकती हो बेगम !' नवाब चिड़चिड़ाते हैं, 'नवाब कनकौवा को कफन-दफन देने वालों का तांता न टूटेगा। मामूली हस्ती समझती हो ? मेरी दिलचस्पी में हाथ मत डालो। तुम्हारे बाल-बच्चों के लिए तो वजीफा ही काफी है।'

शाही खानदान से ताल्लुक रखने की वजह से नवाब कनकौवा को वजीफा मिलता है। भले ही बंटते-बंटते वह रकम उनके हिस्से में पन्द्रह रुपए तेरह पैसे ही पड़ते हैं। मगर जिस दिन वे वजीफा लेने जाते हैं उनकी शानो-शौकत देखते ही बनती है। उस पन्द्रह रुपए तेरह पैसे के लिए बीस रुपये तक तो तैयारी में ही खर्च हो जाते हैं।

गजब के हैं नवाब कनकौवा और अजीबो-गरीब है उनकी नवाबी की कहानी।

नवाब कनकौवा को पैराडाइज़ होटल में घुसते देखकर रामानन्द झपटते हुए भीतर आ गया।

क्षण-भर को उसने सोचा, अगर नवाब मुफलिस होते तो इतने कीमती और शानदार होटल में आने की हिम्मत उन्हें कैसे होती ?

नवाब का भीतर घुसना था कि चार-पांच वेटर उनकी ओर दौड़ पड़े। वे अवसर जेब गरम होने पर पैराडाइज़ में ही नोश फरमाते थे।

"अरे भाई, नवाब कनकौवा आए, नवाब कनकौवा···।" चारों तरफ चहल पहल और हास्य-व्यंग्य गूंजने लगा।

"आदाब अर्ज़ है नवाब सा'ब।" माधव बड़ी ऐक्टिंग के साथ उनके सामने झुका।

"हल्लो माधव, तुम आ गए ?" नवाब साहब पोपले मुंह को भींचकर खिलखिलाए।

"गरीबपरवर की इनायत जो है।" माधव उनकी तारीफ के पुल बांधने लगा, 'वल्लाह ! अखबार में खबर पढ़ी थी, आपने तो कमाल कर दिया। शाहजहांपुर के कनकौवाबाज़ को जो पानी पिलाया···। अब आपके सामने आपकी क्या तारीफ करूं। आप बेमिसाल हैं। कहां लखनऊ और कहां शाहजहांपुर ! वाह नवाब साब।"

नवाब साहब गदगद हो उठे। वे एक केबिन में जमकर बैठ गए। होटल के कर्मचारी थोड़ी देर तक उनकी नवाबी का मज़ा लेकर अपने-अपने काम में लग गए तो माधव के साथ दोस्ताना ढंग पर उनकी गुफ्तगू होने लगी। समीप ही रामानन्द भी खड़ा हुआ उनके बदलते रूपों का आनन्द ले रहा था।

"आपकी तारीफ ?" कुचड़ी-मुचड़ी आंखों से रामानन्द को घूरते हुए नवाब ने पूछा।

"ये वाकई काबिले-तारीफ हैं नवाब सा'ब।" माधव रामानन्द के कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "अपने बड़े जिगरी दोस्त जनाब रामानन्द हैं, आपकी जूतियों पर परवरिश पा रहे हैं·"

"वल्लाह ! क्यों शर्मिन्दा करते हो माधव ?" नवाब साहब मुस्कराते हुए रामानन्द की ओर मुखातिब होकर बोले, "आप निहायत शरीफ

इंसान मालूम होते हैं। आपकी मुलाकात से खुशी हासिल हुई। आपने तो सुना ही होगा, मुझे नवाब कनकौवा कहते हैं।

"अरे साहब, आप तो पूरे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं।" रामानन्द ने चुटकी ली।

नवाब साहब फूलकर कुप्पा हो उठे। तपाक् से शेरवानी की जेब में हाथ डालकर बोले, "क्या खातिर करूं आपकी? लीजिए, काजू नोश फरमाइए।"

उन्होंने जेब से हाथ निकाला तो काजू की जगह हथेली पर छिली हुई मूंगफली के चार दाने निकले।

रामानन्द यह देखकर मुस्करा पड़ा।

"तोबा, तोबा यह कमबख्ती किसने की?" नवाब साहब मुट्ठी भींचकर खिसिया पड़े और सफाई देने के लिए बड़बड़ाते रहे, "असल में मेरे बच्चे बड़े आफत के परकाला हैं। यह उन्हीं की हरकत है। जेब से काजू साफ कर दिए और उसकी जगह मूंगफली के दाने रख दिए—छोड़िए! और कुछ मंगाऊं आपके लिए?"

"शुक्रिया।" रामानन्द ने उनकी झेंप मिटाते हुए कहा, "आप बड़े दिलचस्प आदमी हैं। कभी मुझे भी अपने कनकौवे की कोई बाजी दिखाइए?"

"जरूर, जरूर।" वे खींसें काढ़कर कहने लगे, "अगली जुमेरात को मलीहाबाद से एक बाजी बदी है। आइए, शौक से देखिए।"

"जरूर आऊंगा।" रामानन्द ने हामी भरी।

"अब इस कनकौवाबाज़ी में क्या रह गया?" नवाब साहब रामानन्द को अपनी जिन्दगी की दास्तान सुनाने लगे मानो वह उनका बहुत पुराना दोस्त हो।

रामानन्द उनका असली रूप समझ चुका था। फिर भी वह उनकी बातों में मज़ा ले रहा था और जब माधव ने नवाब साहब को इशारे से बताया कि रामानन्द भी बहुत बड़ा 'कनकौवाबाज़ है' तब तो नवाब

माधव की दिलचस्पी उसमें और भी बढ़ गई और वे ऊंची-ऊंची डींगें मारने लगे।

धीरे-धीरे पैराडाइज रामानन्द का सुपरिचित स्थान बन गया। माधव यहां आकर अपने निश्चित कार्य-क्रम में लग गया था और रामानन्द को इस जीवन और वातावरण के प्रति आकर्षित कर रहा था। वह चाहता था कि वह भी इसी वातावरण में घुल-मिलकर होटल कर्मचारी दल का एक सदस्य बन जाए; क्योंकि रामानन्द की प्रतिभा-क्षमता से उसे भारी लाभ उठाने की आशा बन चुकी थी।

स्वयं रामानन्द भी नौकरी के लिए उत्सुक हो रहा था। परन्तु उसे बैरा-गीरी पसन्द न थी। वास्तव में यह काम उसके स्तर के अनुकूल न था परन्तु जो आनन्द और स्वतन्त्रता इस काम में थी वह मैनेजर बनने में भी नहीं थी, इसलिये माधव के आग्रह पर उसने यह कार्य स्वीकार कर लिया और अपने जीवन के पिछले सारे अध्याय भुलाकर वर्तमान के प्रति एकनिष्ठ हो गया।

निस्संदेह उससे लोग अत्यधिक प्रभावित होते थे और माधव उसकी आड़ में एक से एक अच्छे शिकार फंसा लिया करता था।

पैराडाइज ऊपर से पैराडाइज किन्तु भीतर से नरक था। वहां सभी कुछ होता था! वह होटल था, क्लब भी; रेस्ट्रां था, जीमखाना भी; बार था, भोगशाला भी।

रामानन्द को वहां की सचाई और वास्तविकता का ज्ञान धीरे-धीरे हुआ।

धीरे-धीरे उसे अनुभूति होने लगी कि वह सारी दुनिया की विद्रूपता और सड़ांध छोड़कर गहरे नरक में आ पड़ा है।

वह देखता है रात के साये में, पैराडाइज में तरह-तरह के नकाबी चेहरों की चमक।

मिनिस्टरों और लखपतियों के चेहरे। नेताओं-महात्माओं और समाजी भेड़ियों के चेहरे।

वे नकाबी चेहरे, जो दिन में लोगों को सरलता से दिखाई नहीं पड़ते, जो प्रत्यक्ष आदर्श के पुतले कहे जाते हैं मगर जिनका आन्तरिक रूप · · ·!

रामानन्द की विकृति और विस्मय-विमुग्धता अब विलुप्त हो चुकी है। अब उसे ऐसे नाटकीय और नारकीय वातावरण में आनन्द आने लगा। चरित्रपठन में स्वाभाविक रूप से उसकी दिलचस्पी बढ़ गई है। अपने-आपको गँवार-बुद्धू और हीन बनाकर वह होटल में वक्त गुजारने वाले उन चरित्रों को भीतर ही भीतर पढ़ता-समझता रहता है जो यहां आते ही अपने असली रूप और लिबास में आ जाते हैं। जिनका शैतानी रूप यहां इत्मीनान के साथ उभरकर सामने आ जाता है। अपने को एक भोले-भाले बैरे की भांति वह उनकी खिदमत में लगा देता है। वे उसे जाहिल और भोला-भाला समझ कर अपनी गन्दी ख्वाहिशें खोलकर उसके सामने रख देते हैं और वह अन्य बैरों की भांति उनकी खिदमत में लगा रहता है जैसे इस पेशे में उसकी बहुत गहरी और पुरानी दिलचस्पी हो। कोई नहीं जानता कि जीवन की उच्चतम परम्पराओं से अनायास टक्कर खाकर वह इस अधोगति को पहुंचकर आज जीवन को कीड़े-मकोड़ों की तरह ढो रहा है।

रामानन्द काम से अवकाश पाकर बाह्य वातावरण में टहलने का शौकीन हो गया था। अक्सर माधव भी उसके साथ हो लेता था परन्तु जब कभी माधव की ड्यूटी होती थी वह अकेले ही घूमने निकल जाता था।

आज ज्यों ही कपड़े बदलकर वह निकला सहसा ही उसकी दृष्टि सामने से होटल में प्रवेश करती हुई उस लड़की पर पड़ी जो विशुद्ध-भारतीयता की मूर्ति दीखती थी।

उजली साड़ी में बिना किसी सजाव-शृंगार के वह लड़की उसे इन्दिरा की प्रतिरूप लगी। वह क्षण-भर को सिहरकर अचरज से उसे निहारने लगा।

'यह तो जाना-पहचाना चेहरा है।' मन ने अपने आप से कहा।

अचरज उसे इस बात का था कि आज तक इतनी सभ्य और सुशील

लड़की को उसने इस होटल में आते नहीं देखा था।

'ओह ! याद आया। यह तो लिली है।'

लिली ?

अपाहिज मा-बाप और भाई-बहनों के लिए नौकरी करने वाली लिली ! उसी बूढ़े, खूँसट कमिश्नर के द्वारा उसकी हविस के लिए मजबूर की जाने वाली लिली।

'उफ !' क्षण-भर को उसका मन गहरी सहानुभूति से भर आया। देवी स्वरूपा लिली के प्रति श्रद्धा हो आई।

'मगर लिली जैसी लड़की को किसी भी कीमत पर अपना शरीर उस बूढ़े भेडिये को नहीं देना चाहिए था।' वह अपने आप से कहने लगा।

"तुम तो यही काम करते हो न ! मैं एक तकलीफ देना चाहती हूं तुम्हें।" सहसा लिली ने उसके निकट आकर बड़े प्रार्थनीय स्वर में कहा और उसकी ध्यानावस्था भंग हो गई।

"जी हां, क्या आज्ञा है ?" उसने बड़ी निष्टता से उत्तर दिया !

"कमिश्नर साहब तो नहीं आए ? इसी वक्त वे रोज यहां आते हैं।"

"आई थिंक, यू आर पासकिंग अबाउट दैट कलर्ड जैकाल ! (मैं समझता हूं, आप उस रंगे सियार के बारे में पूछ रही हैं)" इतना कहकर रामानन्द व्यंग्यात्मक ढंग से मुस्कराने लगा। और लिली को तो काठ-सा मार गया। उसे दो बातों का गहरा अचरज हो रहा था। पहला तो यह कि निरा अपढ़ समझा जाने वाला रामानन्द फर्राटे से अंग्रेजी में बोल रहा था और दूसरे यह कि वह उसके और कमिश्नर के सम्बन्ध पर व्यंग्य कर रहा था।

"क्षमा कीजिएगा।" वह खिसियाई-सी बोली, "मैंने समझा था आप पैराडाइज में काम करते हैं।"

"जी हां, मैं यही काम करता हूं।" उसके अचरज को समझकर

मानन्द बीच ही में बोल पड़ा, " क्या करूं। बेकारी के इस जमाने में रे जैसे कितने पढ़े-लिखे नौजवान बिलो स्टैण्डर्ड (निम्न स्तर) के काम रते होंगे।

" हां, तो आप उस भेड़िया कमिश्नर से मिलना चाहती हैं। वह सात म्बर केबिन में बैठा हुआ पी रहा है। मगर अच्छा हो कि आप उस नीच से न मिलें। "

रामानन्द के स्वर में इतनी हमदर्दी थी कि लिली डबडबा-सी आई। मगर दूसरे ही क्षण उसने संयत होकर कहा, "क्या तुम हमारे बारे में कुछ जानते हो ? तुम्हारी बातों से तो···?"

' माफ कीजिएगा, मुझे आपके व्यक्तिगत मामले में कुछ कहने का अधिकार नहीं, परन्तु मनुष्य होने के नाते मुझे हमदर्दी तो है ही। मैंने काफी कुछ सुन लिया है। इसलिए आप से· · ·" बात अधूरी ही छोड़ कर रामानन्द लम्बी सांसें लेने लगा।

लिली का चेहरा करुणा और विक्षुब्धता से भर-भर आया। रामानन्द पहला व्यक्ति था जो उसके लिए सर्वथा अपरिचित होते हुए भी उसे अपना सर्वाधिक हितैषी और परिचित महसूस हो रहा था। वह अपनी विवशता और व्यथा को छिपाए न रह सकी। हृदय में आन्दोलित संताप का बांध फूट पड़ा, "आपकी सहानुभूति के लिए आभारी हूं। आप एकदम अपरिचित हैं। फिर भी आपकी सहृदयता ने झकझोर कर रख दिया है। आप तो जानते ही हैं, वह कमिश्नर मेरा आफिसर है और मेरी इज्जत लूटना चाहता है। कुछ समझ में नहीं आता कि किस तरह उससे अपनी रक्षा करूं ? मेरी मजबूरी· · ·।" उसका कण्ठ भर आया, आगे कुछ न कह सकी उसकी आंखें गीली हो आई थीं।

"तो क्या उस दिन ?" कहते-कहते रुककर रामानन्द ने फिर क

"उस दिन वह आपको ब्लैक रूम की ओर क्यों ले गया था ?"

"उस दिन वह आपको ब्लैक रूम की ओर ले गया था।" लि

' वह मुझे गन्दे इरादे से ही ब्लैक रूम की ओर ले गया था। लूटने को तैयार

हो गई थी परन्तु ब्लैक रूम के द्वार तक पहुंचते-पहुंचते मेरी आत्मा एकबारगी विद्रोह कर उठी और मैं अपनी लाज बचाकर भाग आई।"

"और फिर उसने क्या किया ?"

"मुझे पता नही।" लिली ने बताया, "उसी दिन से मैं दफ्तर नहीं गई, छुट्टी का प्रार्थनापत्र भेज दिया।"

"मगर इस तरह कब तक चलेगा ?"

"नहीं, आज अन्तिम निर्णय करके आई हूं।"

"अन्तिम निर्णय।"

"हां।"

"वह क्या ?" रामानन्द के स्वर मे गहरी जिज्ञासा थी।

"यही कि मैं उसे अपना शरीर दे दूगी।"

"नही, नही, वह तुम्हारी मजबूरी से नाजायज फायदा नही उठा सकता।" रामानन्द के स्वर मे गहरी उत्तेजना और अपनत्व था।

"मगर मेरे सामने और रास्ता ही क्या है ? आप ही मुक्ति का कोई उपाय बताइए।" सहसा ही लिली के मुख से निकल पड़ा।

'घबराने की बात नहीं लिली !" वह अत्यन्त उदारतापूर्वक बोला, "तुम्हे कोई एतराज न हो तो आओ मेरे साथ। हम एक दूसरे होटल मे बैठेंगे। फिर इस विषय पर बातें होंगी !"

लिली ने सहमति मे सिर हिलाया और उसके पीछे-पीछे बाहर की ओर चल पड़ी।

दोनो एक साधारण से होटल मे आ बैठे। क्षण-भर के परिचय और सहानुभूति ने दोनों को स्वाभाविक रूप मे एक-दूसरे के निकट ला दिया।

रामानन्द के भावुक और मानवीय हृदय पर उसकी विवशता की गहरी प्रतिक्रिया हुई थी और लिली के सद्नारीत्व से प्रभावित होकर वह उसके प्रति आकर्षित हो गया था।

स्वयं लिली अपनी असहाय अवस्था मे उसकी सहानुभूति की अवहेलना

न कर सकी।

"कुछ खाने के लिए मंगाऊं ?' रामानन्द ने बड़े स्नेह से पूछा।

"अपने लिए मंगा लीजिए, मुझे तो इच्छा नहीं।" वह सरलता से बोली।

"कुछ तो।" कहकर उसने बैरे को चाय-टोस्ट लाने का आर्डर दे दिया और कुछ तमतमाकर उत्तेजित स्वर में कह पड़ा, "उस भेड़िये से मुक्ति पाने के लिए आपको थोड़ा हिम्मत से काम लेना होगा।"

"वह क्या ?" लिली अकुलाई।

"देखिए, आप अपनी छुट्टी महीने दो महीने के लिए बढ़ा दीजिए और उसके खिलाफ गर्वनमेण्ट को एक दरख्वास्त भेज दीजिए। मैं हर कदम पर आपका साथ दूंगा। अगर उसे छठी का दूध न याद आ जाय तो कहिएगा।"

"यह तो आप ठीक कहते हैं, मगर पानी में रहकर मगर से बैर नहीं निभता। आज मैं उसके खिलाफ दरख्वास्त दे दूं और कल को नौकरी से हाथ धोऊं।"

"नौकरी छीन लेना कोई मजाक नहीं है। आप औरत हैं इसलिए डराती हैं। पहली बात तो उसी का पत्ता कट जायगा और यदि नौकरी चली भी गई तो आप चिन्ता न करें। मैं अच्छा कमा लेता हूं···।"

"मगर···?"

"मगर कुछ नहीं।" रामानन्द ने बीच ही में लिली की बात काटी, "इज्ज़त बेच कर रोटी कमाने से, इज्ज़त बचाने के लिए मेरी मदद लेने में आपको एतराज नहीं होना चाहिए।"

लिली आकण्ठ उसके प्रति श्रद्धा और आदर से विभोर हो उठी। प्रतिवाद के लिए उसके पास शब्द न थे। मौन, आंखों में अथाह प्रेम और सम्मान भरे वह रामानन्द की ओर निहारती रही।

चाय-टोस्ट आ गया। दोनों नाश्ता करते हुए एक-दूसरे को अपना निकट परिचय देते रहे।

लिली ने उसके आश्वासन और विश्वास पर अपने अफ़सर के विरुद्ध प्रार्थना-पत्र देने का निश्चय कर लिया।

लगभग दो घण्टे होटल में बिताकर और एक-दूसरे के बहुत निकट हो-कर वे बाहर निकले। उस समय लिली के चेहरे पर निर्भीक और सात्त्विक मुस्कान थी और रामानन्द के चेहरे पर उसकी सात्त्विकता, सतीत्व और नारीत्व के प्रति सहानुभूति और श्रद्धा।

जिस समय रामानन्द माधव के साथ नवाब कनकौवा के दौलतखाने पर पहुंचा, नवाब कनकौवा का चेहरा धूमिल पड़ गया। उन्होंने अपने दौलतखाने की तारीफ बहुत बढ़ा-चढ़ाकर की थी मगर वहां तो एक टूटा-फूटा खण्डहर था। वह भी शहर के सबसे पुराने और गन्दे माहौल में। उन्हें क्या पता था कि रामानन्द सचमुच उनके यहां आ धमकेगा और उनकी रईसी की डींगों का पर्दाफाश हो जाएगा।

फिर भी जबरन खुशी जताते हुए उन्होंने माधव और रामानन्द का स्वागत किया और बाहर बरामदे में एक खाट बिछाकर बोले, "बड़े मौके से तशरीफ लाए आप लोग। क्या खातिर करूं?"

"खातिर के लिए आप परेशान न हों।" माधव तपाक से बोला, "हम तो आपकी बाजी देखने आए हैं।"

"जरूर, जरूर।" नवाब खिसियानी हंसी हंसकर बोले, "बस अभी एक घण्टे में बाजी शुरू होती है। मैं मंझा (पतंग उड़ाने की डोर) लेने अमीनाबाद जा रहा था। आप बैठें, मैं अभी पलक झपकते आया।" और फिर वे तीर की तरह भीतर जनानखाने में चले गए।

"सकीना को देखा है?" मुस्कराते हुए माधव ने रामानन्द को कुहनी मारकर धीरे से पूछा।

"सकीना! कौन सकीना?"

"उफ! हुस्न की परी! गजब की खूबसूरती है।" माधव ने चट-खार भरी।

"पहेली न बुझाओ।"

"अरे भाई, नवाब साहब की साहबजादी है।"

'नवाब साहब की लड़की। छि: छि:! तुम ऐसे गन्दे ख्याल रखते हो उसके बारे में ?" रामानन्द बिगड़ा।

"मैं ही नहीं, उसके हुस्न का हर खरीदार उसके बारे में ऐसे ही ख्याल रखता है।" माधव कहने लगा, "बड़ी लाजवाब है। देखोगे तो तबियत बाग-बाग हो जाएगी। कहो तो तुम्हारा सौदा पटा दूं ?"

"सौदा ? क्या वह बिकती है ?" रामानन्द आंखें फाड़कर बोला।

"बिल्कुल, नहीं तो पन्द्रह-बीस रुपये के वजीफे में इतने बड़े परिवार का क्या हला-भला हो ? नवाब साहब की कनकौवाबाजी · · · बीबीजी का पानदान और · · · ?" रुक कर सिगरेट सुलगाते हुए वह पुन: कहने लगा, "रात-भर के तीस रुपये · · · दो घण्टे के बीस रुपये और एक घण्टे के दस · · ·।"

"बकवास बन्द करो!" कान पर अंगुली देकर रामानन्द लगभग तड़प उठा मानो माधव जो कुछ कह रहा हो महज बकवास हो, केवल लांछन।

"खैर, हाथ कंगन को आरसी क्या ?" माधव सिगरेट फूंकता हुआ फुसफुसाया, "कनकौवाबाजी बहुत देखी है मैंने। आज तो सकीना से ·· लगाने आया हूं। और तुम · · ·।"

"खुदा कसम, जो एक पैसा भी हो मेरे सन्दूकचे में।" जनानखाने से फूटकर आने वाली इस गिड़गिड़ाहट ने रामानन्द और माधव के कान अपनी ओर आकर्षित कर लिए।

"मुझे झूठा न बहलाओ बीबी, मेरी बाजी निकल जाएगी। खुदा के लिए चार भले आदमियों के सामने बेइज्जत न करो।" यह स्वर नवाब साहब के थे।

"देखा ?" माधव रामानन्द को खोदकर बोला—" यह है नवाब कनकौवा का असली रूप।

" नवाब कनकौवा का ही नहीं, इन जैसे तमाम बिगड़े रईसों और

नवाबों का · · ·।"

सहसा तेजी के साथ नवाब साहब बाहर आए और वे चुप होकर उनकी ओर मुखातिब हुए।

"मुआफ कीजिए, जरा देर से लौटा।" वे बोले।

"कोई बात नहीं। मगर आप बाजी कब शुरू करेंगे?"

"ओह!" सहसा थोड़ा संजीदगी-भरा चेहरा बनाकर नवाब साहब ने कहा, "कल मुझे बैंक से रुपया निकालने की याद न रही और आज भी वक्त निकल गया। आपमें से किसी की जेब में दो टूटे रुपये तो न पड़े होंगे?"

रामानन्द ने जैसे-तैसे नवाब साहब की नाटकीयता पर अपनी हंसी दबाई। मगर ऐसे अनेक अवसरों के अभ्यस्त माधव ने दो रुपये निकालकर उनके हवाले कर दिए।

"आप तशरीफ रखें। मैं अभी बाजार से लौटा।" इतना कहकर नवाब साहब तो झपटते हुए बाजार की तरफ चल दिए मगर माधव और रामानन्द प्रश्नसूचक दृष्टि से एक-दूसरे को देखते रहे।

जब माधव ने नवीना से मिलने का उपक्रम किया तो रामानन्द उत्तेजित होकर बोला, "कम से कम मेरे सामने तो यह तमाशा न करो। पैसे के बूते पर किसी की मजबूरी और इज्जत से खिलवाड़ करना कोई भला काम नहीं होता।"

"तुम फिर धर्म और फिलासफी की बातें करने लगे?" माधव ने प्रतिवाद किया, "मैं तुम्हारे कठोर अनुभवों में एक अनुभव और जोड़ना चाहता हूं। तुम्हें नवाब की नवाबी पर अचरज था अब जरा उनका असली रूप भी देख लो। ये तजुर्बे इतनी आसानी से न मिलेंगे रामानन्द! देखो तो सही। आदमी अपनी बाहरी इज्जत बनाने के लिए कितना नीचे गिर सकता है? अपनी लत दुर्व्यसन और शौक के लिए वह किस कदर अपनी और अपने परिवार की इज्जत दांव पर लगा सकता है?"

माधव के कथन में इतना गहरा यथार्थ था कि रामानन्द प्रतिवाद न कर सका। सिर नीचे किए लम्बी लम्बी सांसें लेता रहा।

और फिर कुछ ही क्षणों के बाद सकीना उनके सामने खड़ी थी।

स्वाभाविक रूप से मां की रज़ामन्दी पर ही वह सौदा करने आई होगी ?

सकीना !

मुश्किल से सत्रह वर्ष की एक बेहद खूबसूरत लड़की जिसके चेहरे पर मासूमियत नाच रही थी मगर जिसके मुखमण्डल की करुणा साफ स्पष्ट करती थी कि 'जिस्म की सौदागरी' ने उसे तोड़-मोड़कर रख दिया है और वह अनेक वासनाओं द्वारा शोषित की जा चुकी है।

माधव उसे देखते ही उन्माद में डूबने लगा। मगर रामानन्द ठगा-ठगा सा उसे देखता ही रह गया। उसे लग रहा था मानो एक सुवासित गुलाब को कीचड़ में फेंक दिया गया हो और अब वह अपने दुर्भाग्य पर गटर में खिलखिला रहा हो।

"अब तो और खिल आई हो।" माधव बेहूदगी के साथ उसे घूरते हुए 'व्यापारिक-व्यवहार' पर उतर रहा था मगर रामानन्द के सारे शरीर में शीशा पिघल रहा था कि सकीना के पीछे द्वार के पर्दे से कोई आकृति झांक रही है और इस व्यापारिक-सम्पर्क के प्रति उसके धुंधले चेहरे पर गहरी उत्सुकता की लहर व्याप्त है।

सकीना की मां।

हां ! वह सकीना की मां ही हो सकती है।

"मुझे जाने दो।" वह क्षुब्ध होकर फुसफुसाया और झटके के साथ बाहर निकल गया।

माधव उसे पीछे से उच्च स्वर में पुकार रहा था मगर वह वापस नहीं लौटा।

यह व्यापार' रामानन्द के लिए असह्य था, उसकी भावनाओं और भावुकता के विरुद्ध। इस माहौल के प्रति उसमें रंचमात्र भी दिलचस्पी शेष न थी।

उसने जिंदगी को काफी झेला था और ऐसे कठोर अनुभवों और

अनुभूतियों में कण्ठ तक डूबकर कई बार विचलित और पथभ्रष्ट हो चुका था। अब उसने जीवन का नया मार्ग बनाया था। एक सर्वथा नयी पृष्ठ-भूमि जो केवल जीने के लिए थी। किसी प्रकार की अनुभूति, वितृष्णा और छटपटाहट तथा प्रायश्चित्त के लिए नहीं, मगर माधव उसे फिर से क्षुब्ध, प्लावित और उत्कंठित करने का प्रयास कर रहा था।

वह तेजी के साथ अपने गन्तव्य स्थान की ओर लौटते हुए सोच रहा था, 'मैं नाहक ही दुबारा जिन्दगी से जुड़ गया। मेरी कृतघ्नता और निकृष्टता इससे अधिक और क्या हो सकती है कि मैं बार-बार पाप में नहाकर भी उसमें तैरने का मोह नहीं संवरण कर पाया।

'उफ, दुनिया गन्दी है और हर क्षेत्र विषय-वासना और पापाचार से भरा हुआ है। तो क्या मेरे ही अनुभव, अनुभूति, ग्लानि और प्रायश्चित्त के लिए?

'नहीं,नहीं, मैं जल्द से जल्द यह विषाक्त वातावरण छोड़ दूंगा। मुझे यहां शांति और संतुष्टि नहीं मिल सकती। नारकीयता से तटस्थ रहकर ही नारकीय जीवन के प्रति जेहाद बोला जा सकता है।...'

लिली उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, बड़ी उत्सुकता और व्यग्रता के साथ। रामानन्द को देखते ही उसका अकुलाया हुआ मुख-मण्डल खिल उठा और हृदय में मीठी-मीठी धड़कन होने लगी।

"मैं तो प्रतीक्षा करते-करते ऊब गई।" मुस्कराते हुए उसने बड़े मृदुल स्वर में कहा, "कहां चले गए थे?"

"क्या बताऊं लिली?" निकट आकर वह कहने लगा। "मेरा मस्तिष्क विकृत हो रहा है, आत्मा बिलबिला रही है।"

"ऐसी क्या बात हो गई?" लिली ने बीच ही में पूछा, "क्या कोई दुर्घटना हो गई?"

"मेरा जीवन पग-पग पर विकृतियों और दुर्घटनाओं से भरा हुआ है।" रामानन्द के स्वर में गहरी व्यथा थी।

"आप बहुत भावुक हैं।" लिली ने आत्मीयता के साथ कहा और दोनों

शान्त-एकान्त स्थल की ओर चल पड़े।

"लिली, मैं थोड़े ही समय के परिचय में अपना सारा जीवन एक निकट सम्बन्धी की भांति तुम्हारे सामने खोलकर रख चुका हूं। जाने तुमने मुझे कैसा भला-बुरा व्यक्ति समझा हो···?"

"आप बहुत विक्षुब्ध नजर आते हैं।" लिली अचरज से कहने लगी, "मैंने भी तो बड़े अपनत्व और विश्वास के साथ अपने को आपके सामने खोलकर रख दिया है। समझ में नहीं आता, आप जैसा संघर्षशील और दूसरों को जीवन और साहस की सीख देने वाला व्यक्ति आज इतना बिखर क्यों रहा है?"

"लिली, मैं ऐसे विद्रूप और बीभत्स जीवन से ऊब गया हूं। अब एक क्षण भी मेरा मन यहां नहीं रमेगा। मैं अब तक भटकता आया हूं। सच्ची आत्मशांति, सच्ची जिंदगी और सभ्य जीवन बिताने की मेरी कामना मेरी एक प्रारम्भिक भूल के कारण सदा टूटती और बिखरती आई है। इसलिए अब मैं फिर से अपने पुराने जीवन में लौट जाना चाहता हूं।"

"पुराने जीवन में?" लिली गर्म सांस लेती हुई उसके भावपूर्ण हो आए चेहरे को निहारती रही जो अचरज से फैलता जा रहा था।

"फिर मेरा क्या होगा? आपने अनजाने ही सहानुभूति और प्रेम जताकर मुझे पाप में डूबने से बचाया है और आपके ऐसे ही स्नेह की आकांक्षा जीवन-भर···।"

"हां, मैं तुम्हारा साथ देना चाहता था।" सहसा ही रामानन्द का स्वर 'आप' से 'तुम' में बदल गया मानो लिली के प्रति प्रेम का उद्गार बरबस ही मचल पड़ा हो।

लिली अकस्मात् आनन्द से नहा उठी। 'तुम' का सम्बोधन उसे बड़ा प्यारा लगा।

"तो मुझे आप पुनः निराश्रित करके चले जाएंगे?" उसने मृदुलता से कहा।

"हृदय तो ऐसा नहीं कहता।" रामानन्द ने फुसफुसाकर कहा और

मस्तक से हथेली टिकाकर भावनाओं में डूब गया। उसके हृदय में गहरा अन्तर्द्वन्द्व हो रहा था।

"एक बात कहूं लिली ? एक प्रस्ताव है मेरा।"

"कहिए न ? आपका कोई भी प्रस्ताव मुझे अमान्य न होगा। उसे मानकर मुझे हार्दिक खुशी होगी।"

"अब मैं गृहस्थ जीवन व्यतीत करना चाहता हूं।" रामानन्द अत्यन्त दयनीयता के साथ कहने लगा, "यही जीवन की एक ऐसी विधा है जो नैतिक रूप में मेरी आत्मा को सच्ची शांति दे सकेगी।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।" लिली ने समर्थन किया।

"और इस जीवन-विधा के साथ मैं तुम्हें भी बांधना चाहता हूं। क्या तुम जीवन पथ में मेरा साथ दे सकोगी ? सोचो लिली···।"

लिली का मुख मण्डल स्वाभाविक लज्जा से तमतमा आया। वह कई क्षणों तक मौन रामानन्द के चेहरे को निहारती रह गई।

"मैं यह प्रस्ताव किसी स्वार्थ-लिप्सा से नहीं, वरन् सद्भावना के साथ···।

"मैं आपकी भावनाओं को समझती हूं।" लिली बीच ही में कह पड़ी, "यह प्रस्ताव स्वीकार कर मुझे हार्दिक खुशी होगी।"

"सच···सच कह रही हो लिली ?" आनन्द विह्वलता में उसने लिली का हाथ थाम लिया और लिली उसकी आंखों से आंखें छुपाए मुस्कराती रही।

सहसा ही रामानन्द ने अपना जीवन-पथ बदल दिया है। अचानक ही उसकी जीवन-विधा का कायाकल्प हो गया है। माधव उसके परिवर्तन पर हैरान है। उसकी 'योजनाएं' विफल हो रही हैं मगर रामानन्द का यह परिवर्तित-स्वरूप इतना सुदृढ़ है कि कोई हस्तक्षेप करने का उसे साहस नहीं होता।

बस, वह इतना ही समझ पाया है कि रामानन्द उस लिली नामक

...की से प्रेम करने लगा है और शीघ्र ही उसके साथ ब्याह रचाकर ...जीवन बिताने की कल्पना में विभोर है।

...स्तव में रामानन्द अपने-आपको नये जीवन-पथ पर बढ़ाने की ... में खोया-डूबा है। लिली के साथ बड़ी दूर तक उसकी बातें हो ...हैं।

लिली आफिस से अवकाश पर थी इसलिए नित्य सरेशाम ही होटल ...आकर उसके मिलती थी और दोनों शीघ्र ही परिणय-बन्धन में बंधकर ... जिंदगी बिताने के विषय में घण्टों बातें किया करते थे।

मगर उस दिन लिली बहुत शाम बीते तक भी न आई और रामानन्द ...प्रतीक्षा का बांध टूटने लगा।

प्रतीक्षा करते-करते हारकर वह एक खाली केबिन में आ बैठा और ...चाय मंगाकर पीने लगा। बगल की केबिन में कोई जोड़ा बैठा बातें कर ...रहा था।

चाय की चुस्कियां लेते हुए रामानन्द का ध्यान स्वाभाविक रूप से बगल की केबिन में बंट गया। पुरुष कह रहा था, "मैं कब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूं ? कितनी बार कहा तुम से नौकरी छोड़ दो। तुमने अपने माता-पिता और घर वालों के पालन-पोषण करने का ठेका नहीं ले रखा है। अगर तुम एकमाह के भीतर मेरे साथ शादी नहीं कर लेतीं तो मजबूरन मुझे तुम्हारे प्रेम का नाता तोड़ना पड़ेगा।"

"सिर्फ तीन महीने और रुक जाओ सुशील।" अब नारी कण्ठ... याचना कर रहा था, "तब तक मेरे भाई की नौकरी लग जाएगी। फिर मैं... निश्चिन्त होकर तुम्हारे जीवन में आ जाऊंगी।"

"तुम बड़ी छलिया हो लिली !" सहसा पुरुष स्वर फूटा और रामान... एकबारगी चौंक पड़ा मानो तलुवे में बिच्छू ने डंक चुभा दिया हो।

'लिली···लिली···।' वह जलते होंठों से फुसफुसाया और अच... से उसकी आंखें कपार पर टंगी रह गईं।

"...जानकर हंसी आएगी सुशील कि इस होटल का एक...

भी मुझ से शादी करने का स्वप्न देख रहा है।" फिर लिली की आवाज थी।

"तुमने क्या कहा ?"

"पागल हुए हो ! बिलो स्टैण्डर्ड मैरिज करूंगी ? हां, यूं ही आश्वासन दे दिया है।"

रामानन्द विक्षिप्त हो उठा। उसे काटो तो खून न था।

'लिली···झूठी, विश्वासघातिनी···! उफ़ ! सभ्यता और चरित्र-शीलता का ढोंग भरकर तूने मुझे खूब छला···।'

उसका सारा शरीर स्वयं की ग्लानि, क्षोभ और व्यथा में डूबा जाता था। एक क्षण भी बैठा रह पाना उसके लिए मुश्किल था।

आगे उससे कुछ नहीं सुना गया। वह उठा और जलती आंखोंसे उस केबिन की ओर देखता हुआ बाहर निकल गया।

जिंदगी फिर बिखर उठी। सारा सुव्यवस्थित परिवर्तन छिन्न-भिन्न हो गया।

उसने महसूस किया कि उसे विरक्ति के अतिरिक्त अन्य कहीं शान्ति नहीं मिल सकती। उसे सच्ची शान्ति के लिए तरना होगा।

मगर नहीं, वह मार्ग भी उसके लिए उपयुक्त नहीं। हर जगह गन्दगी और सड़ांध है। हर तरफ पापाचार···झूठ···फरेब···धोखा-धड़ी और दानवता का नग्न नृत्य।

फिर···फिर कहां जाए वह ? किस ओर ? किस दिशा में···किस पथ पर ?

अचानक मस्तिष्क में एक नये विचार की बिजली कौंध गई।

अचानक ही याद आया उसे।

पादरी ! हां पादरी।

जो आगरा जेल में मिला था। जिसने क्षण-भर के सम्पर्क में चमत्कृत कर दिया था।

दिव्य व्यक्तित्व। महाज्ञानी। ईसामसीह का साक्षात् अवतार।

क़ ! ज़िंदगी की चमक-दमक में एकदम भूल ही गया उन्हें। उन्होंने लखनऊ का पता दिया था। सस्नेह गिरजाघर में आमंत्रित था।

बस, अब सच्ची शान्ति और सात्विक जीवन के लिए वहीं एक सम्बल

फादर (पादरी) के चरणों में जायेगा वह !

अपने मन, धर्म और विचारों का कायाकल्प करेगा। यह पापी जीव उतारकर रख देगा।

वह ईसाई बनेगा। ईसामसीह का अनुगामी। फादर का शिष्य···।

और वह द्रुतगति से गिरजाघर की ओर बढ़ रहा था, मानो पादरी साहब का दर्शन मात्र उसकी ग्लानि और भटकाव को सदा-सर्वदा के लिए विनष्ट कर देगा।

शाम का धुंधलका गाढ़ा हो रहा था, मगर गिरजाघर में रोशनी जगमगा रही थी। आस-पास सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य था।

"मैं फादर से मिलना चाहता हूँ।" गिरजाघर के बहिर्द्वार की सीढ़ियों पर बैठे हुए एक पहरेदार से उसने पूछा।

पहरेदार ने उसे ऊपर से नीचे तक घूर-घूर कर देखा। फिर थोड़ी पर स्थित एक बंगले की ओर संकेत करके बोला, "अभी-अभी तो गये फादर ! बंगले पर चले जाओ। सामने वाले कमरे में मिलेंगे।"

वह तेज़ कदमों से बंगले की ओर चला गया। बंगले में निस्तब्धता थी मगर रोशनी जगमगा रही थी।

द्वार से उसने 'फादर, फादर' की कई आवाजें लगाईं, मगर में कोई नहीं बोला।

द्विविधा में वह कमरे की ओर बढ़ा। गाढ़े हरे रंग का कमरे के द्वार पर लटक रहा था और रोशनी जगमगा रही थी।

फादर ? फादर से संकोच कैसा ? वे तो महाविद्वान और से लगा लेंगे। सच्ची शान्ति से मन क

धो देंगे।

"फादर, मैं आ गया!" उसने उच्च स्वर में कहा और धड़धड़ाते हुए कमरे में घुस गया।

मगर यह क्या?

कमरे के दूधिया बिस्तर पर एक लगभग पचीसवर्षीया औरत एकदम नग्न पड़ी थी और वही त्यागमूर्ति फादर (पादरी) उसके शरीर से खेल रहा था।

रामानन्द कपाट पकड़कर फटी-फटी आंखों से यह दृश्य देखता रह गया।

और वह नन् अपना नग्न शरीर छिपाने के लिए बिस्तर की चादर खींचने लगी।

पादरी खिसियाया-सा पतलून पहनने लगा।

"उफ! तुम्हारा असली रूप यह है? फादर! तुम ईसामसीह के पथानुगामी हो? च···च्च।" उसने दांतों से अपनी जीभ काट ली।

"तुम्हें हुक्म पाकर कमरे में आना चाहिए था।" पादरी तमतमाए चेहरे से कह पड़ा।

"हूं! ताकि तुम मेरी निगाह में फादर ही बने रहते और मैं जिंदगी की आखिरी बाजी भी हार जाता। तुम सब पापी हो···तुम सब पाखण्डी हो···धूर्त हो···मानवता के हत्यारे हो··· धर्म का ढोंग रचकर तुम भोले-भाले मानव समाज को रसातल की ओर धकेलते रहते हो, मुक्ति का पाठ पढ़ाकर···धर्म माने पाखण्ड, धोखा··· ह···हा।" उसने पागल की तरह अट्टहास लगाया और उल्टे पांवों लौट पड़ा।

गिरजाघर उसके विद्रूप के कहकहे से कांप रहा था।

वह विद्युतीय गति से विलोम दिशा में चला जा रहा था—जोर-जोर से ठहाका लगाता हुआ—"तुम्हारी दुनिया तुम्हीं को मुबारक हो ··धर्म

मानेधोखा··· साधू माने चोर··· मजहब माने मारपीट···और दोस्त माने दुश्मन···।"

"रामानन्द, रामानन्द!" पादरी दौड़ते हुए पुकार लगा रहा था, मगर वह कदम बढ़ाता चला जा रहा था।

शाम रात में खो गई थी। पादरी की आवाज़ सन्नाटे में दम तोड़ रही थी और रामानन्द की परछाईं लम्बी, और लम्बी होती चली जा रही थी।